भास्वती समुन्मेषः

भाग–1

(एकादश कक्षायां संस्कृत केन्द्रिक पाठ्य ग्रंथतया निर्धारितायाः भास्वत्याः भावार्थ सन्दर्शिका)

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

ISBN :
प्रतियाँ : 650
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
वर्ष 2019-20

प्रेरक

डॉ. सुनीता एस. कोशिक, निदेशिका रा.शै.अ. एवं प्र.प., दिल्ली
डॉ. नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ. एवं प्र.प., दिल्ली

समन्वयक एवं संपादक

डॉ. के एन शास्त्री
सह समन्वयक
प्रगति श्रीवास्तव

लेखक मंडल

डॉ. के एन. शास्त्री
डॉ. भास्करानन्द विडालिया
डॉ. परमानन्द झा
डॉ. आशा झा
डॉ. चंचल कुमारी झा
डॉ. अजय कुमार
डॉ. कविता रानी

पुनरीक्षक

डॉ. शास्करानन्द पाण्डेय
डॉ. के एन. शास्त्री

प्रकाशन अधिकारी

डॉ. मुकेश यादव

प्रकाशन समूह

नवीन राधा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद द्वारा मुद्रित।

द्वित्राः शब्दाः

राज्यशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदा प्रतिवर्षं शिक्षकाणां कृते सेवाकालिकं-प्रशिक्षणं समायोज्यते। एतस्मिन् प्रशिक्षण कार्यक्रमे परिषदः प्रयासः नूतन-शिक्षण-प्रविधीनां विकासः परिचयश्च प्रामुख्येण भवति। अथ च विषयवस्तुनः विवेचनं कठिनतरानां पाठ्यांशानां स्पष्टीकरणम् अपि प्रशिक्षकैः तत्र विधीयते। एतदर्थः सन्दर्भ-पुस्तिकारूपेण रचिते ग्रन्थेऽस्मिन् एतासामेव सामग्रीणां संकलनं विधाय प्रस्तोतुं प्रयत्नः ब्रियते परिषदा पुस्तकेडस्मिन् पठनार्थमवचिताः पाठाः शिक्षकाणां कृते नूतनाः सन्ति, अतस्ते पठने-पाठने च काठिन्यं नानुभवेयुः इति विचार्यैव 'भास्वतीसमुन्मेषः' इति सन्दर्भग्रन्थोऽयं सज्जीकृतः।

अस्मिन् सङ्ग्रहे एकादश-द्वादशकक्षायोः चतुर्विंशतिः एव पाठाः विवेचनार्थं संगृह्य प्रतिपाठं क्लिष्टांशानां विवृतिः विहितास्ति। प्रतिपाठं पद्यानामम्वयः, पदार्थाः सरलानुवादः विमर्शश्चेति शीर्षकैः विवरणं विहितम्। एवमेव गद्येषु च मूलपाठः, पदार्थाः, सरलानुवादः विमर्शश्चेति शीर्षकमाध्यमेन विविक्तमस्ति पाठ्यवस्तु, अत्र व्याकरणिक टिप्पर्णीनां समावेशः पदार्थशीर्षकान्तर्गत एव कृतः। एतदतिरिच्य अभ्यासप्रश्नाः अपि निहिताः सन्ति। अध्यापकानां सौकर्याय आदर्श-प्रश्नपत्राणां विन्यासोऽपि सङ्ग्रहेऽस्मिन् विहितः। एतेन सङ्ग्रहेण शिक्षकाणां छात्राणां च भूयान् लाभो भविष्यतीत्याशास्महे तथाप्यत्र त्रुटीनां निवारणाय संशोधनाय च विदुषां विदुषीणां च परामर्शः स्वागतार्हाः।

अन्ते सङ्ग्रहस्यास्य संकलने, लेखने, मुद्रणे च सहयोगिनां विषयविशेषज्ञानां, सङ्कायाधिकारिणां शिक्षकेतर-कर्मचारिणां च हार्दिकी कृतज्ञतां विज्ञाप्यते।

डॉ. सुनीता-एस. कौशिक

भूमिका

प्रशिक्षण निरन्तर सुधार की प्रक्रिया है। जैसे-जैसे नई चुनौतियाँ जन्म लेती है वैसे ही हम उनके समाधान हेतु अग्रसर होते रहते हैं। शिक्षा के निरंतर विकास की दिशा में हम काफी आगे बढ़े हैं। संख्यात्मक विस्तार के साथ-साथ स्कूली सुविधाओं में भी खासी बुद्धि हुई है किन्तु गुणात्मक शिक्षा की दिशा में हम काफी पीछे हैं। बदलाव का माध्यम है शिक्षक एवं पाठ्यचर्या। हमें दोनों मोर्चों पर हमेशा डटे रहना पड़ेगा। रा.शि.नी. 1986 में समूचे भारत में समान शिक्षा संरचना तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की बात की गई है। ऐसी पाठ्यचर्या जो निरंतर प्रवाहमान, परिवर्तनशील तथा लक्ष्योन्मेषी हो और हमारी राष्ट्रीय एकता विविधता तथा आदर्श संतुष्ट कर सके। इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्य-पुस्तकों में बदलाव का क्रम निरंतर जारी है। पिछले वर्ष अर्थात् 2018-19 में उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में वैकल्पिक संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक में बदलाव किया गया है। 'ऋतिका' के स्थान पर 'भास्वती' नामक पाठ्यपुस्तक निर्धारित की गई है। बदलाव से शिक्षकों को अवगत कराने तथा बदलाव की चुनौतियों का दृढ़तापूर्वक सामना करने के लिए ही सन्दर्शिका का निर्माण किया जा रहा है। यदि हम समझ के साथ तैयारीपूर्वक कक्षाओं में जायेंगे तो निश्चित रूप से अपने उद्देश्य में सफल होंगे और बच्चों में अपेक्षित परिवर्तन होगा ही। बदलाव केवल पाठ्यसामग्री का ही नहीं है बल्कि मूल्यांकन में भी बदलाव किया गया है। अब 100 अंक के प्रश्न-पत्र में 80 अंक लिखित परीक्षा तथा 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित किये गये हैं। चूंकि आंतरिक मूल्यांकन पहली बार लागू किया जा रहा है इसलिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस विषय पर भी विस्तार से चर्चा की जायेगी।

पाठ्य-पुस्तक 'भास्वती' एन सी ई आर टी द्वारा तैयार की गई है। पुस्तक की भूमिका में कहा गया है कि यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप-रेखा, 2005 के लक्ष्यों को ध्यान में रखकर निर्मित की गई है जो निम्नवत हैं-

1. भारमुक्त शिक्षा
2. आनन्दप्रद अनुभूति
3. जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध तथा
4. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार

नई पाठ्यपुस्तक निम्न विशेषताओं से परिपूर्ण है, ऐसा कहा गया है-

(क) प्राचीन ग्रंथांशों के साथ ही साथ आधुनिक संस्कृत रचनाओं का भी समावेश

(ख) अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की विविध अनुदित (संस्कृत) रचनाओं का भी पाठ्यक्रम में समावेश

(ग) पाठ्यचर्या के विविध लक्ष्यों की पूति हेतु नये अभ्यास प्रश्नों, टिप्पणियों एवं योगयता विस्तार उपायों का समावेश

(घ) शिक्षण संकेतों का निर्देश

हम वर्ष 2019-20 की संदर्शिका उपर्युक्त बदलावों को स्पष्ट करने के लिए तैयार कर रहे हैं। पाठ्य-पुस्तक में समाहित विषय वस्तु को और अधिक स्पष्ट करने के लिए पाठ के उद्देश्य, अन्वय, हिन्दी में सरलानुवाद, पदार्थ तथा विमर्श को स्थान दिया गया है। उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण संकेत भी दिये गये हैं साथ ही अनुभव

विस्तार को भी संकेतित किया गया है। इसके अतिरिक्त संदर्शिका में आदर्श–प्रश्न–पत्र भी दिया गया है। आंतरिक मूल्यांकन तथा शिक्षण रणनीतियों पर संदर्भ–व्यक्तियों द्वारा अंत:शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विस्तार से चर्चा की जानी है इसलिए संदर्शिका में इसे स्थान नहीं दिया गया है। संदर्शिका को लेखक दल द्वारा 'भास्वती समुन्मेष:' नाम दिया गया है जो दो भागों में प्रस्तुत है।

प्रत्येक रचना के कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं, ऐसा हम सोचते हैं। इसलिए हमें इस रचना के उद्देश्यों पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए प्रस्तुत संदर्शिका में निहित उद्देश्यों को निम्न रूप में स्पष्ट किया जा सकता है,–

- संस्कृत–शिक्षण के लिए द्वादशी कक्षा में आई नई पाठ्यपुस्तक के स्वरूप से शिक्षकों को परिचित कराना।
- नई पुस्तक होने के कारण उनके पाठन में संभावित कठिनाइयों को यथासंभव अन्वय, पदार्थ, शब्दार्थ एवं विमर्श के द्वारा स्पष्ट करना।
- संस्कृत शिक्षण में पाठ्य–संबद्ध सम्भावित नवाचारों का अन्वेषण और अनुप्रयोग करना।
- सुगम और सतत अधिगम के उपायों का पाठ्य–सामग्री में समावेश करना।
- अधिगम प्रत्याशा (Learning Axpectation) और (Learning) को अधिकाधिक प्राप्त करने हेतु उपयुक्त शिक्षण–प्रक्रिया का उपयोग करना।
- स्पष्ट अधिगम प्रत्याशा को ध्यान में रख विद्यार्थियों का शिक्षण–अधिगम रेखांकित हो सके, इसका प्रयास करना।
- पाठ्यपुस्तक में निहित नवीन संकल्पनाओं से संस्कृत शिक्षकों को परिचित करना।
- पाठ्य–सामग्री के व्याकरणिक पक्ष को शिक्षकों के लिए सरलतम रूप में उपस्थित करना।
- पाठ्यपुस्तक में निहित पाठ्यसामग्री के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों का संयोजन करना।
- पद्यपाठों के अधिकाधिक शिक्षण–अधिगम सुनिश्चित करने के लिए शुद्ध और सस्वर वाचन हेतु छंदों का संकेत अन्वय शब्दार्थ और भावार्थ को शिक्षको के माध्यम से विद्यार्थियों तक संप्रेषण सुनिश्चित करना।
- प्रत्येक पाठ के अन्त में अनुभव विस्तार के रूप में पाठ में समाहित जीवनोपयोगी मूल्यों और तार्किक विश्लेषण को उपस्थापित कर पाठ की प्रासंगिकता को दर्शाना और छात्रों के आलोचनात्मक चिंतन को अवसर प्रदान करना।

संदर्शिका तैयार करने में विषय विशेषज्ञों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं अत्यधिक न्यून समय में पाठ लिखे गये हैं किन्तु गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं हुआ है। अपने विद्यालयी कार्यों को करते हुए उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए समय निकाला है और टीमवर्क किया है। शब्दों में आभार व्यक्त करना बेईमानी होगी इसलिए मैं हृदय से आप सब का धन्यवाद करना चाहता हूँ और आप सबको संस्कृत परिवार का सदस्य मानता हूँ। शि.नि.दिल्ली से सेवानिवृत प्रधानाचार्य एवं भाषामर्मज्ञ डॉ॰ भास्करानन्द पाण्डेय ने रचना को आद्योपान्त पढ़ा है और आवश्यक संशोधन करके छपने योग्य बनाया है। आप हमारे अग्रज है, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। डायट दिलशाद गार्डन प्रधानाचार्य डॉ॰ अनिल कुमार, परिषद निदेशिका, डॉ॰ सुनीता एस. कौशिक तथा संयुक्त निदेशक डॉ॰ नाहर सिंह ने हमें बार–बार इस कार्य के लिए प्रेरित किया है और हर संभव सहयोग दिया है। मैं आप महानुभावों का बहुत आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त मुद्रक एजुकेशनल स्टोर एवं परिषद प्रकाशन विभाग को भी बहुत–बहुत धन्यवाद।

डॉ॰ के. एन. शास्त्री

विषय सूची

क्रं. स.	पाठस्य का नाम	टीकाकार	पृष्ठ सं.
1	द्वित्राः शब्दाः	डॉ॰ सुनीता एस. कौशिक	3
2	भूमिकाः	डॉ॰ के. एन. शास्त्री	4
3	कुशलप्रशासनम्	डॉ॰ आभा झा	7
4	सौवर्णो नकुलः	डॉ॰ भास्करानन्द विडालिया	22
5	सुक्ति सुधा	डॉ॰ चंचल कुमारी	35
6	ऋतुचर्या	अजय कुमार	42
7	वीरः सर्वदमनः	डॉ॰ आभा झा	51
8	शुकशावकोदन्तः	डॉ॰ चंचल कुमारी	59
9	भव्यः सत्याग्रहाश्रम	कविता रानी	64
10	संगीतानुरागी सुब्बण्णः	डॉ॰ आभा झा	76
11	वस्त्रविक्रयः	डॉ॰ चंचल कुमारी	82
12	यद्भूतहितं तत्सत्यम्	कविता रानी	89
13	स मे प्रियः	अजय कुमार	97
14	अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि	डॉ॰ भास्करानन्द विडालिया	106

परिशिष्ट :

(I) पाठ्यक्रमः 120

कुशल–प्रशासनम्

(प्रथमः पाठ)

पाठपरिचयः–

यह पाठ आदिकवि–वाल्मीकि–विरचित आदिकाव्य रामायण के अयोध्या कांड से लिया गया है। इस पाठ में संग्रहीत श्लोक एक तरफ राम और भरत के अटूट प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं, दूसरी तरफ वनवास में समय बिताते हुए भी, राम की अयोध्या के कल्याण की तथा राज्य के सुचारु रुप से संचालन की चिंता को भी व्यक्त करते हैं। भरत जब अपने अग्रज राम से मिलने वन आते हैं तो राम के द्वारा कुशल प्रश्न के रूप में उपस्थापित ये श्लोक राजव्यवस्था के सम्यक् संचालन के सूत्र भी बतलाते हैं। राज्य के अधिकारीगण जब संतुष्ट होते हैं तब वे अपना कर्तव्य–निर्वाह मनोयोगपूर्वक करते हैं एइस तरह के भावों को समाहित करता यह पाठ आज भी प्रासंगिक है ..

उद्देश्यानिः–

इस पाठ को पढ़ाने का उद्देश्य

- उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को प्रशासनिक कौशल का ज्ञान देना ।
- प्राचीन ग्रंथों की विषय वस्तु की काल–निरपेक्षता को प्रतिष्ठापित करते हुए आज के परिपेक्ष में उसका समन्वय।
- राम के द्वारा कुशलप्रश्न के रूप में पूछे गए प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने का प्रयास ।
- महर्षि वाल्मीकि की सरल, सरस और ललित भाषा–शैली का साक्षात्कार ।

जटिलं चीरवसनं प्राञ्जलिं पतितं भुवि
ददर्श रामो दुर्दर्शं युगान्ते भास्करं यथा।।

अन्वयः–

यथा युगान्ते भास्करं, (तथा) रामः जटिलं, चीरवसनं प्राञ्जलं, भुवि पतितं दुर्दर्शं (भरतं) ददर्श।

पदार्थाः–

युगान्ते – युगस्य अन्ते–युग के अन्त में। युगांत का अर्थ प्रलय होता है। पर प्रलय में सूर्य का तेज और अधिक चरम पर होता है। पर यहां भरत के चेहरे की क्लान्ति और कालिमा अर्थ प्रतीत होता हैए जो सूर्य के अस्त होने के समय होता है।

जटिलम् – जटाः सन्ति यस्य, तम्–जटाधारी को।

चीरवसनम् – चीरं वसनं यस्य तम्– पेड़ की छाल ही हैं वस्त्र जिनके, उनको।

प्राञ्जलिम् – प्रबद्धं अञ्जलिः येन तम्, प्रअञ्जलिम्–हाथ जोड़कर प्रणाम करने वाले को।

ददर्श – दृश् धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन, दृष्टवान. देखा।

दुर्दर्शम् – दुष्टुम् अशक्यम् दु:खेन दृष्टुम् शक्यम्–दु:खपूर्वक देखे जाने योग्य को।

अनुवादः-

जिस प्रकार युगांत का सूर्य (प्रलयकालीन सूर्य या सूर्यास्त के समय का सूर्य)बड़ी कठिनाई से दिखाई देता है, उसी प्रकार राम ने जटाधाारी, वल्कलधारी, धरती पर गिरकर हाथ जोड़कर प्रणाम करने वाले, कठिनाई से देखे जाने योग्य भरत को देखा। अर्थात बड़े ही कृश और दुर्दर्श भरत को देखा।

विमर्शः-

अत्यधिक दुखी और दुर्बल भाई को देख बड़े भाई राम के दुख को इस श्लोक के माध्यम से दर्शाया गया है ।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) जटिलः कः आसीत्?
   (ख) रामः कुत्र पतितं भरतं ददर्श?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) रामरूदुर्दर्श कं ददर्श?
   (ख) भरतस्य उपमा केन सह प्रदत्ता?
3. **निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत.**
   (क) 'सूर्यः' इति पदस्य किं पर्यायपदं श्लोके प्रयुक्तम्?
   (ख) 'आकाशे' इति पदस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?
   (ग) श्लोके कर्तृपदं किम्?
   (घ) 'ददर्श रामो दुर्दर्श युगान्ते भास्करं यथा' इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

कथञ्चिदविज्ञाय विवर्णवदनं कृशम् ,
भ्रातरं भरतं रामरूपरिजग्राह पाणिना।।

अन्वयः-

कथञ्चिद् विवर्णवदनं दृशं भ्रातरं भरतम् अभिविज्ञाय रामः पाणिना (भरतं)परिजग्राह।

पदार्थाः-

विवर्णवदनम् - विवर्ण वदनं यस्य तम्.उतरे हुए मुंह वाले को।
अभिविज्ञाय - अभि+वि+ज्ञा+ल्यप्-पहचान कर।
परिजग्राह - परि+ग्रह, लिट्लकार-ग्रहण किया।

अनुवादः-

उतरे हुए मुंह वाले दुर्बल भाई भरत को किसी प्रकार पहचान कर राम ने उसे हाथों से पकड़ा अर्थात उसे पकड़कर हृदय से लगाया।

विमर्शः-

पितृशोक, अग्रज के विलगाव, और इस अनर्थ का हेतु स्वयं को मानकर भरत का चेहरा इतना उतर गया है कि वे राम को पहचाने भी नहीं जा रहे अर्थात् बड़ी मुश्किल से पहचाने जा रहे हैं।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) दृशः कः आसीत्?
   (ख) रामः केन भरतं परिजग्राह?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) रामः कथञ्चिद् किं कृतवान्?
3. **निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत-**
   (क) 'हस्तेनः' इति पदस्य किं पर्यायपदं श्लोके प्रयुक्तम्?
   (ख) 'स्थूलम्' इति पदस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?
   (ग) 'विवर्णवदनं भरतं' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्
   (घ) 'भ्रातरं भरतं रामः परिजग्राह पाणिना'
   इति वाक्ये किं कर्तृपदम्

आघ्राय रामस्तं मूर्ध्नि परिष्वज्य च राघवम्
अङ्के भरतमारोप्य पर्यपृच्छत् सादरम्॥

अन्वयः-

रामः तं राघवं भरतं मूर्ध्नि आघ्राय, परिष्वज्य, अङ्के आरोप्य च सादरं पर्यपृच्छत्।

पदार्थाः-

मूर्ध्नि	-	मूर्धान, सप्तमी एकवचन, मस्तक पर।
आघ्राय	-	आ + घ्रा + ल्यप्-सूंघकर।
परिष्वज्य	-	परि+ष्वज+ल्यप्-आलिङगन करधगले लगाकर।
आरोप्य	-	आ+रुप्यगुण)+ल्यप्-बैठाकर।
पर्यपृच्छत	-	परि+पृच्छ्, लङलकार (आत्मनेपदी, आर्षप्रयोग)
राघवः	-	रघोः गोत्रपत्यम्, आमतौर पर राघव शब्द का प्रयोग राम के लिए होता है, पर यहां भरत के लिए हुआ है।

अनुवाद

राम ने राघव (रघुवंशोत्पन्न भरत) के मस्तक को सूंघकर और उसका आलिंगन कर उसे (भरत को) गोद में बिठाकर आदर सहित हाल चाल पूछा।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

   (क) रामः अङ्के कम् आरोपितवान?

   (ख) कः राघवस्य आलिङ्गनं कृतवान्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

   (क) रामः कथं भरतं पर्यपृच्छत?

3. **निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत-**

   (क) 'मस्तके:' इति पदस्य किं पर्यायपदं श्लोके प्रयुक्तम?

   (ख) 'निरादरम' इति पदस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम?

   (ग) श्लोकेस्मिन् 'राघवः' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम?

   (घ) श्लोकेस्मिन् किं क्रियापदम्

कच्चिदात्मसमाः शूराः श्रुतवन्तो जितेन्द्रियः
कुलीना 'चेङ्गितज्ञा' च कृतास्ते तात मन्त्रिणः॥

अन्वयः-

हे तात ! ते मन्त्रिणः कच्चित् आत्मसमाः,
शूराः, श्रुतवन्तः, जितेन्द्रियाः, कुलीना, इङ्गितज्ञाः च कृताः।

पदार्था-

कच्चित - (अव्यय)-मुझे आशा है, प्रश्नवाचकता या मांगलिकता का सूचक।
आत्मसमाः - आत्मना समाः अपने समान।
श्रुतवन्तः - श्रुत+मतुप्- श्रुतवत्, बहुवचन, शास्त्रों के ज्ञाता।
जितेन्द्रियाः - जितानि इन्द्रियाणि यैः ते-जिन्होंने इंद्रियों को वश में कर लिया है।
इङ्ग्तज्ञाः - इङ्ग्तं जानन्ति इति इङ्ग्तज्ञाः-संकेतों को पहचानने वाला।

अनुवाद :-

हे तात! हे मेरे प्रिय भाई)! मुझे आशा है तुमने अपने समान शूरवीर, शास्त्रों के ज्ञाता, इंद्रियों को अपने वश में करने वाले, कुलीन और इंगित (इशारे) को पहचानने वाले मंत्री रखे हैं (मंत्रियों का चयन किया है)।

विमर्शः-

इस श्लोक में राजा के द्वारा मंत्रियों और अधिकारियों को चुनते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए इस पर प्रकाश डाला गया है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

   (क) श्लोकेस्मिन् केषां गुणाः वर्णिताः?

(ख) अत्र 'तात' इति संबोधानपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) रामः कैः गुणैः विभूषितानां मन्त्रिणाम् आशां करोतिघ

3. **निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत-**

(क) 'शास्त्रज्ञः' इति पदस्य किं पर्यायपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ख) 'कातरः' इति पदस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ग) इङ्गितज्ञाः मन्त्रिणः इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

(घ) श्लोकेस्मिन् 'ते' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

मन्त्रे विजयमूलं हि राज्ञां भवति राघव
सुसंवृतो मन्त्रिधुरैरमात्यैः शास्त्रकोविदैः।

अन्वयः-

हे राघव! हि शास्त्रकोविदैः मन्त्रिधुरैः अमात्यैः सुसंवृतो मन्त्रो राज्ञां विजयमूलं भवति।

पदार्थाः -

मन्त्रः - मन्त्रणा।
विजयमूलम् - विजयस्य मूलम्।
मन्त्रिधुरैः - मन्त्रिषु धुराः तैरू..मंत्रियों में श्रेष्ठों के द्वारा।
शास्त्कोविदैः- शास्त्र के, ज्ञाताओं के द्वारा।
सुसंवृतः - अच्छी तरह ढंका हुआ गुप्त।
हि - (तः, निश्चयेन-क्योंकि, निश्चय ही।

अनुवाद-

हे रघुवंशोत्पन्न भरत! शास्त्रों के ज्ञाता, मंत्रियों में श्रेष्ठ मंत्रियों के द्वारा अच्छी तरह की गई और गुप्त रखी गई मंत्रणा ही राजाओं की विजय का मूल होती है

विमर्श :-

राजाओं की विजय के लिए मंत्रियों की श्रेष्ठता विश्वसनीयता और उनका राजनीति का ज्ञान आवश्यक होता है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत.**

(क) विजयमूलं किं भवतिः?

(क) केषां विजयमूलं मन्त्रः भवति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) कैः सुसंवृतो मन्त्रो विजयमूलं भवति?

3. **निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत-**

(क) 'श्रेष्ठः' इति पदस्य किं पर्यायपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ख) 'पराजयः' इति पदस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ग) 'मन्त्रिधुरैः अमात्यै' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

(घ) 'मन्त्रो राज्ञां विजयमूलं भवति' इति अस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्?

कच्चिन्निद्रावशं नैषि कच्चित्कालेवबुध्यसे
कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्यर्थनैपुणम्॥

अन्वयः-

कच्चित् निद्रावशं न एषि, कच्चित् काले अवबुध्यसे, कच्चित् च अपररात्रेषु अर्थनैपुणं चिन्तयसि।

पदार्थाः-

कच्चिन्निद्रावशम् - कच्चित्+निद्रावशम्।
कच्चित् - मुझे आशा है। (अव्यय)
निद्रावशं+निद्रायाः वशम् - नींद के वश में।
नैषि - न एषि, न गच्छसि-नहीं जाते हो।
चिन्तयस्यर्थनैपुणम् - चिन्तयसि+अर्थनैपुणम्।
निपुणस्य भावः नैपुणम्यनिपुण+अणध्ष्यञ्, विकल्प से नैपुण्यम्।
अवबुध्यसे - अव+बुध मध्यम पुरुष, एकवचन-जागते हो।

अनुवादः

मुझे उम्मीद है तुम कभी नींद के वश में नहीं होते, मुझे उम्मीद है कि तुम समय पर जागते हो। रात्रि के अंतिम प्रहर में (जब चारों और शांति हो) तुम अर्थ नैपुण्य (कैसे राज-काज अर्थात् वित्तीय-प्रबंधन निपुणतापूर्वक हो) की चिंता करते हो।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(ख) त्वं किं न एषि ?

(ख) त्वं कदा अवबुध्यसे?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) कच्चित् त्वम् अपररात्रेषु किं करोषि?

3. **निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत-**

(क) 'निपुणता' इति पदस्य किं पर्यायपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ख) 'जागरणम्' इति पदस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ग) अस्मिन् श्लोके किम् अव्ययपदं प्रयुक्तम् ?

(घ) 'कच्चिच्चापररात्रेषु चिन्तयस्यर्थनैपुणम्
इत्यस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्

कच्चिन्मन्त्रयसे नैकः कच्चिन्न बहुभिः सह
कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति॥

अन्वयः-

कच्चित् एकः एकच्चित् बहुभिः सह न मन्त्रयसेएकच्चित् ते मन्त्रितः मन्त्रः राष्ट्रं न परिधावति।

पदार्थः-

राष्ट्रं न परिधावति - राष्ट्र से बाहर तो नहीं जाता सार्वजनिक तो नहीं होता गोपनीय तो रहता है।
कच्चिन्मन्त्रयस - कच्चित्+मन्त्रयसे।
नैकः - न एकः।
कच्चिन्न - कच्चित्+ न।

अनुवादः-

मुझे आशा है तुम किसी गूढ़ विषय पर मात्र किसी एक के साथ या कभी बहुतों के साथ मंत्रणा नहीं करते। मुझे उम्मीद है तुम्हारे द्वारा मंत्रणा की गई बात या निर्णय (विचारित बात) राष्ट्र से बाहर नहीं फैलती।

विमर्श-

माना जाता है कि राष्ट्र की कोई महत्वपूर्ण बात या विषय पर किसी एक व्यक्ति से, चाहे वह कितना ही विद्वान या विश्वसनीय क्यों न हो, विचार कर निर्णय नहीं लेना चाहिए। साथ ही किसी महत्वपूर्ण विषय पर (गोपनीय विषय पर)बहुत लोगों के साथ भी यदि चर्चा की जाती है तो भी उस बात के बाहर फैलने की आशंका होती है। इसलिए कार्य की सफलता के लिए किसी गोपनीय विषय पर कुछ गिन-चुने विश्वस्त मंत्रियों से ही विचार विमर्श करना हितकर होता है। इससे नीतियों की गोपनीयता भंग नहीं होती और नीतियां साकार रूप ले पाती हैं ।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) त्वं केन सह न मन्त्रयसे?
   (ख) त्वं बहुभिः सह किं न करोषि?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) किं राष्ट्रं न परिधावति?
3. **निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत-**
   (क) 'मन्त्रितो मन्त्रो' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम् प्रयुक्तम् ?
   (ख) 'कच्चित्ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रं न परिधावति' इत्यस्मिन् वाक्ये किं कर्तृपदम्?

(ग) कच्चिन्मन्त्रयसे नैक इत्यस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्

(घ) 'श्लोकेस्मिन्' ते् इतिसर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

कच्चिदर्थं विनिश्चित्य लघुमूलं महोदयम्
क्षिप्रमारभसे कर्म न दीर्घयसि राघव॥

अन्वयः-

हे राघव! कच्चित् लघुमूलं महोदयम् अर्थं विनिश्चित्य क्षिप्रं आरभसे न दीर्घयसि।

पदार्थाः-

अर्थं विनिश्चित्य	-	अर्थस्य निर्णयं कृत्वा।
लघुमूलम्	-	लघु अस्ति मूलं यस्य तम्-जिसका मूल अत्यधिक छोटा हो यानी जो कार्य देखने में छोटा या हल्का प्रतीत हो, पर उसका दूरगामी प्रभाव अत्यधिक समृद्धि शाली हो।
महोदयम्	-	महा+उदयम्, महान् उदयः यस्य तम्- बहुव्रीहि, महान् उदयः एतम् एकर्मधारय, उत्कर्षपूर्ण-समृद्धि पूर्ण ।
आरभसे	-	आ उपसर्ग, रभ् धातुए मध्यमपुरुष, एकवचन, आरंभ करते हो।
दीर्घयसि	-	दीर्घ, मध्यमपुरुष, एकवचन, देर करते होए नामधातु दीर्घ करोषि।

अनुवादः-

हे राघव! (रघुवंशोत्पन्न भरत) किसी बड़े उत्कर्षपूर्ण या समृद्धिशाली कार्य को, जिसका मूल अत्यंत छोटा हो, जो बिल्कुल छोटा या हल्का कार्य प्रतीत होता हो, तो शीघ्र ही उस कार्य को तो अवश्य आरंभ करते होगे, विलंब तो नहीं करते होंगे ।

विमर्शः-

राम के द्वारा भरत को पूछे गए प्रश्नों में एक राजा के लिए छोटी से छोटी बात में भी जागरूक रहने की आवश्यकता पर बल दिया गया है ।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) त्वं कदा कर्म आरभसे?

(ख) त्वं कच्चित् किं विनिश्चित्य कर्म करोषि?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) त्वं कीदृशं कर्म क्षिप्रम् आरभसे?

3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-**

(क) 'शीघ्रम्' इति पदस्य समानार्थकपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

(ख) 'महोदयं कर्म' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?

कच्चित्सहस्रान्मूर्खानामेकमिच्छसि पण्डितम्
पण्डितो ह्यथकृच्छ्रेषु कुर्यान्निः श्रेयसं महत्।

अन्वयः-

कच्चित् सहस्राणां मूर्खाणांयमध्ये)एकं पण्डितम् इच्छसि एहि पण्डितः अर्थकृच्छ्रेषु (अपि)महत् निरूश्रेयसं कुर्यात्।

पदार्थाः-

पण्डितः - बुद्धिमान, चतुर, कुशल, विद्वान।
अर्थकृच्छ्रेषु - धन की कठिनाई मे, अर्थस्य कृच्छ्रेषु, षष्ठी तत्पुरुष।
निरूश्रेयसम् - निरूशेषेण श्रेयांसि यस्मिन् तत्, बहुव्रीहिसमास, कल्याण।

अनुवादः-

मुझे उम्मीद है कि तुम हजारों मूर्खों में से एक पंडित को चाहते हो (एक पंडित का चुनाव करते हो), क्योंकि धन की कठिनाई में भी (धनाभाव की स्थिति में भी)विद्वान् व्यक्ति महान कल्याणकारी कार्य करता है ।

विमर्श :-

आमतौर पर अच्छा कार्य करने वाला व्यक्ति भी धनाभाव में गलत कार्य करने को प्रवृत्त हो जाता है, पर पंडित यानी विद्वान् और विवेकी व्यक्ति विषम से विषम परिस्थिति में भी अपने कर्तव्य पथ से तनिक भी नहीं डिगता।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
(क) केषां मध्ये एकं पंडितम् इच्छसि?
(ख) कति मूर्खाणां मध्ये एकं पण्डितम् इच्छसि?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
(क) पण्डितः कस्यां परिस्थितौ किं कुर्यात्?

3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-**
(क) महत् निरूश्रेयसम् इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?
(ख) काठिन्येषु इति पदस्य किं समानार्थकपदं श्लोके प्रयुक्तम्?
(ग) कच्चित्सहस्रान्मूर्खानामेकमिच्छसि पण्डितम् इति वाक्ये किं क्रियापदम्
(घ) पण्डितो ह्यर्थकृच्छ्रेषु कुर्यान्निरूश्रेयसं महत् इति वाक्ये किं कर्तृपदम्?

एकोप्यमात्यो मेधावी शूरो दक्षो विचक्षणः
राजानं राजपुत्रं वा प्रापयेत् महतीं श्रियम्॥

अन्वयः-

एकः अपि मेधावी, शूरः, दक्षः, विचक्षणः अमात्यः
राजानं राजपुत्रं वा महतीं श्रियं प्रापयेत।

पदार्थाः-

विचक्षणः	-	वि+चक्ष्+ल्युट्, विशेषज्ञ, विद्वान्, दूरदर्शी।
दक्षः	-	दक्ष्+अचल, योग्य, सक्षम ।
मेधाविन्	-	मेधा +इनिए मेधावी, तीव्र बुद्धि वाला एबुद्धिमान।
श्रियम्	-	समृद्धि को।
एकोप्यमात्यः	-	एकः+ अपि+अमात्यः।
प्रापयेत	-	प्रआप्, णिच्, विधिलिङ्कार, प्रथमपुरुष एकवचन- प्राप्त करवाए।

अनुवादः-

एक भी बुद्धिमान, बलवान, योग्य और विशेषज्ञ मंत्री, राजा अथवा राजपुत्र को बहुत लाभ पहुंचाता है (समृद्धि शाली बनाता है)।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) कति अमात्याः राजानं महतीं श्रियं प्रापयेयुः?
   (ख) अमात्यः कं महतीं श्रियं प्रापयेत्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) कीदृशः अमात्यः राजानं महतीं श्रियं प्रापयेत्
3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-**
   (क) कुशलः इति पदस्य समानार्थकपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।
   (ख) महतीं श्रियम् इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्
   (ग) मूर्खः इति पदस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।
   (घ) श्लोकेस्मिन् किं कर्तृपदम्

कच्चिन्मुख्या महत्स्वेव मध्यमेषु च मध्यमाः
जघन्याश्च जघन्येषु भृत्यास्ते तात योजिताः।

अन्वयः-

हे तात! कच्चित् महत्सु मुख्याः, मध्यमेषु मध्यमाः जघन्येषु च जघन्याः भृत्याः ते योजिताः।

पदार्थाः-

महत्स्वेव	-	महत्सु+एव।
भृत्याः	-	सेवकाः।
जघन्याः	-	जघने भवः यत् निम्नस्तरीय अधाम, दुष्ट।
योजिताः	-	युज्णिच् क्त, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन, जोड़े गए।

अनुवादः-

हे तात (हे मेरे प्रिय भाई)! मुझे उम्मीद है कि तुमने महान् व्यक्तियों के लिए प्रमुख (विशिष्ट), मध्यम कोटि के लोगों के लिए मध्यम श्रेणी के और अधमकोटि (निम्नस्तरीयों) के लिए निम्नस्तरीय सेवकों की नियुक्ति की है।

विमर्श -

यहां प्रकृति एवं स्तर के अनुसार यथायोग्य सेवकों की नियुक्ति की बात पर बल दिया गया है। इसे आजकल प्रोटोकोल कहा जाता है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत.**

   (क) महत्सु कीकृशाः भृत्याः योजिताः?

   (ख) केषु जघन्याः भृत्याः योजिताः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

   (क) भरतेन केषु कीकृशाः भृत्याः योजिताः?

3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-**

   (क) 'मुख्याः भृत्याः' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

   (ख) 'सेवकाः' इति अर्थे श्लोके किम् पदं प्रयुक्तम्?

   (ग) 'विभाजिताः' इति पदस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

   (घ) श्लोकेस्मिन् किं क्रियापदम्

अमात्यानुपधातीतान्पितृपैतामहाञ्छुचीन्
श्रेष्ठाञ्छ्रेष्ठेषु कच्चित्वं नियोजयसि कर्मसु॥

अन्वयः-

कच्चित् त्वम् उपधातीतान्, पितृपैतामहान् शुचीन्, श्रेष्ठेषु श्रेष्ठान् अमात्यान् कर्मसु नियोजयसि।

पदार्थाः-

उपधा - उप+धा+अङ् ईमानदारी की जांच या परीक्षण यह जांच चार स्तरों पर की जाती है निष्ठा, निर्लिप्तता, संयम और साहस)।

उपधातीतान् - उपधाः अतीतान्, जो परीक्षण से गुजर चुके हो उनको ।

पैतामहान् - पितृपितामह+अण् दादा से संबंधित को।

शुचीन् - पवित्र् विशुद्ध ।

नियोजयसि - नि+युज् णिच् मध्यम पुरुष, एकवचन- नियुक्त करते हो।

अनुवादः-

मुझे आशा है तुम परीक्षितय यानी जिनकी अच्छी तरह से जांच हो चुकी हो और जो परीक्षण में शुद्ध

प्रमाणित हो चुके हों, कई पीढ़ियों से कार्य करने वाले, पिता-पितामह आदि के समय से साथ रहने वाले), पवित्र आचरण वाले और श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ मंत्रियों को कार्य में नियुक्त करते हो ।

विमर्शः-

इस श्लोक में मंत्रियों के चयन में पूर्णतः सावधानी रखने की बात पर बल दिया गया है। वे वफादार हों, मंत्रियों के कार्यो से पूरी तरह से अवगत हों और उनका आचार-व्यवहार पवित्र हो, वे किसी प्रलोभन में न आ जाएं और अत्यधिक साहसी हों।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत.**
   (क) त्वं केषु श्रेष्ठान् कर्मसु नियोजयसि?
   (ख) त्वं कान् श्रेष्ठान् कर्मसु नियोजयसि?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) त्वं कीकृशान् अमात्यान् कर्मसु नियोजयसि?
3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-**
   (क) 'पवित्रन्' इति पदस्य समानार्थकपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।
   (ख) श्लोके 'त्वम् इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्
   (ग) 'श्रेष्ठान् अमात्यान' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?
   (घ) 'श्रेष्ठाञ्छ्रेष्ठेषु कच्चित्वं नियोजयसि कर्मसु' इति वाक्ये किम् अव्ययपदम्

कच्चिद्धृष्टश्च शूरश्च धृतिमान्मतिमाञ्छुचिः
कुलीनश्चानुरक्तश्च दक्षः सेनापतिः कृतः।

अन्वयः-

कच्चित् धृष्टः, शूरः, धृतिमान्, मतिमान्, शुचिः, कुलीनः, अनुरक्तः, दक्षः च सेनापतिरूयत्वयाद्ध कृतः।

पदार्थाः-

धृष्टः	-	धृष्+क्त, साहसी, दिलेर, विश्वसनीय ।
धृतिमान	-	धृति+मतुप्, स्थिर, धैर्यवान।
मतिमान्	-	मति + मतुप् बुद्धिमान।
अनुरक्तः	-	अनु+रञ्ज+क्त, प्रसन्न, संतुष्ट, निष्ठावान।
शुचि	-	शुच्+कि, पवित्र ।
कुलीनः	-	कुल+ ऊंचे कुल या वंश में उत्पन्न

अनुवादः-

मुझे उम्मीद है तुमने विश्वस, बलशाली, धैर्यवान् बुद्धिमान् पवित्र, कुलीन (अभिजात), निष्ठावान और अपने कार्य में पूर्णतः निपुण (कुशल) सेनापति नियुक्त किया होगा।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) 'धृष्टः श्रू इति पदं कस्य विशेषणम्?

(ख) श्लोकेस्मिन् कः वक्ता अस्ति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) सेनापतेः विशेषणानि लिखत।

3. **निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत-**

(क) 'अधीरः 'इति पदस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत

(ख) 'बुद्धिमान्' इति पदस्य समानार्थकपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

(ग) 'दक्षः सेनापतिः' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

कच्चिद् बलस्य भक्तं च वेतनं च यथोचितम्
सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे॥

अन्वयः-

कच्चित् बलस्य यथोचितं भक्तं वेतनं च सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि विलम्बसे न।

पदार्थाः-

यथोचितम्	-	उचितम् अनतिक्रम्य, अव्ययीभाव समास, जैसा उचित है।
सम्प्राप्तकालम्	-	सम्प्राप्तः कालययस्य तम्-बहुव्रीहि, समय पर।
दातव्यम	-	दा+तव्यत्, देना चाहिए।
बलस्य	-	सेना का, फौज का।
भक्तम्	-	भोजन।

अनुवादः-

मैं उम्मीद करता हूं, तुम सैनिकों को यथोचित भोजन और उनका वेतन समय पर देते होंगे, उसमें विलंब नहीं करते होंगे ।

विमर्शः-

फौज की कर्तव्यनिष्ठा विजय का पर्याय होती है। सैनिकों के मन में किसी प्रकार की कमी की कुंठा न हो, यह आवश्यक है। इसलिए अच्छे राजा का यह कर्तव्य है कि वह उनके यथोचित भोजन की व्यवस्था करता रहे और उनका वेतन उन्हें समय पर देता रहे, तभी वे प्रसन्न मन से अपनी वफादारी निभा पाएंगे। उसमें यदि किसी प्रकार की कमी होती है या वेतन मिलने में देरी होती है, तो सैनिकों के मन में असंतोष और आक्रोश उबलने लगता है जो राष्ट्र के लिए हितकारी नहीं होता।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

   (क) कस्य यथोचितं वेतनं दातव्यम्?

   (ख) वेतनं भक्तं च कदा दातव्यम्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

   (क) यथाकालं भरतरू किं ददाति?

3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-**

   (क) 'सैनिकः' इति पदस्य समानार्थकपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

   (ख) 'शीघ्रतां करोषि' इति पदस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

   (ग) 'यथोचितं भोजनम्' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?

   (घ) 'सम्प्राप्तकालं दातव्यं ददासि न विलम्बसे' इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

कालातिक्रमणाच्चौव भक्तवेतनयोर्भृताः
भर्तुरप्यतिकुप्यन्ति सोनर्थः सुमहान् स्मृतः।

अन्वयः-

भक्तवेतनयोः कालातिक्रमणात् भृताः भर्तुः अति कुप्यन्तिएसः सुमहान् अनर्थः स्मृतः।

पदार्थाः-

कालातिक्रमणात्	-	कालस्य अतिक्रमणात्, समय के बीत जाने पर।
भक्तवेतनयोः	-	भक्तं च वेतनं च, तयोः, द्वन्द्व समास, भोजन और वेतन के।
भृताः	-	वेतनभोगी, भाड़े के नौकर, भरण पोषण किए गए।
भर्तुः	-	भर्तृ, षष्ठी, एकवचन, स्वामी का।
अतिकुप्यन्ति	-	अतिशयेन कोपं कुर्वन्ति, अत्यधिक क्रोध करते हैं।
स्मृतः	-	सृमृ+क्त, स्मरण किया गया, माना गया।
अनर्थः	-	न अर्थः नञ् तत्पुरुष, विनाश।

अनुवादः-

बहुत विलंब से (समय के बीत जाने-पर) भोजन और वेतन देने से सेवक स्वामी के प्रति अत्यधिक क्रुद्ध हो जाते हैं और वह क्रोध बहुत बड़े अनर्थ का कारण बनता है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

   (क) कयोः अतिक्रमणात् सेवकाः कुप्यन्ति?

   (ख) भृताः कस्य अतिकुप्यन्ति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

   (क) सुमहान् अनर्थः केः स्मृतः?

3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-**

(क) 'वेतनभोगिनः' इति पदस्य समानार्थकपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

(ख) 'प्रसन्नाः भवन्ति' इति पदस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।

(ग) 'सुमहान् अनर्थः' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्

(घ) भृताः भर्तुः अतिकुप्यन्ति इति वाक्ये किं कर्तृपदम्

परामर्शाः-

- इस पाठ को पढ़ाते समय सामान्य-शिक्षण-विधियों के साथ छात्रों की अवबोधन की जांच के लिए तार्किक और प्रासंगिक प्रश्नों का उपस्थापन करें। जैसे,- यदि आप राम के स्थान पर होते तो भरत से किस तरह के प्रश्न पूछते आदि।
- क्या भरत का आचरण आपकी दृष्टि में उचित है?
- राज्य-व्यवस्था के संचालन के लिए राम के द्वारा उपस्थापित ये प्रश्न आज के युग में कितने प्रासंगिक हैं?
- विद्यार्थियों को राजतंत्र और प्रजातंत्र की अच्छाइयों और बुराइयों का बिंदुवार विश्लेषण करते हुए एक परियोजना कार्य करने हेतु निर्देश करें।

अनुभव विस्तारः-

वाल्मीकि रामायण से संग्रहीत इन लोगों को पढ़ने के साथ-साथ छात्रों को मानवीय मूल्यों के महत्व, भावात्मक संवे. दनाओं से परिचिय और रक्त-संबंधों के सहज खिंचाव तथा एक दूसरे के सुख-दुख में स्वयं सुख-दुख का अनुभव करने की भावना को रेखांकित किया गया है पर भावनाओं पर विजय पाकर कर्तव्य करने की प्रेरणा इस पाठ का मूल भाव है। पाठ को पढ़ते समय छात्रों की आलोचनात्मक-चिंतन-क्षमता का विकास हो, छात्रों में निर्णय-क्षमता आए और महाकवि वाल्मीकि के समय में भी राजनीतिक-सजगता के निदर्शनों से छात्र परिचित हो सकें, यह इस पाठ का मूल भाव है ।

सौवर्णो नकुलः

(द्वितीयः पाठ)

पाठपरिचयः-

प्रस्तुत पाठ महाभारत के आश्वमेधिक पर्व से संकलित है। महाभारत युद्ध के उपरान्त महाराज युधिष्ठिर अश्वमेध यज्ञ करते हैं। यज्ञ सम्पन्न होते ही एक नकुल अर्थात् नेवला यज्ञभूमि में आता है। उसका आधा शरीर सोने का है। वह यज्ञ करने वाले पुरोहितों से कहता है कि इतना विशाल अश्वमेघ यज्ञ भी महत्त्व की दृष्टि से उस गरीब ब्राह्मण के सक्तुप्रस्थ यज्ञ के समान नहीं है जिसमें मेरा आधा शरीर सोने का हो गया था। नेवले द्वारा ऐसी अद्‌भुत बात कहने पर यज्ञ करने वाले पुरोहितों ने जब उस सक्तुप्रस्थ यज्ञ के विषय में जिज्ञासा प्रकट की, तो नकुल विस्तारपूर्वक उस वृत्तान्त को सुनाता है।

पाठोद्देश्यानि-

(i) महाभारत की कथा कज्ञ परिचय कराकर उसमें युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का निरूपण कराना।

(ii) दान की महिमा का वर्णन करके यज्ञों में दानविधि के विषय में ज्ञान प्रदान कराना।

(iii) ब्राह्मण-परिवार द्वारा त्याग की पराकाष्ठा का वर्णन करते हुए अतिथि के सत्कार की परम्परा का निरूपण कराना।

(iv) पाठ के श्लोकों का गायन करते हुए संस्कृत काव्य परम्परा का बोधन तथा भाषाशैली आदि का ज्ञान प्रदान कराना।

श्रूयतां राजशार्दूल महदाश्चर्यमुत्तमम्।
अश्वमेधे महायज्ञे निवृत्ते यदभूद्विभो!!1॥

अन्वयः-

विभो! राजशार्दूल! अश्वमेधे महायज्ञे निवृत्ते (सति) यत् उत्तमं महत् आश्चर्यम् अभूत्, (तत्) श्रूयताम्।

पदार्थाः-

राजशार्दूल-(राजा शार्दूल इव) = राजा जो चीते के समान है/राजश्रेष्ठ, **निवृत्ते-**(नि+वृत्+क्त) = समाप्त होने पर। **अभूत्-**(भू+लुङ्+प्र.पु.ए.व.) = हुआ। **विभो!**= प्रभो।

सरलानुवादः-

ऋषि वैशम्पायन जनमेजय को कहते हैं कि राजाओं में श्रेष्ठतम, प्रभो! (युधिष्ठिर द्वारा आयोजित उस) अश्वमेध यज्ञ के सम्पन्न होने पर जो बहुत उत्तम तथा बड़ी आश्चर्यजनक घटना हुई, उसे सुनिए।

विमर्शः-

इस पाठ में भी प्रथम पाठ की तरह अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया गया है।

बिलान्निष्क्रम्य नकुलो रुक्मपार्श्वस्तदानघ!
मानुषं वचनं प्राह धृष्टो विलशयो महान्॥2॥

अन्वयः–

(हे) अनघ! तदा विलशयः धृष्टः रुक्मपार्श्वः महान् नकुलः बिलात् निष्क्रम्य मानुषं वचनं प्राह।

पदार्थाः–

अनघ!–(न अघः, नञ् तत्पुरुष) = **निष्पाप** (राजन्), **बिलशयः**(बिले शेते यः सः) = बिल में रहने वाला, **रुक्मपार्श्वः**–(रुक्ममयं पार्श्वं यस्य सः, बहुब्रीहिः)=सुनहरे बगलों वाला, **निष्क्रम्य** (निः+सृ+क्रम्+ल्यप्) = निकल. कर, **प्राह**– (प्र+आह) बोला।

सरलानुवादः–

हे निष्पाप (राजन्)! उसके बाद बिल में रहने वाले, धृष्ट (हिम्मती), सुनहरी बगलों वाले महान् नेवले ने बिल ने निकलकर मनुष्यों जैसी वाणी में कहा।

विमर्शः–

रुक्मपार्श्वः अर्थात् रुक्ममय (सुवर्णमय) हैं पार्श्वभाग (बगलें) जिसकी, यह नेवले के लिए कहा गया है क्योंकि नेवले ने जब दानी ब्राह्मण के घर में सक्तुप्रस्थ यज्ञ के उपरान्त प्रवेश किया, तो दान के जल तथा पुष्प आदि के स्पर्श से उसका आधा शरीर सोने का (सुवर्णमय) हो गया था।

सक्तुप्रस्थेन वो नायं यज्ञस्तुल्यो नराधिपाः।
उञ्छवृत्तेर्वदान्यस्य कुरुक्षेत्रनिवासिनः॥3॥

अन्वयः–

नराधिपाः वः अयं यज्ञः कुरुक्षेत्रनिवासिनः, उञ्छवृर्त्तेः, वदान्यस्य (ब्राह्मणस्य) सक्तुप्रस्थेन तुल्यः न (अस्ति)।

पदार्थाः–

वः–(युष्माकं) = तुम्हारा, **उञ्च्छवृत्तेः**– (उञ्छेन (शिष्ट–संकलनेन) वृत्तिः यस्य सः) = खेतों में छूटे हुए अनाज से जीविका चलाने वाले, **वदान्यस्य** = दानशील (ब्राह्मण) के, **सक्तुप्रस्थेन**–(सक्तूनां प्रस्थं, तेन) सत्तुओं के सेर से (सेर–भर सत्तुओं से)

सरलानुवादः–

हे राजाओं!, (युधिष्ठिर आदि), तुम्हारा यह यज्ञ (दान के महत्त्व की दृष्टि से) कुरुक्षेत्र में रहने वाले, खेतों में छूटे अनाज से अपनी जीविका चलाने वाले, दानशील (उस ब्राह्मण) के सत्तुओं के सेर के बराबर (समान भी) नहीं है।

विमर्शः-

उञ्छवृत्तेः अर्थात् जब किसान अपने खेत से अनाज समेट लेते हैं, उसके बाद जो दाने छूट जाते हैं, उनको एकत्रित करके जो व्यक्ति अपनी जीविका चलाता है, वह उञ्छवृत्ति कहलाता है।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) युधिष्ठिरः कं यज्ञम् अकरोत्?
   (ख) मानुषं वचनं कः प्राह?
   (ग) नकुलमतेन यज्ञः केन तुल्यः नासीत्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) महदाश्चर्यं कदा अभूत्?
   (ख) ब्राह्मणः कथं जीविकां निर्वाहयति स्म?
3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**
   (क) 'तुच्छम्' इत्यस्य किं विलोमपदं द्वितीये श्लोके प्रयुक्तम्?
   (ख) "मानुषं वचनं प्राह" इत्यत्र क्रियापदं किम्?
   (ग) "दानशीलस्य" इत्यर्थे तृतीये श्लोके किं पदं प्रयुक्तम्?
   (घ) 'अयम्' इति सर्वनाम कस्मै प्रयुक्तम्?

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे धर्मज्ञैर्बहुभिर्वृते।
उञ्छवृत्तिर्द्विजः कश्चित्कापोतिरभवत्पुरा।।4।।

अन्वयः-

पुरा बहुभिः धर्मज्ञैः वृते धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे कश्चित् कापोतिः उञ्छवृत्तिः द्विजः अभवत्।

पदार्थाः-

धर्मज्ञैः-(धर्मं जानन्ति, तैः) – धर्म के ज्ञाताओं से, **वृते** – (परिवृते इत्यर्थः) घिरे हुए अर्थात् भरे हुए, **धर्मक्षेत्रे** (धर्मप्रधाने क्षेत्रे)– धार्मिक स्थान में, **कापोतिः –** (कपोत इव वृत्तिः यस्य सः) कपोत की भाँति यहाँ-वहाँ से अन्न संग्रह कर जीविका चलाने वाला, **उञ्छवृत्तिः** (उञ्छेन वृत्तिः यस्य सः) – खेतों में छूटे हुए अन्न के दानों का संग्रह कर निर्वाह करने वाला, **द्विजः** – द्विवारं जायते इति।) ब्राह्मण।

सरलानुवादः-

पुराने समय में अनेक धर्मज्ञ लोगों से परिपूर्ण धार्मिक क्षेत्र कुरुक्षेत्र में कोई कपोत के समान खेतों में छूटे हुए अन्न का संग्रह कर जीविका निर्वाह करने वाला (एक) ब्राह्मण हुआ।

विमर्शः-

ब्राह्मण के दो विशेषण 'कापोतिः' तथा 'उञ्छवृत्तिः' से स्पष्ट होता है कि उसकी जीविका का कोई स्थायी साधन नहीं था आय का निश्चित साधन न होने के कारण यद-कदा भोजन भी प्राप्त नहीं होता था।

सभार्यः सह पुत्रेण सस्नुषस्तपसि स्थितः।
वधूचतुर्थो वृद्धः स धर्मात्मा नियतेन्द्रियः॥5॥

अन्वयः-

सभार्यः, सस्नुषः, वधूचतुर्थः, धर्मात्मा, नियतेन्द्रियः सः वृद्धः पुत्रेण सह तपसि स्थितः (आसीत्)।

पदार्थाः-

सभार्यः(भार्यया सहितः)–पत्नीसहित, **सस्नुषः** –(स्नुषया सहितः) पुत्रवधू के साथ, **वधूचतुर्थः** –(वधू चतुर्थी यस्य सः) जिसके परिवार में चौथी सदस्या वधू (पत्नी) थी, **तपसि स्थितः** –(तपसि रतः इति भावः) तप में लगे हुए।

सरलानुवादः-

अपनी पत्नी एवं पुत्रवधू के साथ धर्मात्मा, जितेन्द्रिय वह (ब्राह्मण) अपने पुत्र के साथ ही (निरन्तर) तप में लीन रहते थे। अर्थात् वह ब्राह्मण परिवार तपस्वी प्रवृत्ति का था।

विमर्शः-

इस पद्य में 'सभार्यः' तथा 'वधूचतुर्थः' दोनों विशेषण ब्राह्मण के लिए प्रयुक्त हुए हैं। दोनों विशेषणों का अर्थ भी एक समान है। अतः यहाँ पुनरुक्ति दोष प्रतीत होता हैं। द्वितीय विशेषण का अभिप्राय यही प्रतीत होता है कि परिवार में कुल चार सदस्य थे।

षष्ठे काले कदाचिच्च तस्याहारो न विद्यते।
भुङ्क्तेऽन्यस्मिन्कदाचित्स षष्ठे काले द्विजोत्तमः॥6॥

अन्वयः-

कदाचित् षष्ठे काले (अपि) तस्य आहारः न विद्यते। सः द्विजोत्तमः कदाचित् अन्यस्मिन् षष्ठे काले भुङ्क्ते।

पदार्थः-

षष्ठे काले – छठे आहार काल में अर्थात् (एक दिन के दो आहार काल मानते हुए) तीसरे दिन के अन्त में, **कदाचित्** – कभी-कभी, **अन्यस्मिन्** – दूसरे अर्थात् (एक छठा आहार काल समाप्त होकर दूसरे छठे आहार काल में) छठे दिन के अन्त में, **द्विजोत्तमः** –(द्विजेषु उत्तमः) ब्राह्मण श्रेष्ठ, **भुङ्क्ते** – (भुज्+आत्मनेपद, प्र.पु.ए.व.) भोजन करता था।

सरलानुवादः-

(ब्राह्मण परिवार की आय का निश्चित साधन न होने के कारण) वह ब्राह्मण (परिवार) कभी-कभी छठे समय अर्थात् तीसरे दिन में भी भोजन प्राप्त नहीं कर पाता था। कभी-कभी तो दूसरे छठें काल अर्थात् छठें दिन में वह ब्राह्मण श्रेष्ठ (सपरिवार) भोजन करता था।

विमर्शः-

ब्राह्मण परिवार तपस्वी था। भोजन की निश्चित व्यवस्था नहीं थी। अतः प्रायः तीसरे दिन ही भोजन प्राप्त हो पाता था। कभी-कभी तो छठें दिन ही भोजन प्राप्त हो पाता था।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) द्विजः कुत्र वसति स्म?

(ख) द्विजस्य वृत्तिः का असीत्?

(ग) द्विजस्य भोजनकालः प्रायः कः आसीत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) द्विजः कीदृशे धर्मक्षेत्रे वसति स्म?

(ख) द्विजस्य परिवारे के के सदस्याः आसन्?

3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'अधुना' इत्यस्य किं विलोमपदं चतुर्थे श्लोके प्रयुक्तम्?

(ख) 'पुत्रवधू' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(ग) 'बहुभिः' इति पदस्य विशेष्यपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) 'विद्यते' इति क्रियायाः कर्तृपदं किं प्रयुक्तम्?

कपोतधर्मिणस्तस्य दुर्भिक्षे सति दारुणे।
क्षीणौषधिसमवायो द्रव्यहीनोऽभवत्तदा॥7॥

अन्वयः-

तस्य कपोतधर्मिणः (एकदा) दारुणे दुर्भिक्षे सति तदा (सः)
क्षीणौषधिसमवायः द्रव्यहीनः (च) अभवत्।

पदार्थाः-

कपोतधर्मिणः – (कपोत इव धर्मम् आचरति, तस्य) कबूतर के समान आचरण वाले (कबतूर की तरह इधर-उधर से अन्न संग्रह करने वाले), **दुर्भिक्षे** – अकाल पड़ने पर, **क्षीणौषधिसमवायः** – (क्षीणः औषधिसमवायः यस्य सः) – जिसकी औषधियाँ भी समाप्त हो गई हों, उसका, अर्थात् भयंकर अकाल की स्थिति में वनस्पति (वृक्ष आदि) भी सूख गए थे।

सरलानुवादः-

कबूतरों के समान आचरण वाले उस ब्राह्मण के (अर्थात् जिसके भोजन का पहले ही कोई ठिकाना नहीं था), (एक बार) भयंकर अकाल पड़ने पर जब वनस्पति भी नष्टप्राय हो गए थे, तब (वह ब्राह्मण) द्रव्यहीन अर्थात् निर्धन हो गया।

अथ षष्ठे गते काले यवप्रस्थमुपार्जयत्।
यवप्रस्थं च ते सक्तूनकुर्वन्त तपस्विनः॥8॥

अन्वयः-

अथ षष्ठे काले गते (परिवारः) यवप्रस्थम् उपार्जयत्। (तथा) ते तपस्विनः यवप्रस्थं च सक्तून् अकुर्वन्त।

पदार्थाः-

यवप्रस्थम् –(यवानां प्रस्थः, तम्) – जौ का सेर, **उपार्जयत्** – (उप+अर्जयत्) – प्राप्त किया। **सक्तून् अकुर्वन्त** – सत्तू बनाए।

सरलानुवादः-

(उस भयंकर अकाल के दौर में उस ब्राह्मण परिवार को) इसके उपरान्त (भोजन का) छठा काल बीत जाने के बाद (किसी तरह) एक सेर जौ प्राप्त हुए। तपस्वियों के समान जीवन यापन करने वाले उन्होंने तब उस जौ के सेर से सत्तू बनाए।

विमर्शः-

सक्तून् अकुर्वन्त – जौ को भूनकर फिर पीसकर सत्तू बनाए जाते हैं। सत्तू को घोलकर या बिना घोले भी खाया जाता है।

कृतजप्याह्निकास्ते तु हुत्वा वह्निं यथाविधि।
कुडवं कुडवं सर्वे व्यभजन्त तपस्विनः॥9॥

अन्वयः-

कृतजप्याह्निकाः ते सर्वे तपस्विनः तु यथाविधि वह्निं हुत्वा कुडवं कुडवं व्यभजन्त।

पदार्थाः-

कृतजप्याह्निकाः –(कृतं जप्यम् आह्निकं कर्म च यैः, ते) जिन्होंने जप एवं नित्यकर्मादि कर लिया हो, **वह्निं हुत्वा** – अग्नि में हवन करके, **कुडवम्** – पाव भर/ चौथाई भाग, **व्यभजन्त** – (वि+भज्+लङ्+प्र., बहु.) – बाँटा।

सरलानुवादः-

(जब) उन सभी तपस्वियों ने जप आदि नित्य करणीय कर्म कर लिया तथा विधि विधान से हवन आदि कर्म सम्पन्न कर लिया, तब पाव-पाव भर (सत्तू) परस्पर बाँट लिए।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत–

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) ब्राह्मणः कदा द्रव्यहीनः अभवत्?
   (ख) ब्राह्मणपरिवारः किम् उपार्जयत्?
   (ग) ते यवप्रस्थं किम् अकुर्वन्त?
   (घ) परिवारः किं कृत्वा सक्तून् व्यभजत?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) दुर्भिक्षे सति किम् अभवत्?
   (ख) ते सर्वे सक्तून् कथं व्यभजन्त?
3. **यथानिर्देशम् उत्तरत–**
   (क) 'कपोतधर्मिणः' इति पदं कस्य विशेषणम्?
   (ख) 'अग्निम्' इत्यर्थे किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

अथागच्छद्द्विजः कश्चिदतिथिर्भुञ्जतां तदा।
ते तं दृष्ट्वातिथिं तत्र प्रहृष्टमनसोऽभवन्॥10॥

अन्वयः–

अथ तदा भुञ्जतां (तेषां) तत्र कश्चित् अतिथिः द्विजः आगच्छत्। ते तम् अतिथिं दृष्ट्वा प्रहृष्टमनसः अभवन्।

पदार्थाः–

भुञ्जतां –(भुज+शतृ, ष.ब.वं.) – खाते हुओं के/खाते हुए, **अतिथिः** –(न तिथिः यस्य) अभ्यागत/मेहमान, **प्रहृष्टमनसः** –(प्रहृष्टं मनः येषां, ते) – प्रसन्न मन वाले, **अभवन्** – (भू+लङ्) – हुए।

सरलानुवादः–

उनके (ब्राह्मण परिवार के) भोजन करते हुए (ही) वहाँ पर कोई ब्राह्मण अतिथि आ गए। वे सब (कई दिनों के उपरान्त भोजन प्राप्त होने पर भी) उस अतिथि को देखकर प्रसन्नचित्त हो गए।

विमर्शः–

'अतिथि देवो भव' की परम्परा का पालन करते हुए ब्राह्मण परिवार ने कई दिनों के उपरान्त भोजन प्राप्त होने के बाद भी अतिथि का प्रसन्न मन से स्वागत किया। भारतीय परम्परा में कोई भी अतिथि प्राप्त हो, उसका प्रसन्न मन से ही स्वागत करने का निर्देश है।

कुटीं प्रवेशयामासुः क्षुधार्तमतिथिं तदा।
इदमर्घ्यं च पाद्यं च बृसी चेयं तवानघ॥11॥ क॥

अन्वयः–

तदा (ते) क्षुधार्तम् अतिथिं कुटीं प्रवेशयामासुः। (ततः हे) अनघ! इदं च (ते) अर्घ्यम्, (इदं) च पाद्यम्, इयं च बृसी (इति प्रकारेण सत्कारमकुर्वन्)।

पदार्थाः-

क्षुधार्तम् – (क्षुधया आर्तम्) – भूख से व्याकुल, **कुटीम्** – कुटिया में, **प्रवेशयामासुः** – (प्र+विश्+लिट्+अस् अनुप्रयोग प्र.पु.ब.व.) प्रवेश कराया। **अर्घ्य** – हाथ धोने के लिए जल, **पाद्यम्** – पैर धोने के लिए जल। **बृसी** – आसन।

सरलानुवादः-

इसके बाद उन्होंने भूख से व्याकुल उस अतिथि ब्राह्मण को (अपनी) कुटिया में प्रवेश कराया। (तत्पश्चात्) हे निष्पाप! (पवित्र अतिथि) यह आपके लिए हाथ धोने का जल, यह पैर धोने का जल और यह आसन है। (इत्यादि प्रकार से स्वागत किया)

शुचयः सक्तवश्चेमे नियमोपार्जिताः प्रभो!
प्रतिगृह्णीष्व भद्रं ते मया दत्ता द्विजोत्तम!॥11॥ ख॥

अन्वयः-

प्रभो! इमे शुचयः नियमोपार्जिताः सक्तवः ते मया दत्ताः; द्विजोत्तम! प्रतिगृह्णीष्व। भद्रम् (अस्तु ते)।

पदार्थाः-

शुचयः–पवित्र, **नियमोपार्जिताः** –(नियमेन उपार्जिताः) – नियम से अर्जित किए हुए। **सक्तवः** – **सत्तू; प्रतिगृह्णीष्व** – स्वीकार करो। **द्विजोत्तम** (द्विजेषु उत्तमः) – ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, **भद्रम्** – कल्याण।

सरलानुवादः-

हे प्रभो! ये पवित्र एवं नियमपूर्वक अर्जित किए हुए (अर्थात् अन्याय से अर्जित नहीं है) सत्तू मैंने आपको दिए हैं। कृपया इन्हें स्वीकार करें। आपका कल्याण हो। अर्थात् आप सत्तू खाकर प्रसन्न हों।

विमर्शः-

ब्राह्मण परिवार ने स्वयं सत्तू न खाकर सारे सत्तू उस अतिथि ब्राह्मण को दे दिए तथा अन्नदान का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया।

इत्युक्त्वा तानुपादाय सक्तून्प्रादाद्द्विजातये।
ततस्तुष्टोऽभवद्विप्रस्तस्य साधोः महात्मनः॥12॥

अन्वयः-

इत्युक्त्वा (ब्राह्मणः) तान् सक्तून् उपादाय द्विजातये प्रादात्। ततः विप्रः तस्य महात्मनः साधोः तुष्टः अभवत्।

पदार्थाः-

इत्युक्त्वा–(इति+उक्त्वा) – यह कहकर, **उपादाय** – (उप+आ+दा+ल्यप्) – लेकर, **द्विजातये**–ब्राह्मण को, **प्रादात्** –(दा+लुङ्+प्र.पु.ए.व.) दिये। **साधोः** – सज्जन के (ऊपर) **तुष्टः**-(तुष्+क्त) – सन्तुष्ट/प्रसन्न।

सरलानुवादः-

ऐसा कहकर ब्राह्मण ने वे (सारे) सत्तू लेकर अतिथि ब्राह्मण को दे दिए। (सत्तू लेकर) वह ब्राह्मण उस सज्जन महापुरुष (पर) से बहुत प्रसन्न हुआ।

अभ्यासप्रश्नाः-

प्रोक्तं श्लोकचतुष्टयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अतिथिं दृष्ट्वा ते कीदृशाः अभवन्?
   (ख) ते अतिथिं कुत्र प्रवेशयामासुः?
   (ग) सक्तवः कीदृशाः आसन्?
   (घ) सक्तून् गृहीत्वा अतिथिः किम् अकरोत्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) ब्राह्मणः अतिथेः सत्कारं कथमकरोत्?
   (ख) विप्रः (अतिथिः) कथं तुष्टोऽभवत्?
3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**
   (क) 'अतिथिम्' इत्यस्य किं विशेषणपदं श्लोके प्रयुक्तम्?
   (ख) 'ते प्रहृष्टमनसोऽभवन्' अत्र क्रियापदं किम्?

प्रीतात्मा स तु तं वाक्यमिदमाह द्विजर्षभम्।
वाग्मी तदा द्विजश्रेष्ठो धर्मः पुरुषविग्रहः॥13॥

अन्वयः-

सः तु द्विजश्रेष्ठः, पुरुषविग्रहः धर्मः वाग्मी, प्रीतात्मा तदा तं द्विजर्षभम् इदं वाक्यम् आह।

पदार्थाः-

पुरुषविग्रहः धर्मः-(पुरुषस्य विग्रहः इव विग्रहः यस्य, सः) - पुरुष का शरीर धारण करने वाला (साक्षात्) धर्म (रूपी), **प्रीतात्मा**-(प्रीतः आत्मा यस्य, सः) - प्रसन्न आत्मा वाला, **द्विजर्षभम्** - (द्विजः ऋषभ इव, तम्) - ब्राह्मण को, **आह** - (अह + लिट्, प्र.पु. ए.व.)- बोला।

सरलानुवादः-

वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ (अतिथि), (जो मानो) साक्षात् पुरुष का शरीर धारण किए हुए धर्म (के समान) था, (तथा) बोलने में निपुण था, प्रसन्नचित्त होकर उस ब्राह्मण श्रेष्ठ को (दान देने वाले ब्राह्मण को) यह वाक्य बोला।

शुद्धेन तव दानेन न्यायोपात्तेन यत्नतः।
यथाशक्ति विमुक्तेन प्रीतोऽस्मि द्विजसत्तम॥14॥

अन्वयः-

(हे) द्विजसत्तम! यत्नतः न्यायोपात्तेन, यथाशक्ति विमुक्तेन तव शुद्धेन दानेन (अहं) प्रीतः अस्मि।

पदार्थाः-

द्विजसत्तम = हे ब्राह्मणश्रेष्ठ, यत्नतः = प्रयत्नपूर्वक, न्यायोपात्तेन (न्याय+उपात्तेन) = न्यायपूर्वक (ईमानदारी या मेहनत से) कमाए हुए, विमुक्तेन = छोड़े गए या दिए गए, शुद्धेन = पवित्र, प्रीतः = प्रसन्न।

सरलानुवादः-

(अतिथि बोला कि) हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! बहुत परिश्रम से न्यायपूर्वक प्राप्त किए हुए (और) अपनी सामर्थ्य के अनुसार दिए गए तुम्हारे इस पवित्र दान से मैं प्रसन्न हूँ।

ब्रह्मचर्येण यज्ञेन दानेन तपसा तथा।
अगह्वरेण धर्मेण तस्माद्गच्छ दिवं द्विज!॥15॥

अन्वयः-

(हे) द्विज! ब्रह्मचर्येण, यज्ञेन, दानेन, तपसा तथा अगह्वरेण धर्मेण (त्वया यत् पुण्यम् अर्जितम्), तस्मात् दिवं गच्छ।

पदार्थाः-

अगह्वरेण धर्मेण (न गह्वरेण, श्रेष्ठेन इति भावः) – उत्तम धर्म से, **दिवम्** – स्वर्ग को।

सरलानुवादः-

हे ब्राह्मण! (तुमने जीवन भर) ब्रह्मचर्य से (संयम से); यज्ञ से, दान से, तपस्या से तथा श्रेष्ठ धर्म से (जो पुण्य अर्जित किया है); उसके कारण तुम (सीधे) स्वर्ग को प्राप्त करो।

विमर्शः-

ब्राह्मण ने सम्पूर्ण जीवन संयम, यज्ञ, दान, तप तथा धर्म में व्यतीत किया, उसी के परिणामस्वरूप उसे सीधे स्वर्ग प्राप्ति का वरदान अतिथि ने दिया।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अतिथिः किं विग्रहः कथितः?
   (ख) वाग्मी कः आसीत्?
   (ग) अतिथिः ब्राह्मणं कुत्र गमनाय आशीर्वादं यच्छति?

(घ) द्विजः केन प्रीतः आसीत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**

(क) अतिथिः ब्राह्मणस्य केन प्रीतः आसीत्?

(ख) त्रयोदशे पद्ये अतिथिब्राह्मणस्य कानि–कानि विशेषणानि प्रयुक्तानि?

3. **यथानिर्देशमुत्तरत–**

(क) 'संग्रहेण' इत्यस्य किं विलोमपदं श्लोके प्रयुक्तम्?

(ख) 'श्रेष्ठेन' इत्यर्थे पञ्चदशे श्लोके कि पदं प्रयुक्तम्?

तस्मिन् विप्रे गते स्वर्गं ससुते सस्नुषे तदा।
भार्याचतुर्थे धर्मज्ञे ततोऽहं निःसृतो बिलात्॥16॥

अन्वयः–

तदा धर्मज्ञे, भार्याचतुर्थे, ससुते, सस्नुषे तस्मिन् विप्रे स्वर्गं गते ततः अहं बिलात् निःसृतः।

पदार्थाः–

धर्मज्ञे– (धर्मं जानाति, तस्मिन्) – धर्म के ज्ञाता, **ससुते** – (सुतेन सह, तस्मिन्) – पुत्र के साथ, **सस्नुषे** – (स्नुषया सह, तस्मिन्) – पुत्रवधू के साथ, **भार्याचतुर्थे** – (भार्या चतुर्थी यस्य, तस्मिन्) – पत्नी है चौथी जिसके साथ, उसके, **निःसृतः** – निकला।

सरलानुवादः–

उसके बाद उस धर्मज्ञ ब्राह्मण के पुत्र, पुत्रवधू तथा चौथी (सदस्या) पत्नी के साथ स्वर्ग चले जाने पर (स्वर्गवासी होने पर) तत्पश्चात् मैं (नेवला) बिल से बाहर निकला।

ततस्तु सक्तुगन्धेन क्लेदेन सलिलस्य च।
दिव्यपुष्पावमर्दाच्च साधोर्दानलवैश्च तैः।
विप्रस्य तपसा तस्य शिरो मे काञ्चनीकृतम्॥17॥

अन्वयः–

ततः तु सक्तुगन्धेन, सलिलस्य च क्लेदेन, दिव्यपुष्पावमर्दात् च, साधोः तैः दानलवैः च तस्य विप्रस्य तपसा मे शिरः काञ्चनीकृतम्।

पदार्थाः–

क्लेदेन – गीलेपन से, **दिव्यपुष्पावमर्दात्** – (दिव्यानां पुष्पाणाम् अवमर्दात् स्पर्शात् इति भावः) दिव्य पुष्पों के स्पर्श से, **दानलवैः** – (दानस्य लवैः–कणैः) – दान दिए हुए कणों (सत्तू के कणों) से, **काञ्चनीकृतम्** – (अकाञ्चनं काञ्चनं कृतम् इति) – सोने का कर दिया।

सरलानुवादः–

इसके बाद सत्तुओं की गन्ध से, (दान के लिए छोड़े गए) जल के गीलेपन से, (पूजार्थ छोड़े गए) दिव्य पुष्पों

के स्पर्श से, और उस सज्जनपुरुष के दान में दिए हुए सत्तुओं के (छूटे हुए) कणों से मेरा शिर सोने का कर दिया गया अर्थात् हो गया।

ततो मयोक्तं तद्वाक्यं प्रहस्य द्विजसत्तमाः!॥
सक्तुप्रस्थेन यज्ञोऽयं सम्मितो नेति सर्वथा॥18॥

अन्वयः-

द्विजसत्तमाः! ततः मया प्रहस्य तद् वाक्यम् उक्तम् (यत्) अयं यज्ञः सर्वथा सक्तुप्रस्थेन सम्मितः न, इति।

पदार्थाः–

प्रहस्य – (प्र+हस्+ल्यप्) – हँसकर, **उक्तम** – (वच्+क्त) – कहा, **सर्वथा** – पूरी तरह/हर तरह से, **सम्मितः** – समान/तुल्य।

सरलानुवादः-

हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो! इसीलिए मैंने हँसकर यह वाक्य (बात) कहा कि यह यज्ञ (अश्वमेध) पूरी तरह से (उस गरीब ब्राह्मण के) सक्तुप्रस्थ यज्ञ के समान नहीं है।

विमर्शः-

अश्वमेध यज्ञ यद्यपि बहुत विशाल एवं कई दिनों तक चलने वाला होता है, किन्तु उस निर्धन ब्राह्मण द्वारा त्याग की पराकाष्ठास्वरूप सत्तुओं के दान रूपी यज्ञ के समक्ष इतना विशाल यज्ञ भी तुच्छ है, यही नेवले का आशय है।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) कः बिलात् निःसृतः?
   (ख) नकुलस्य किं काञ्चनीकृतम्?
   (ग) सक्तुप्रस्थेन सम्मितः कः यज्ञः नासीत्?
   (घ) नकुलः ब्राह्मणान् कथम् अवदत्?

2 **पूर्ववाक्येन उत्तरत-**
   (क) नकुलस्य शिरः कथं काञ्चनीभूतम्?
   (ख) नकुलः कदा बिलात् निःसृतः?

3. **यथानिर्देशम् उत्तरत-**
   (क) 'प्रविष्टः' इत्यस्य किं विलोमपदं षोडशे पद्ये प्रयुक्तम्?
   (ख) 'जलस्य' इत्यर्थे श्लोके किं पदं प्रयुक्तम्?
   (ग) 'शिरो मे काञ्चनीकृतम्' इत्यत्र 'मे' इति सर्वनाम कस्मै प्रयुक्तम्?

शिक्षणपरामर्शः-

(i) पाठ के अन्तर्गत आई हुई कथा का नाट्यरूपान्तर कराकर कक्षा में प्रस्तुत किया जा सकता है।

(ii) भारतीय परम्परा में 'अतिथि देवो भव' विषय पर एक कक्षा गोष्ठी या चर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

(iii) संस्कृत की भाषाशैली, छन्द, अलंकार तथा अन्य काव्य तत्त्वों का परिचय कराते हुए परिभाषा आदि का बोध-कराया जा सकता है।

अनुभव-विस्तारः-

(i) वर्तमान सन्दर्भ में आप अतिथि सेवा के परिप्रेक्ष्य में ब्राह्मण परिवार के त्याग को कहाँ तक उचित समझते हैं? क्या आज के संदर्भ में ऐसा त्याग संभव है? इस विषय पर छात्रों को अनुभव के आधार लिखने का निर्देश देना।

(ii) अतिथि सेवा के लिए सर्वोच्च त्याग की अन्य कहानियों जैसे- दयालु शिवि द्वारा कपोतरक्षा आदि का संकलन कराना।

सुक्तिसुधा

(तृतीयः पाठ)

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ चाणक्य द्वारा रचित 'चाणक्यनीति' तथा नारायण पण्डित की कृति 'हितोपदेश' से संकलित किया गया है। पाठ में आठ पद्य दिए गए हैं जिनमें से प्रथम पद्य में बताया गया है कि कैसे स्थान, निवास के लिए त्याज्य है, दूसरे पद्य में सच्चे मित्र की विशेषताएँ वर्णित हैं, तीसरे पद्य में गुणों की महिमा, चतुर्थ पद्य में सत्संगति का वैशिष्ट्य, पञ्चम पद्य में मनस्वी व्यक्ति की विशेषताएँ बताई गई हैं छठें पद्य में बुद्धिमान व्यक्ति के कर्तव्य कर्मों का वर्णन है, सातवें पद्य में पुरुष द्वारा त्याज्य छः दोषों का वर्णन है तथा आठवें पद्य में जीवलोक के सुखों का वर्णन है। ये नीतिपरक पद्य जीवन को सुसंस्कृत बनाने में निश्चित रूप से सर्वथा उपयोगी सिद्ध होंगे।

पाठोद्देश्यानि

1. श्लोक को आरोह-अवरोहपूर्वक गायन करना। पद्यों के गायन के माध्यम से श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास करना।
2. नीतिपरक श्लोकों के भावों द्वारा नैतिक मूल्यों का आधान एवं तदनुसार जीवन जीने की प्रेरणा देना।
3. पद्य में आए सामान्य संधिपरक पदों का ज्ञान।

मूलपाठः

यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।
च विद्यागमः कश्चिद् वासं तत्र न कारयेत्॥

अन्वयः -

यस्मिन् देशे न सम्मानः, न वृत्तिः, न च बान्धवाः, न च कश्चित् विद्यागमः (स्यात्) तत्र वासं न कारयेत्।

पदार्थः -

वृत्तिः (वृत् + क्तिन्) – आजीविका, **बान्धवाः** – बन्धुजन, **विद्यागमः** (विद्या + आगमः, विद्यायाः आगमः – षष्ठी तत्पुरुषः, आ + गम् + घञ्) – विद्या प्राप्ति, **कश्चिद्** – कोई, **कारयेत्** (कृ + णिच् + विधिलिङ्) – करना चाहिए।

सरलानुवादः -

जिस देश में न तो सम्मान हो, न वृत्ति अर्थात् जीविका का साधन हो, न ही सगे-सम्बन्धी हों और विद्या-प्राप्ति का साधन भी न हो वहाँ (किसी को) नहीं रहना चाहिए।

मूलपाठः

आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।
राजद्वारे श्मसाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः॥

अन्वयः -

यः (जनः) आतुरे व्यसने प्राप्ते, दुर्भिक्षे, शत्रुसंकटे, राजद्वारे, श्मशाने च यः तिष्ठति स (एव) बांधवः (इति उच्यते)।

पदार्थः -

आतुरे – रुग्णावस्था में, **व्यसने** – विपत्तिकाल में, **दुर्भिक्षे** – अकाल पड़ने पर, **शत्रुसंकटे** – शत्रु का संकट उपस्थित होने पर, **श्मशाने** – शवदाह स्थान पर / मरघट में, **तिष्ठति** – रहता है, साथ देता है, **बान्धवः** – सम्बन्धी।

सरलानुवादः -

रोग प्राप्त होने पर, आपत्काल में, अकाल पड़ने पर, शत्रु का संकट उपस्थित होने पर, तथा मृत्यु के समय शवयात्रा पर जो साथ देता है, वही (सच्चा) सम्बन्धी (मित्र) होता है।

मूलपाठः

कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सविद्यानां कोऽप्रियः प्रियवादिनाम्॥

अन्वयः -

समर्थानां कः अतिभारः (अस्ति), व्यवसायिनां किं दूरम् (अस्ति) सविद्यानां कः विदेशः (अस्ति), प्रियवादिनाम् कः अप्रियः (अस्ति)।

पदार्थाः -

समर्थानाम् – समर्थशाली (व्यक्तियों) को, **व्यवसायिनाम्** (व्यवसायः, स्वभावः अस्ति (व्यवसाय + इनि) अस्य इति) – व्यवसाय करने के स्वभाव वालों के लिए।

सरलानुवादः -

योग्य व्यक्तियों के लिए कोई भी भार नहीं है। व्यवसायी व्यक्तियों के लिए (कोई भी स्थान) दूर नहीं है। विद्वानों के लिए कोई (स्थान) विदेश नहीं है, मीठा बालने वालों के लिए कोई अप्रिय (शत्रु) नहीं है।

विमर्शः -

भाव यह है कि व्यक्ति अपनी योग्यताओं से सब कुछ संभव कर सकता है। योग्य व्यक्ति को कुछ भी भार अनुभव नहीं होता। व्यवसाय करने वाले के लिए कुछ भी दूर नहीं है। तथा प्रिय भाषी लोगों का कोई शत्रु नहीं हो सकता।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**

(क) अतिभारः केषां कृते न भवति?

(ख) अप्रियः केषां न भवति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

(क) देशे विदेशे सर्वत्र केषां गतिः भवति?

अथवा

केषां कृते कोऽपि विदेशः न भवति?

3. **यथानिर्देशम्**

(क) 'उद्योगिनाम्' इति पदस्य श्लोके किं समानपदं प्रयुक्तम्?

(ख) 'प्रियः' इति पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

मूलपाठः

काचः काञ्चनसंसर्गाद् धत्ते मारकतीं द्युतिम्।
तथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणताम्॥

अन्वयः -

काञ्चनसंसर्गात् काचः मारकतीं द्युतिं धत्ते तथा सत्सन्निधानेन मूर्खः प्रवीणताम् याति।

पदार्थः -

काञ्चनसंसर्गात् (काञ्चनस्य संसर्गः तस्मात्, षष्ठी तत्पुरुष) – स्वर्ण के संसर्ग से, **मारकतीम्** – चमकती हुए, **द्युतिम्** – शोभा को, **धत्ते** – प्राप्त करता है/धारण करता है। **सत्सन्निधानेन** (सताम् सन्निधानम् तेन, षष्ठी तत्पुरुष) – सज्जनों की संगति से, **प्रवीणताम्** – कुशलता को।

सरलानुवादः -

स्वर्ण के संसर्ग से कांच (भी) चमकती हुई शोभा को धारण कर लेता है उसी प्रकार सज्जनों की संगति से मूर्ख व्यक्ति भी कुशलता को प्राप्त कर लेता है।

विमर्शः -

भाव यह है कि स्वर्ण के संसर्ग से जैसे कांच चमकदार बन जाता है, यद्यपि कांच स्वयं भी चमकदार हो सकता है तथापि चमकती शोभा स्वर्ण के संसर्ग से प्राप्त हुई। उसी प्रकार सज्जनों के संगति के प्रभाव से मूर्ख व्यक्ति भी कुशल बन जाता है। पद्य में सत्संगति की महिमा वर्णित है।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**

(क) काञ्चनसंसर्गात् कायः कीदृशीं द्युतिं धत्ते?

(ख) सतां संगत्या कः कशलः भवति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

(क) मूर्खः कथं प्रवीणतां याति?

3. **यथानिर्देशम्**

(क) 'धत्ते' इति क्रियायाः कर्तृपदं किमस्ति?

(ख) 'आभा' इत्यस्य किं पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम्?

मूलपाठः

कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।
सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद् विशीर्येत वनेऽथवा॥

अन्वयः -

मनस्विनः कुसुमस्तबकस्य इव द्वयी वृत्तिः (भवति)। सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेद् अथवा वने विशीर्येत।

पदार्थः -

कुसुमस्तबकस्येव (कुसुमस्तबकस्य + इव) – फूलों के गुच्छे के समान, **मनस्विनः** – मनस्वी पुरुष की, **मूर्ध्नि** – सिर पर, **विशीर्येत्** (वि + शृ, विधिलिङ्) – नष्ट हो जाए।

सरलानुवाद -

मनस्वी पुरुष की फूलों के गुच्छे के समान दो ही गतियाँ होती है या तो (ये) सभी के सिर पर रहते हैं या वन में नष्ट हो जाते हैं।

विमर्शः -

भाव यह है कि मनस्वी पुरुष या तो श्रेष्ठता से रहते हैं या फिर नष्ट हो जाते हैं। ये पुष्प के गुच्छे के समान सर्वदा शोभित होकर रहना चाहते हैं, अन्यथा वन में जैसे फूल मुरझा कर बिखर हाते हैं, यही स्थिति इनकी भी होती है।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**

(क) मनस्विनः पुरुषाणां कति वृत्तिः भवति?

(ख) मनस्विनः कुत्र तिष्ठेत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

(क) कुसुमस्तबकस्य मनस्विनः च वृत्तिः कीदृशी भवति?

3. **यथानिर्देशम्**

(क) 'द्वयी वृत्तिः' इत्यत्र विशेष्यपद किमस्ति?

(ख) 'तिष्ठेत्' इति क्रियायाः कर्ता कः अस्ति?

मूलपाठः–

धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।
सनिमित्तं वरं त्यागो विनाशे नियते सति॥

अन्वयः -

प्राज्ञः धनानि जीवितं च परार्थे एव उत्सृजेत्। विनाशे नियते सति सन्निमित्तं त्यागः वरम् (भवति)।

पदार्थः -

जीवितम् – जीवन, चैव (च + एव) – और, **परार्थे** (पर + अर्थे) – दूसरों के लिए, **उत्सृजेम्** (उत् + सृज् + विधिलिङ्) – छोड़ देना चाहिए। **सन्निमित्तम्** (सत् + निमित्तम्) – श्रेष्ठ कारण के लिए।

सरलानुवादः -

बुद्धिमान् व्यक्ति को धन और जीवन को दूसरों के लिए त्याग देना चाहिए। जब (दोनों का) विनाश निश्चित है तो श्रेष्ठ कारण के लिए त्याग करना ही उचित है (श्रेयस्कर है)।

भाव यह है कि धन और जीवन तो नश्वर ही है। फिर यदि अच्छे कारण के लिए इनका त्याग करना पड़े तो यही श्रेष्ठ है।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**
   (क) परार्थे धनानि कः उत्सृजेत्?
   (ख) सन्निमित्तं किं वरं भवति?

   अथवा

   किं निमित्तं त्यागः वरं भवति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**
   (क) कदा सन्निमित्तं त्यागः वरं भवति?

3. **यथानिर्देशम्**
   (क) 'आत्मार्थे' इति पदस्य विपर्ययपदं किं प्रयुक्तम्?
   (ख) 'उत्सृजेत्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

मूलपाठः–

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता॥

अन्वयः -

इह भूतिमिच्छता पुरुषेण निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधं आलस्यं दीर्घसूत्रता (च एते) षड्दोषाः हातव्या।

पदार्थः -

भूतिमिच्छता (भू + क्तिन्, भूतिम् इच्छता कर्तरि क्त) – कल्याण चाहने वाले (के द्वारा), **तन्द्रा** – थकान, **दीर्घसूत्रता** – किसी कार्य को करने में देरी करना / लम्बे समय तक खींचना, **हातव्या** (हा + तव्यत्) – छोड़ देना चाहिए।

सरलानुवादः -

इस संसार में कल्याण चाहने वाले पुरुष को, निद्रा, थकान, भय, क्रोध, आलस्य तथा कार्य को लम्बे समय तक खींचना, ये छः दोष छोड़ देने चाहिए।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**
   (क) कति दोषाः हातव्याः?
   (ख) दोषाः केन हातव्याः?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**
   (क) षड्दोषाः के सन्ति?
3. **यथानिर्देशम्**
   (क) 'भूतिमिच्छता पुरुषेण' अत्र विशेष्यपदं किमस्ति?
   (ख) 'त्याज्या' इत्यर्थे कः पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

मूलपाठः

अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥

अन्वयः -

राजन्! अर्थागमो, नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च वश्यः च पुत्रः अर्थकरी च विद्या (एते) जीवलोकस्य षड्सुखानि (सन्ति)।

पदार्थः -

अर्थागमः (अर्थस्य आगमः) – धन की प्राप्ति, **अरोगिता** (न रोगिता) – स्वास्थ्य, **अर्थकरी** (अर्थं करोति इति च सा) – धन उत्पन्न करने वाली।

सरलानुवादः -

हे राजन्! धन की प्राप्ति, सदा स्वस्थ रहना, प्रियदर्शिनी तथा मधुरता से बोलने वाली पत्नी तथा वश में रहने वाला पुत्र तथा धन उत्पन्न करने वाली विद्या ये संसार के छः (प्रकार के) सुख (बनाए गए हैं)।
भाव यह है कि यदि व्यक्ति के पास ये छः सुख हैं तो वह संसार में सबसे सुखी व्यक्ति हैं।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**

    (क) का प्रियवादिनी स्यात्?

    (ख) विद्या कीदृशी भवेत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

    (क) कानि जीवलोकस्य सुखानि सन्ति?

3. **यथानिर्देशम्**

    (क) 'अर्थकरी विद्या' इत्यत्र विशेष्यपदं किमस्ति?

    (ख) 'अरोगिता' इत्यस्य विपर्ययपदं लिखत।

अनुभवविस्तारः

हितोपदेश व चाणक्यनीति से उद्धृत श्लोकों के माध्यम से विभिन्न परिस्थितियों में आदर्श जीवन कैसा होना चाहिए, क्या त्याज्य है तथा क्या ग्राह्य है, सत्संगति का व्यक्ति पर क्या प्रभाव होता है, यह ज्ञात होता है। आज के समय में जहाँ व्यक्ति स्वार्थपरता से प्रभावित है, वहीं इस पाठ की प्रासङ्गिकता 'जीवन मूल्यों' को बनाए रखने में है।

इस पाठ के पठन हेतु गायन विधि का उपयोग किया जाना चाहिए। श्लोकों के भाव पर सामूहिक चर्चा की जा सकती है तथा जीवन में इनके उपयोग पर चर्चा व लेखन किया जा सकता है।

ऋतुचर्या

(चतुर्थः पाठ)

पाठ परिचयः-

यह पाठ महर्षि अग्निवेश द्वारा मूलरूप से लिखित तथा महर्षि चरक द्वारा प्रतिसंस्कृत चरक संहिता नामक आयुर्वेद ग्रंथ के छठे अध्याय से संकलित है। इसमें विभिन्न ऋतुओं में आहार-विहार से संबंधित नियम बताए गए हैं। किस ऋतु में कैसा खान-पान उचित है, इसका ज्ञान स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है। वर्तमान में प्रदूषित वातावरण तथा अति व्यस्त दिनचर्या में इस पाठ की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है।

पाठोद्देश्यानि-

- ऋतुओं के अनुसार खान-पान तथा व्यवहार का परिचय कराना।
- श्रवण व पठन कौशल का समुचित विकास करना।
- स्वर व विसर्ग संधि का अभ्यास कराना।
- वर्तमान में आयुर्वेद की प्रासंगिकता का परिचय कराना।
- आदर्श भोजन व व्यवहार की अवधारणा को स्पष्ट करना।

मूलपाठः-

गोरसानिक्षुविकृतीर्वसां तैलं नवौदनम्।
हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णं चायुर्न हीयते।।

अन्वयः-

हेमन्ते गोरसान् इक्षुविकृतीः वसां तैलं नवौदनम् उष्णं तोयं च अभ्यस्यतः (जनस्य) आयुः न हीयते।

पदार्थाः-

गोरसान् – दूध से बने हुए पदार्थों को, **इक्षुविकृतीः** – गन्ने के रस से बने गुड़, शक्कर, चीनी आदि पदार्थों को, **वसाम्** – तेल या घी को, **नवौदनम्** (नवम् ओदनम् – कर्मधारय) – नये चावल को, **हेमन्ते** – हेमन्त ऋतु में, **अभ्यस्यतः** – (अभि + अस् + शतृ, षष्ठी वि. एक.) - सेवन करने वाले की, **न हीयते** –(हा + लट्) – कम नहीं होती।

सरलानुवादः-

हेमन्त ऋतु में दूध से बने हुए पदार्थों, गन्ने के रस से बने गुड़, शक्कर, चीनी आदि, घी, तेल, नए चावल व गर्म पानी का सेवन करने वाले व्यक्ति की आयु कम नहीं होती।

विमर्शः-

- भाव यह है कि हेमन्त ऋतु में उपर्युक्त पदार्थों का सेवन करने वाला व्यक्ति स्वस्थ एवं चिरंजीवी होता है।

- प्रस्तुत अध्याय के सभी श्लोकों में अनुष्टुप् छन्द है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अत्र कस्य ऋतोः ऋतुचर्या वर्णिता?
   (ख) कीदृशं तोयं हेमन्ते पातव्यम्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) हेमन्ते किं किम् अभ्यस्यतः आयुः न हीयते?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत।**
   (क) 'जलम्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
   (ख) 'उष्णम्' इति विशेषणपदस्य किं विशेष्यमत्र?

2. मूलपाठः-

वर्जयेदन्नपानानि वातलानि लघूनि च।
प्रवातं प्रमिताहारमुदमन्थं हिमागमे॥

अन्वयः-

हिमागमे वातलानि लघूनि च अन्नपानानि, प्रमिताहारम् उदमन्थं प्रवातं (च) वर्जयेत्।

पदार्थाः-

हिमागमे – हेमन्त ऋतु के आने पर, **वातलानि** (वातं लान्ति यानि तानि) – वायु को बढ़ाने वाले, **लघूनि** – हल्के, **प्रवातम्** – ताजी हवा, **प्रमिताहारम्** – अल्प आहार को, **उदमन्थम्** – जौ से बने पेय पदार्थों को।

सरलानुवादः-

हेमन्त ऋतु के आने पर वायु को बढ़ाने वाले व हल्के खाद्य-पेय पदार्थ, अल्प मात्रा में भोजन, जौ से बने पेय पदार्थ व ताज़ी हवा के सेवन को छोड़ देना चाहिए।

विमर्शः-

- भाव यह है कि हेमन्त ऋतु में गरिष्ठ पदार्थों का सेवन हितकारी होता है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) प्रमिताहारं कदा वर्जयेत्?
   (ख) कानि लघूनि वर्जयेत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) हिमागमे किं किं वर्जयेत्?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

(क) 'वायुवर्धकानि' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(ख) 'लघूनि' इति विशेषणपदस्य किं विशेष्यमत्र प्रयुक्तम्?

3. मूलपाठः-

शिशिरः-

हेमन्तशिशिरौ तुल्यौ शिशिरेऽल्पं विशेषणम्।
रौक्ष्यमादानजं शीतं मेघमारुतवर्षजम्।।3।।

तस्माद्धैमन्तिकः सर्वः शिशिरे विधिरिष्यते।
निवातमुष्णं त्वधिकं शिशिरे गृहमाश्रयेत्।।4।।

कटुतिक्तकषायाणि वातलानि लघूनि च।
वर्जयेदन्नपानानि शिशिरे शीतलानि च।।5।।

अन्वयः-

हेमन्तशिशिरौ तुल्यौ (भवतः)। शिशिरे आदानजं रौक्ष्यं शीतं मेघमारुतवर्षजं (च शीतम्) अल्पं विशेषणं (भवति)।

तस्मात् शिशिरे हैमन्तिकः सर्वः विधिः इष्यते। शिशिरे तु निवातम् अधिकम् उष्णं गृहम् आश्रयेत्।

शिशिरे कटुतिक्तकषायाणि वातलानि लघूनि च शीतलानि च अन्नपानानि वर्जयेत्।

पदार्थाः-

तुल्यौ – समान, **आदानजम्** – आदान काल होने से उत्पन्न होने वाला, **रौक्ष्यम्** – रूखा, **निवातम्** – वायुरहित, **शीतलानि** - ठण्डे

सरलानुवादः-

हेमन्त व शिशिर ऋतु प्रायः समान ही होती हैं। शिशिर ऋतु में आदान काल होने से उत्पन्न होने वाली रूखी ठण्डी हवा और बादल, हवा व वर्षा से उत्पन्न होने वाली ठण्ड थोड़ी विशेष होती है।

इसलिए शिशिर ऋतु में हेमन्त ऋतु से संबंधित संपूर्ण विधि अपनायी जाती है। शिशिर में तो वायुरहित व अधिक गर्म घर में आश्रय लेना चाहिए।

शिशिर ऋतु में कड़वे, तीखे व कसैले तथा शरीर में वायु को कुपित करने वाले, हल्के एवं शीतल खाद्य व पेय पदार्थों के सेवन का त्याग करना चाहिए।

विमर्शः-

- भाव यह है कि शिशिर ऋतु में हेमन्त की अपेक्षा अधिक ठण्ड होती है।

- जब भगवान सूर्य उत्तरायण होते हैं, तब आदान काल होता है। इससे शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म तीन ऋतुएं बनती हैं। आदान काल में अग्नितत्त्व की प्रधानता से वायु बहुत रूक्ष (रूखी) होती है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) शिशिरे कीदृशः विधिः इष्यते?
   (ख) कौ तुल्यौ भवतः?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) शिशिरे हेमन्तात् किम् अल्पं विशेषणं भवति?
   (ख) शिशिरे कीदृशानि अन्नपानानि वर्जयेत्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'आश्रयेत्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
   (ख) 'त्यजेत्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
   (ग) 'शीतलानि' इति पदस्य किं विशेष्यमत्र?

4. मूलपाठः-

वसन्तः-

वसन्ते निचितः श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः।
कायाग्निं बाधते रोगांस्ततः प्रकुरुते बहून् ॥6॥

तस्माद्वसन्ते कर्माणि वमनादीनि कारयेत्।
गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत्॥7॥

अन्वयः-

(हेमन्ते) निचितः श्लेष्मा वसन्ते दिनकृद्भाभिः ईरितः (सन्)
कायाग्निं बाधते, ततः बहून् रोगान् च प्रकुरुते।
तस्मात् (कफनिष्कासनाय) वसन्ते वमनादीनि कर्माणि कारयेत्।
गुरु-अम्ल-स्निग्ध-मधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत्।

पदार्थाः-

निचितः – संचित हुआ / बढ़ा हुआ, श्लेष्मा – कफ, **दिनकृद्भाभिः** (दिनं करोति इति दिनकृत, तस्य भा दीप्तिः, ताभिः) – सूर्य की किरणों से, **ईरितः** – प्रेरित हुआ / पिघला हुआ, **कायाग्निम्** – (कायायाः शरीरस्य वा अग्निम्) शरीर की अग्नि को, **वमनादीनि** – वमन (उल्टी), शिरोविरेचन आदि क्रियाएं, **दिवास्वप्नम्** – दिन में शयन करना।

सरलानुवादः-

हेमन्त काल में संचित हुआ कफ वसन्त काल में सूर्य की किरणों के ताप से पिघलकर शरीर की अग्नि को बाधित करता है और तब अनेक रोगों को उत्पन्न करता है।

इसलिए (कफ को निकालने के लिए) वसन्त ऋतु में वमन (उल्टी) व शिरोविरेचन आदि क्रियाएं करवायी जाएं एवं भारी, खट्टे, तैलीय तथा मीठे पदार्थों को व दिन के समय शयन को छोड़ देना चाहिए।

विमर्शः-

हेमन्त व शिशिर ऋतु में एकत्रित हुआ कफ वसंत में शरीर की अग्नि (भूख आदि को) बाधित करके अनेक रोगों को पैदा करता है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) श्लेष्मा कां बाधते?
   (ख) वमनादीनि कर्माणि कदा कारयेत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) निचितः श्लेष्मा वसन्ते रोगान् कथं प्रकुरुते?
   (ख) वसन्ते किं किं वर्जयेत्?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'प्रेरितः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
   (ख) 'अनेकान्' इत्यस्य किं पर्यायमत्र?
   (ग) 'वमनादीनि कर्माणि' अत्र विशेषण - विशेष्यं पृथक्कुरुत।

मूलपाठः-

मयूखैर्जगतः स्नेहं ग्रीष्मे पेपीयते रविः।
स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नपानं तदा हितम्॥8॥

घृतं पयः सशाल्यन्नं भजन् ग्रीष्मे न सीदति।
लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामं च विवर्जयेत्॥19॥

अन्वयः-

ग्रीष्मे रविः मयूखैः जगतः स्नेहं पेपीयते।
तदा स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धम् अन्नपानं (च) हितं (भवति)।
ग्रीष्मे घृतं पयः सशाल्यन्नं भजन् (जनः) न सीदति।
(तदा) लवण-अम्ल-कटु-उष्णानि (खाद्यपेयानि) व्यायामं च विवर्जयेत्।

पदार्थाः-

मयूखैः – किरणों से, स्नेहं - तरलता को, **पेपीयते** – (पा + यङ्+लट् लकार) अत्यधिक पीता है। बार-बार सोखता है, **सशाल्यन्नम्** – धानसहित अन्न, **न सीदति** - दुःखी नहीं होता है।

सरलानुवादः-

ग्रीष्म ऋतु में सूर्य अपनी किरणों के द्वारा संसार की तरलता को अत्यधिक सोखता है, इसलिए उस समय स्वादिष्ट व ठण्डा द्रव पदार्थ व चिकनाईयुक्त खान-पान हितकर होता है।

ग्रीष्म काल में घी, दूध व चावल सहित अन्न ग्रहण करने वाला मनुष्य दुःखी नहीं होता है। ग्रीष्म काल में नमकीन, खट्टे, कड़वे व गर्म खान-पान तथा व्यायाम को छोड़ देना चाहिए।

विमर्शः-

- भाव यह है कि ग्रीष्म काल में ठण्डे द्रव पदार्थ तथा चिकनाई युक्त पदार्थ ग्रहण करने चाहिए।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) जगतः स्नेहं कः पेपीयते?
   (ख) ग्रीष्मे किं भजन् जनः न सीदति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) ग्रीष्मे किं हितकरं भवति?
   (ख) ग्रीष्मकाले किं किं विवर्जयेत्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'अहितकरम्' इत्यस्य किं विपर्ययं प्रयुक्तमत्र?
   (ख) 'पेपीयते' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
   (ग) 'किरणैः' इतिपदस्य किं पर्यायमत्र?

मूलपाठः-

वर्षा

भूवाष्पान्मेघनिस्यन्दात् पाकादम्लाज्जलस्य च।
वर्षास्वग्निबले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः॥10॥

व्यक्ताम्ललवणस्नेहं वातवर्षाकुलेऽहनि।
विशेषशीते भोक्तव्यं वर्षास्वनिलशान्तये॥11॥

अन्वयः-

वर्षासु मेघनिस्यन्दात् भूवाष्पात् जलस्य अम्लात्
पाकात् अग्निबले क्षीणे च पवनादयः कुप्यन्ति।

वर्षासु वातवर्षाकुले विशेषशीते अहनि
अनिलशान्तये व्यक्त-अम्ललवणस्नेहं भोक्तव्यम्।

पदार्थाः-

मेघनिस्यन्दात् – बादलों के बरसने से, **वातवर्षाकुले** – (वातेन वर्षया च आकुले) वायु एवं वर्षा से व्याकुल, अहनि – (अह्न शब्द, सप्तमी एक.) दिन में, पवनादयः – वात-पित्त व कफ आदि, व्यक्ताम्ललवणस्नेहम् (व्यक्तम् अम्लं लवणं स्नेहं च यस्मिन् तत्) जिस अन्न में स्पष्ट रूप से अम्ल, लवण व घी हो, भोक्तव्यम् – (भुज् + तव्यत्) खाना चाहिए।

सरलानुवादः-

वर्षा काल में बादलों के बरसने से, भूमि में से गर्म भाप के निकलने से, जल के अम्लपाक होने से और शारीरिक अग्निबल के क्षीण होने से वात-पित व कफ तीनों कुपित हो जाते हैं।

वर्षा काल में अत्यधिक वायु एवं वर्षा से व्याकुल तथा विशेष रूप से ठण्डे दिन शारीरिक वायु की शांति के लिए जिस अन्न में स्पष्ट रूप से अम्ल, लवण व घी हो, वह खाना चाहिए।

विमर्शः-

- वर्षा ऋतु से विसर्गकाल का आरंभ हो जाता है। सूर्य के दक्षिणायन रहने का समय ही विसर्ग काल कहलाता है। इससे वर्षा, शरद् व हेमन्त ये तीन ऋतुएं बनती हैं। वर्षा ऋतु में अग्निबल अत्यधिक क्षीण होने से वात, पित्त व कफ कुपित हो जाते हैं।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) पवनादयः कदा कुप्यन्ति?
   (ख) अनिलशान्तये किं भोक्तव्यम्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) पवनादयः कस्मात् कुप्यन्ति?
   (ख) कीदृशे अहनि व्यक्ताम्ललवणस्नेहं भोक्तव्यम्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'जलदः' इति पदस्य किं पर्यायमत्र प्रयुक्तम्?
   (ख) 'क्षीणे' इति विशेषणस्य किं विशेष्यमत्र?
   (ग) 'दिने' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

मूलपाठः-

शरद्

वर्षाशीतोचिताङ्गानां सहसैवार्करश्मिभिः।
तप्तानामाचितं पित्तं प्रायः शरदि कुप्यति।।2।।

तथान्नपानं मधुरं लघु शीतं सतिक्तकम्।
पित्तप्रशमनं सेव्यं मात्रया सुप्रकाङ्क्षितैः॥13॥

शारदानि च माल्यानि वासांसि विमलानि च।
शरत्काले प्रशस्यन्ते प्रदोषे चेन्दुरश्मय॥14॥

अन्वयः-

शरदि सहसा एव अर्करश्मिभिः तप्तानां वर्षाशीतोचित - अंगानाम् आचितं पित्तं प्रायः कुप्यति।
(अतः) सुप्रकांक्षितैः (जनैः) मधुरं लघु शीतं सतिक्तकम् पित्तप्रशमनं तथान्नपानं मात्रया सेव्यम्।
शरत्काले प्रदोषे च इन्दुरश्मयः, शारदानि च माल्यानि, विमलानि च वासांसि प्रशस्यन्ते।

पदार्थाः-

शरदि – शरत्काल में, **आचितम्** – संचित / इकठ्ठा हुआ, **सुप्रकांक्षितैः** – अपना कल्याण चाहने वालों के द्वारा, **पित्तप्रशमनम्** – पित्त को शांत करने वाला, **प्रदोषे** – रात्रि के प्रथम प्रहर में, **इन्दुरश्मयः** – (इन्दोः रश्मयः) चँद्रमा की किरणें, **वासांसि** – वस्त्र, **प्रशस्यन्ते** – (प्र + शंस् + लट् लकार) प्रशंसनीय होते हैं।

सरलानुवादः-

शरद् काल में सूर्य की किरणों से तपे हुए, वर्षा व शीत के अनुकूल हुए अंगों का संचित पित्त प्रायः अचानक ही कुपित हो जाता है।

इसलिए अपना कल्याण चाहने वाले लोगों के द्वारा इस समय मीठा, हल्का, ठंडा, तीखा व पित्त को शांत करने वाला खान-पान उचित मात्रा में सेवन किया जाना चाहिए।

शरद् काल में रात्रि के प्रथम प्रहर में चंद्रमा की शीतल किरणों का सेवन करना एवं शरत्कालीन मालाएं तथा स्वच्छ वस्त्रों को धारण करना प्रशंसनीय है।

विमर्शः-

- शरत्काल में पित्त की शांति के लिए मीठा, ठंडा व तीखा भोजन ग्रहण करना चाहिए।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अत्र कस्य ऋतोः दिनचर्या वर्णिता?
   (ख) इन्दुरश्मयः कदा प्रशस्यन्ते?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) पित्तशमनाय किं सेव्यम्?
   (ख) शरत्काले किं किं प्रशस्यते?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'माल्यानि' इति पदस्य किं विशेषणमत्र?
   (ख) 'कुप्यति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ग) 'सूर्यः' इत्यर्थे किं पर्यायमत्र प्रयुक्तम्?

परामर्शः-

- पाठ पर आधारित ऋतुचर्या से संबंधित एक चार्ट बनवाकर कक्षा में लगवाया जा सकता है।
- सभी ऋतुएं कौन-कौन से महीने से संबंधित हैं, इस पर चर्चा करके एक तालिका बनवायी जा सकती है।
- क्या आप महर्षि चरक द्वारा बताए गए भोजन संबंधी नियमों का वर्तमान में पालन कर सकते हैं? यदि हाँ, तो कैसे, यदि नहीं, तो क्यों?

अनुभवविस्तारः-

स्वास्थ्य ही जीवन का मूल है क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति ही अपने समस्त कर्तव्यों को भली-भांति निभा सकता है। शास्त्रों में भी कहा गया है कि - 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'। व्यक्ति का स्वस्थ रहना मुख्य रूप से भोजन पर ही निर्भर करता है, लेकिन हर ऋतु में समान भोजन व व्यवहार भी हितकर नहीं है। इसलिए ऋतु के अनुसार खान-पान व व्यवहार का ज्ञान व उसका पालन करना, अतीव आवश्यक है। यह आयुर्वेद की विशेषता है कि यहाँ रोगी के रोग का निदान तो वर्णित है ही, साथ ही स्वस्थ व्यक्ति कैसे स्वस्थ बना रहे, इसका भी पर्याप्त विवेचन है।

वीर सर्वदमनः

(पंचमः पाठ)

पाठपरिचयः–

''काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शाकुन्तला''

काव्यों में नाटक को सबसे रमणीय माना गया है और उन नाटकों में भी ''अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' नाटक सर्वोत्तम है, ऐसा विद्वानों का अभिमत है। महाकविकालिदासविरचित ''अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' नाटक के सप्तम अंक से संग्रहीत यह पाठ दुष्यन्त और शाकुन्तला के पुत्र सर्वदमन, जो बाद में भरत के नाम से प्रसिद्ध हुआ, की बाल्यकाल से ही वीरता और निर्भयता को खूबसूरती से अभिव्यक्त करता है। इस अंश्ठा में सर्वदमन के जन्म के पूर्व ही शापवश अलग हुए दुष्यंत और शाकुन्तला के पुनर्गिलिन को भी दर्शाया गया है।

उद्देश्यानि–

1. महाकवि कालिदास के अप्रतिम नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् की भाज़ा और शौली की संक्षेप में झांकी दिखाना।
2. शाकुन्तला के पुत्र सर्वदमन की वीरता और निर्भीकता का परिचय देना।
3. आश्रमों में रहने वाले सभी जीवों के प्रति दयाभाव दिखलाकर सभी प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता जगाना।
4. चक्रवर्त राजा दुष्यन्त के हृदय के गोपन ममत्व का परिचय देना।

मूलपाठः–

दुष्यन्तः–(निमित्तं सूचयित्वा)
''मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा
पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखाय परिवर्तते''
(नेपथ्ये)
मा खलु चापलं कुरु। कथं गत एवात्मनः प्रकृतिम्?
दुष्यन्तः–(कर्णं दत्वा)
अभूमिरियमविनयस्य। को नु खल्वेज़ निषिध्यते?(शब्दानुसारेण अवलोक्य सविस्मयम)अये, को नु खल्वयम् अनुबध्यमानस्तपस्विनीभ्याम् अबालसत्त्वो बालः?
अर्धापीतस्तनं मातुरामर्दक्लिज़्टकेसरम्
प्रक्रीडितुं सिंहशिशुं बलात्कारेण कर्ज़ति।।

अन्वयः–

श्लोक 1– हे! बाहो! वृथा किं स्पन्दसे, मनोरथाय न आशंसे, पूर्वम् अवधीरितं श्रेयः दुःखाय परिवर्तते।

श्लोक 2 मातुः अर्धपीतस्तनं आमर्दक्लिष्टकेसरं सिंहशिशु प्रक्रीडितुं बलात्कारेण कर्ज़ति।

पदार्थाः-

निमित्तम्	-	नि+मिद्+क्त-शुभशकुन, संकेत, चिह्न।
सूचयित्वा	-	सूच्+क्त्वा-सूचितकर।
नाशंसे	-	न+आशंसे, आशा नहीं करता (संभावना नहीं है)
पूर्वावधीरितम्	-	पूर्व+अवधीरितम्,पूर्वम् अवधीरितम्
अवधीरणम्	-	अव+धीर्+ल्युट-अनादरपूर्वक बर्ताव करना
श्रेयः	-	कल्याण, सौभाग्य, आशीर्वाद।
स्पन्दसे	-	स्पन्दितो भवसि--स्पन्दित होते हो,फड़कते हो। स्पन्द, लट् म.पु.ए.व.
प्रकृतिम्	-	प्र+कृ+क्तिन्-द्वि. ए. व.-मूल स्वभाव को।
अभूमिरियमविनयस्य	-	अभूमिः+इयम्+अविनयस्य।
खल्वेज़ः	-	खलु+एज़ः।
निषिध्यतें	-	नि+षिध्, कर्मवाच्य में लट् लकार, प्र. पु. ए. व. निषेध् किया जाता है/मना किया जाता है/रोका जाता है।
शब्दानुसारेणावलोक्य	-	शब्द+अनुसारेण+अवलोक्य-शब्द के अनुसार देखकर।
अवलोक्य	-	अव+लोकृ+ल्यप्-देखकर।
सविस्मयम्	-	विस्मयेन सहितम्-आश्चर्य के साथ
खल्वयम्	-	खलु+अयम्।
अनुबध्यमानः	-	अनु+बध्+शानच्-रोका जाता हुआ।
अबालसत्त्वः	-	बालस्य सत्त्वम् इव सत्त्वं यस्य सः बालसत्त्वः-न बालसत्त्वः इति अबालसत्त्वः।
सत्त्वम्		- सत्+त्व, सतोभावः, होने का भाव, प्राण, बल, साहस, सामर्थ्य, प्रताप।
अर्धपीतस्तनम्	-	पीतम् अर्धा स्तनं येन, तम् (बहु. ब्री.) जिसने आधा दूध पिया है।
आमर्दक्लिष्टकेसरम्	-	आमर्द क्लिष्टं केसरं यस्य, तम्।
आमर्दः	-	आ+मृद्+धञ्-मसलना, कुचलना।
केसरः/केसरम्	-	के+सृ+अच्-रेशा, बाल।
केसरिन्	-	केसर+इनि-सिंह।
क्लिष्ट	-	क्लिश्+क्त-सताया हुआ।
प्रक्रीडितुम्	-	प्र+क्रीड्+तुमुन्-खेलने के लिए।
सिंहशिशुम्	-	सिंहस्य शिशुम् शोर के बच्चे को, ष. तत्पु.
बलात्कारेण	-	जर्बदस्ती बल लगाकर।
कर्षति	-	खींचता है।

अनुवादः-

दुष्यन्तः-(शुभ शकुन की सूचना पाकर) हे मेरी बॉह! मैं मनोरथ पूरा होने की आशा नहीं करता क्योंकि पहले ठुकराया गया सौभाग्य दुःख में ही बदल जाता है, इसलिए तुम क्यों व्यर्थ फड़क रही हो?

(नेपथ्य में)

चपलता मत करो। यह अपने मूल स्वभाव पर कैसे पहुँच गया?

दुष्यन्त (कान लगाकर)– यह तो अविनय (अशिष्ट आचरण) की जगह नहीं है, फिर किसे अविनीत आचरण करने से मना किया जा रहा है? (आवाज की तरफ देखकर आश्चर्य के साथ)–अरे यह दो तपस्विनियों के द्वारा रोका जाता हुआ यह कौन बालक (बच्चा) है जो बच्चे की सामर्थ्य से अधिक सामर्थ्यवान है?

जो माँ का आधा दूध पिए हुए तथा कुचले हुए बिखरे बालों बाले शेर के बच्चे को बलपूर्वक खेलने के लिए अपनी ओर खींच रहा है।

अभ्यास प्रश्ना:-

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) पूर्वावधीरितं किं दु:खाय परिवर्तते?

(ख) इयं कस्य अभूमि:?

(ग) वृथा क: स्पन्दते?

(घ बाल: किमर्थ सिंहशिशु कर्षति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) अबालसत्त्व: बाल: काभ्यां निषिधयते?

(ख) बाल: कीदशं सिंहशिशु कर्ज़ति?

3. यथा निर्देशम् उत्तरत-

(क) ''पूर्वावधीरितं श्रेय:'' इत्यनयो: किं विशाषणपदम्?

(ख) ''को नु ------निषिध्यते'' इत्यस्मिन् वाक्ये 'क:' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ग) ''विनयस्य'' इति पदस्य विलोमपदं किं प्रयुक्तम्?

(घ) ''स्वभाव:'' इति पदस्य समानार्थकपदं किम्?

मूल पाठ:-

बाल: - जृम्भस्व सिंह! दन्तास्ते गणयिष्ये।

प्रथमा - अविनीत! किं नोऽपत्यनिर्विशेषेणि सत्त्वानि विप्रकरोज़ि? हन्त! वर्धते ते संरम्भ:। स्थाने खलु षिषनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि।

दुष्यन्त: - किं न खलु बालेखस्मिन् औरस इव पुत्रे स्निह्यति मे मन:? नूनमनपत्यता मां वत्सलयति।

द्वितीया - एष खलु केसरिणी त्वां लघयिष्यति यद्यस्या: पुत्रकं न मुञ्चसि।

बाल: - (सस्मितम्) अहो बलीय: खलु भीतोऽस्मि (इत्यधरं दर्शयति)।

प्रथमा - वत्स! एनं बालमृगेन्द्रं मुञ्च, अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि।

बाल: - कुत्र, देहि तत् (इति हस्तं प्रसारयति)

द्वितीया - सुव्रते! न शक्य एष वाचामात्रेण विरमयितुम्। गच्छ त्वम्। मदीये उटजे मृत्तिकामयूरस्तिष्ठति। तमस्योपहर।

पदार्थाः-

जृम्भस्व	–	जंभाई लो–जृम्भ्, लोट्लकार–म.पु.ए.व.
नोऽपत्यनिर्विशषाणि	–	नः+अपत्यनिर्विशेषाणि।
नः	–	अस्माकम्–हमारा।
अपत्यैः निर्विशषाणि	–	सन्तान जैसे।
सत्वानि-प्राणिनः	–	प्राणियों को।
विप्रकरोषि	–	उद्वेगं जनयसि –तंग करते हो।
हन्त	–	हाय
संरम्भः	–	क्रोधः, अविनयः–शरारत, बदतमीजी।
सर्वदमन	–	सर्व दमयति इति– जो सब को दबाए।
कृतनामधेयः	–	कृतं नामधेयं यस्य सः– जिसका नामकरण किया गया है।
कृतनामधेयोऽसि	–	कृतनामधेयः+असि।
बालेऽस्मिन्	–	बाले + अस्मिन्।
औरसः	–	उरसा र्निमतः सः, अपना, निजी।
अनपत्यता	–	न अपत्यता–सन्तानहीनता।
वत्सलयति	–	वात्सल्य से भर रहा है।
केसरिणी	–	शेरनी।
लङ्र्धयष्यति	–	आक्रमण करेगी/झपटा मारेगी।
भीतोऽस्मि	–	भीतः+अस्मि।
भीतः	–	भी+क्त, डरा हुआ।
इत्यधरम्	–	इति+अधरम् (ओष्ठ)।
बालमृगेन्द्रम्	–	बालः मृगेन्द्रः तम् (कर्मधारय)
मुञ्च	–	त्यज–छोड़ो।
प्रसारयति	–	प्र+सृ+णिच् लट्लकार प्र.पु.ए.व.
मदीये	–	मेरे।
उटजे	–	उटेभ्यो जायते उटजम्/उटजः तस्मिन्–कुटिया।
उटम्	–	पत्ता/घास।
मृत्तिकामयूरः	–	मृत्तिकायाः मयूरः–मिट्टी का मयूर।

अनुवादः-

बालक	–	ओ शेर। जम्हाई लो। मैं तुम्हारे दांत गिनूंगा।
पहली तपस्विनी	–	अशिष्ट! तुम हमारे पुत्र की भाँति पाले गए जीवों को क्यों तंग कर रहे हो? हाय! तुम्हारा अविनय (बदतमीजी) बढ़ता जा रहा है। ऋषियों ने तुम्हारा नाम सर्वदमन ठीक ही रखा है।
दुष्यन्त	–	इस बालक के प्रति मेरा मन औरस पुत्र (अपना स्वयं का पुत्र) की भाँति क्यों स्नेह से भर रहा है? निश्चय ही मेरी सन्तानहीनता मुझे वात्सल्य–भाव से भर रही है।

दूसरी तपस्विनी - यह सिंहनी (शेरनी) तुम पर आक्रमण कर देगी यदि तुम इसके पुत्र को नहीं छोड़ते।

बालक (मुस्कुराकर)-ओह! मैं तो बहुत डर गया! (होंठ दिखाता है)।

पहली तापसी - बेटे! इस शेर के बच्चे को छोड़ दो, मैं तुम्हें दूसरा खिलौना दूँगी।

बच्चा - कहाँ है खिलौना? मुझे दो (कहते हुए हाथ फैलाता है)

दूसरी तापसी - ओ सुव्रता! यह सिर्फ बोली (वचन) से बहलाया या रोका नहीं जा सकता। तुम जाओ, मेरी कुटिया में मिट्टी का मयूर है, वह उसे दे दो।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) दुष्यन्तस्य मनः कस्मिन् औरस इव पुत्रे स्निह्यति?

(ख) का दुष्यन्तम् वत्सलयति?

(ग) तपस्विन्याः उटजे कः तिष्ठति?

(घ)केन सर्वदमन इति नामधेयः कृतः बालः ?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क)सर्वदमनः कान् विप्रकरोति ?

(ख) केसरिणी कदा सर्वदमनं लङयिष्यति?

(ग) वाचामात्रेण किं कर्तुं न शक्यः बालः?

(घ) प्रथमा तापसी किं दत्वा बालमृगेन्द्रं मोचयितुं कथियति?

3. **यथानिर्देशम् उत्तरत-**

(क) ''अपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि'' इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्णपदम्?

(ख) ''अविनयः'' इति पदस्य समानार्थकपदं लिखत?

(ग) ''मदीये उटजे मृत्तिकामयूरस्तिष्ठति'' इति अस्मिन् वाक्ये किं कर्तृपदम्?

(घ) ''वर्धते ते संरम्भः'' इति अस्मिन् वाक्ये 'ते' इति सर्वनामपदं कस्मै पंयुक्तम्?

मूलपाठः-

बालः - अनेनैव तावत् क्रीडिष्यामि। (इति तापसीं विलोक्य हसति)

तापसी - भवतु। न मामयं गणयति (राजानमवलोक्य) भद्रमुख! मोचयानेन बाध्यमानं बालमृगेन्द्रम्।

दुष्यन्तः - आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति। (आत्मगतम्)

अनेन कस्यापि कुलाङकुरेण स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम् कां निर्वृत्तिं चेतसि तस्य कुर्याद् यस्यायमकात् कृतिनः प्ररूढः।।3।।

दुष्यन्तः - अथ कोऽस्य व्यपदेशः?

तापशी - पुरुवंशः।

दुष्यन्तः - **(आत्मगतम्) कथमेकान्वयो मम? (प्रविश्य)तापसी- वत्स सर्वदमन! शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व।**

बालः - **कुत्र वा ममाम्बा?**

दुष्यन्तः - **(आत्मगतम्) किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या?**

बालः - **रोचते मे एज़ मयूरः। (इति क्रीडनकमादत्ते)**

अन्वयः - **कस्यापि स्पृष्टस्य अनेन कुलाङ्कुरेण मम गात्रेषु एवं सुखम् यस्य कृतिनः अङ्कात् अयं प्ररूढ़ः, तस्य चेतसि कां निर्वृतिं कुर्यात्।**

पदार्थाः-

भद्रमुख - भद्रं मुखं यस्य सः। (सुन्दर मुख वाले)
बालमृगेन्द्रम् - बालं मृगेन्द्रम्। (सिंह-शावक)
मोचयानेन - मोचय+अनेन, इसे छुड़ाओ।
आकारसदृशम् - आकारेण सदृशम्-आकार के समान।
चेष्टितम् - चेष्टाएँ, क्रियाकलाप।
कुलाङ्कुरेण - कुलस्य अङ्कुरेण। कुल के अंकुर के द्वारा।
निर्वृतिम् - आनन्द को।
चेतसि - मनसि- मन में।
यस्यायमङ्कात् - यस्य+अयम्+अ्ङ्कात्।
कृतिनः - कृत+इनि पुण्यात्मा के।
प्ररूढ़ - प्र+रूह्+क्त। प्र. प. ए. व.-उत्पन्न हुआ है।
लालयन् - लाल्+ शतृ-प्यार करते हुए।
व्यपदेशः - वंशः,कुल।
प्रविश्य - प्र+विश्+ल्यप्-प्रवेशकर।
अन्वयः - कुल, वंश।
एकान्वयः - एक एव अन्वयः यस्य सः।
शकुन्तलावण्यम् - शकुन्तस्य (पक्षिणः) लावण्यम् (सुन्दरता)-ष. तत्पु.
प्रेक्षस्व - प्र+ईक्ष्, लोट्लकार म.पु.ए.व.
अम्बा - माता।
शकुन्तलेत्यस्य - शकुन्तला+इति+अस्य
मातुराख्या - मातुः+आख्या।

अनुवादः-

बालक - तब तक इसी से खेलूंगा। (कहकर तपस्विनी को देखकर हंसता है)

तापसी - यह तो मुझे कुछ समझता ही नहीं। (राजा को देखकर) ओ भद्रमुख (भद्रजन) इसके द्वारा तंग किए जाते हुए सिंहशावक को छुड़ाएँ।

दुष्यन्त	-	(मन ही मन) आकार के समान इसकी चेष्टाएँ (क्रियाकलाप) भी कुछ कह सी रही हैं। इस, किसी अन्य कुल में उत्पन्न बालक को छूने पर, मेरे शरीर में इस प्रकार का सुख मिल रहा है तो इसको उत्पन्न करने वाले माता पिता की गोद में जब यह जाता होगा, तो कैसा आनन्द मिलता होगा? (बालक को पुचकारते हुए) प्रकट में
दुष्यन्त	-	इसका वंश क्या है?
तापसी	-	पुरुवंश।
दुष्यन्त	-	(मन ही मन) कैसे मेरा ही कुल?
तापसी	-	पुत्र सर्वदमन! पक्षी की सुन्दरता देखो?
बालक	-	मेरी माँ कहाॅं हैं?
दुष्यन्त	-	(मन ही मन) क्या इसकी माॅं का नाम शकुन्तला ही है?
बालक	-	मुझे यह मयूर अच्छा लगता है। (कहते हुए खिलौना लेता है)

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) केन सदृशं तस्य चेष्टितं कथयति?
   (ख) बालाय किं रोचते?
   (ग) बालस्य कः व्यपदेशः आसीत्?
   (घ) बाध्यमानं कं मोचयितुं तापसी कथयति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) तापसी राजानम् अवलोक्य किं वदति?
   (ख यस्य कृतिनः अङ्कात् जातः तस्य चेतसि कां कुर्यात्?
3. **यथानिर्देशम् उत्तरत-**
   (क) ''न मामयं गणयति'' इति अस्मिन् वाक्ये अयम् इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ख) ''पक्षीः'' इति पदस्य समानार्थकपदं लिखत?
   (ग) ''रोदिति'' इति क्रियापदस्य विलोमपदं लिखत्?
   (घ) ''अनेन कुलाङ्करेण'' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

परामर्शाः-

1. इस एकांकी में आए पात्रों की भूमिका एक-एक छात्र को देकर उनसे अभिनय करवाएॅं। शेर की भूमिका भी किसी छात्र/छात्रा से कराएॅं।
2. संवाद-वाचन के समय भावानुसार आरोह और अवरोह पर ध्यान दें और त्रुटियाँ होने पर स्वयं उसका भावानुसार उच्चारण कर सुधारें।
3. मुख की भंगिमा में भी भाव परिलक्षित हों इसका ध्यान रखें।
4. बीच-बीच में प्रश्न उपस्थापित कर उनके अवबोधन की जाँच करें।

अनुभव-विस्तार

इस नाट्यांश में एक ओर दुष्यन्त के द्वारा की गई भयंकर भूल के अनुताप का संकेत है दूसरी ओर चपल मनोहर बालक को देखते ही उनके भीतर उठ रहे वात्सल्य भाव की भी अभिव्यक्ति है। पर इस नाट्याश का मूल भाव शकुन्तला और दुष्यन्त के पुत्र सर्वदमन की वीरता का वर्णन ही है।

शुकशावकोदन्तः

(षष्ठः पाठ)

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ कविकुलशिरोमणि महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित 'कादम्बरी' कथा का अंश है। महाराज शूद्रक के दरबार में चाण्डाल कन्या द्वारा एक शुक को लाया जाता है। यह शुकशावक अपनी कथा राजा को सुनाता है। विन्ध्याटवी के जंगल में जन्म से लेकर, शबर के अत्याचार, पिता की नृशंस हत्या, तथा स्वयं की प्राण रक्षा कैसे हुई, यह पूरा वृत्तान्त अत्यन्त कौतूहलपूर्ण एवं रोचक है।

पाठोद्देश्यानि

1. कथा शिक्षण के माध्यम से साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
2. पाठ में आए नवीन पदों का परिचय प्रदान करना।
3. कथागत सामासिक शैली का परिचय प्रदान करना।
4. आत्मकथात्मक भाषा शैली का विस्तार तथा इसके समान भावों का श्रवण व लेखन करना।

मूलपाठः

अस्ति मध्यदेशालङ्कारभूता मेखलेव भुवो विन्ध्याटवी नामः तस्या च पम्पाभिधानं पद्मसरः। तस्य पश्चिमे तीरे महाजीर्णः शाल्मलीवृक्षः। तस्यैवैकस्मिन् कोटरे निवसतः कथमपि पितुरहमेव सूनुरभवम्। ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे लोकान्तरमगमत्। तातस्तु सुतस्नेहादन्तर्निगृह्य शोकं मत्संवर्धनपर एवाभवत्। परपीडनिपतिताभ्यः शालिवल्लरीभ्यस्तण्डुलकणान् शुककुलावदलितानि च फलशकलानि समाहृत्य मह्यमदात्। मदुपभुक्तशेषमेवाकरोदशनम्।

एकदा तु प्रत्यूषसि सहसैव तस्मिन् वने मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत्। आकर्ण्य च तमहमुपजातवेपथुरर्भकतया भयविह्वलः पितुः पक्षपुटान्तरमविशम्। अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् क्षोभितकानने मृगयाकलकले पितुरुत्सङ्गादीषदिव निष्क्रम्य कोटरस्थ एव शिरोधरा प्रसार्य किमिदमिति दिदृक्षुरभिमुखमापतच्छबरसैन्यमद्राक्षम्। मध्ये च तस्य प्रथमे वयसि वर्तमानं शबरसेनापतिमपश्यम्।

पदार्थः -

मध्यदेशालङ्कारभूता (मध्यदेशस्य अलङ्कारभूता) – मध्यदेश के अलंकार स्वरूप, **मेखलेव** (मेखला इव) – मेखला (कमरबंद) की भाँति, **महाजीर्णः** (महान् चासौ जीर्णः च) – बहुत पुराना, **सूनुः** – पुत्र, **प्रसववेदनया** (प्रसवस्य वेदना तया) – प्रसव पीड़ा से, **सुतस्नेहात्** (सुखस्य स्नेहः तस्मात्) – पुत्र प्रेम से (उत्पन्न), **परपीडनिपतिताभ्यः** (परस्य नीडाः तेभ्यः निपतिताः ताभ्यः) – दूसरों के घोंसलों से गिरे हुए, **शालिवल्लरीभ्यः** (शालेः वल्लरयः ताभ्यः) – शालि धान्य की लताओं से, **शुककुलावदलितानि** (शुकानां कुलानि, शुक्कुलैः अवदलितानि) – तोतों के समूह के द्वारा कुतरी हुई, **फलशकलानि** (फलानां शकलानि) – फलों के टुकड़े, **मदुपभुक्तशेषमेवाकरोदशनम्** (मया उपभुक्त मदुपभुक्तः मदुपभुक्तश्चासौ शेषः च तमेव अकरोदशनम्) – मेरे द्व

ारा खाने से जो शेष बच गया है, उसी को खाया। **मृगया** – आखेट, **कोलाहलध्वनिः** (कोलाहलस्य ध्वनिः) – (आखेट के) घने शोर की आवाज, **उपजातवेपथुः** (उपजातः वेपथुः यस्य स) – शरीर में उत्पन्न कम्पन वाला, **पक्षपुटान्तरम्** – पंखों के समूह में, **पितुरुत्सङ्गादीषदिव** (पितुः + उत्सङ्गात् + इषत् + इव) – पिता की गोद से थोड़ा सा ही **दिदृक्षुः** (द्रष्टुम् इच्छुः) – देखने की इच्छा वाला, **आपतच्छबरसैन्यम्** (आपतं शबराणां सैन्यम्) – आए हुए शबर सेना को, **शबरसेनापतिम्** (शबराणां सेनापतिः तम्) – शबरसेनापति को।

सरलानुवादः -

मध्यदेश की अलङ्कारस्वरूप कमरबंद की भाँति विन्ध्या नाम की अटवी (छोटा जंगल) है। उसमें पम्पा नाम का कमलों का तालाब है। उसके पश्चिम तट पर बहुत पुराना शाल्मली का वृक्ष है। उसी के एक कोटर में निवास करते हुए पिता का (मैं ही एक) पुत्र हुआ। मेरे उत्पन्न होने की प्रसवपीड़ा से ही मेरी माता का स्वर्गवास हो गया। पिता तो उस शोक को (पुत्र प्रेम के कारण) अन्दर छिपा कर मेरा पालन-पोषण करने में लग गए। दूसरों के घोंसलों से गिरे हुए धान की लताओं से चावल के कणों को तथा तोता के समूह के द्वारा कुतरे हुए फलों को इकट्ठा करके (वे) मुझे देते थे। (तथा) मेरे द्वारा खाने से बचे हुए को ही (वे) खाते थे।

एक बार तो अचानक उस वन में प्रातःकाल आखेट का कोलाहल भरी आवाज हुई और उसे सुनकर मैं काँपने लगा। छोटा बालक होने के कारण भय से आतुर होकर पिता के पंखों में छिप गया। उस शान्त वन में (उस शोर से) शीघ्र ही क्षोभित वन में, आखेट के शोर में कोटर में ही पिता की गोद से थोड़ा सा निकलकर गर्दन को फैलाकर यह क्या है, (ऐसा) देखने की इच्छा वाले मैंने शबर सेना को देखा और उनके बीच में युवावस्था में विद्यमान शबरसेनापति को देखा।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**
   (क) पद्मसरसः नाम किम् आसीत्?
   (ख) मध्यदेशालङ्कारभूता का आसीत्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**
   (क) शुकशावकस्य जननी कथं लोकान्तरम् अगच्छत्?
   (ख) पिता शुकशावकं कथं पालितवान्?
3. **यथानिर्देशम्**
   (क) 'शुककुलावदलितानि फलशकलानि' इत्यत्र किं विशेषणपदमस्ति?
   (ख) 'कम्पनम्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
   (ग) 'अदात्' इति क्रियापदस्य कर्ता कः अस्ति?

मूलपाठः

आसीच्च मे मनसि 'अहो मोहप्रायमेतेषां जीवितम्। आहारो मधुमांसादिः, श्रमो मृगया, शास्त्रं शिवारुतं, प्रज्ञा शकुनिज्ञानम्। यस्मिन्नेव कानने निवसन्ति तदेवोत्खातमूलमशेषतः कुर्वन्ति। इति चिन्तयत्येव मयि शबरसेनापतिः स आगत्य तस्यैव तरोरधश्छायायां परिजनोपनीतपल्लवासने समुपाविशत्। आपीतसलिलो भुक्तमृण ालिकश्चोत्थायापगतश्रमः सकलने सैन्येन सहाभिभूतं विशमयासीत्।

एकतमस्तु जरच्छबरस्तस्मिन्नेव तरुतले मुहूर्तमिव व्यलम्बत। अन्तरिते च सेनापतौ च सुचिरमारुरुक्षुस्तं वनस्पतिमामूलादपश्यत्। उत्क्रान्तमिव तस्मिन् क्षणे तदालोकनभीतानां शुककुलानामसुभिः। किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्। यतः स तमयत्नेनैव पादपमारुह्य फलानीव तस्य वनस्पतेः कोटरेभ्यः शुकशावकानग्रहीत्। अपगतासूंश्च कृत्वा क्षितावपातयत्।

तातस्तु तदवलोक्य विषादशून्यामश्रुजलप्लुतां दृशमितस्ततो विक्षिपन् पक्षसंपुटेनाच्छाद्य मां स्नेहपरवशो मद्रक्षणाकुलोऽभवत्। असावपि पापः क्रमेण शाखान्तरैः सञ्चरमाणो मत्कोटरद्वारमागत्य भुजङ्गभीषणं प्रसार्य बाहुं मुहुर्मुहुर्दत्तचञ्चुप्रहारमुत्कूजन्तमाकृष्य तातमपगतासुमकरोत् मां तु स्वल्पत्वात् कथमपि नालक्षयत्। उपरतं च तमवनितलेऽमुञ्चत्। अहमपि तच्चरणान्तराले प्रवेशितशिराधरो निभृतमङ्कनिलीनस्तेनैव सह पवनवशसम्पुञ्जितस्य शुष्कपत्रराशेरुपरि पतितमात्मानमपश्यम्। यावच्चासौ तरुशिखरान्नावतरति तावदहं पितरमुपरतमुत्सृज्य नृशंस इव स्नेहरसानभिज्ञौ भयेनैव केवलमभिभूयमानो लुठन्नितस्ततो नातिदूरवर्तिनस्तमालपादपस्य मूलवेशमविशम्।

पदार्थः -

शकुनिज्ञानम् (शकुनीनां ज्ञानम्) – पक्षिविषयक ज्ञान, **परिजनोपनीतपल्लवासने** (परिजनैः उपनीतं यत् पल्लवानाम् आसनम्) – सेवकों द्वारा लाए गए पत्तों के आसन पर, **आपीतसलिलः** (आ समन्तात् पीतः सलिलः येन सः) – खूब पानी पिया हुआ। **भुक्तमृणालिकः** (भुक्तः मृणालिकः येन सः) – जिसने (कमल की) मृणालिकाओं को खा लिया है, **अपगतश्रमः** (अपगतः श्रमः यस्य सः) – थकान दूर होने पर, **तदालोकनभीतानाम्** (तस्य आलोकनेन भीतानाम्) – उसके देखने से डरे हुए। **अकरुणानाम्** (न करुणानाम्) – कठोर (हृदय वालों) के लिए, **अपगतासून्** (अपगताः असून् येषाम्) – जिनके प्राण चले गए हैं, **मद्रक्षणाकुलः** (मम रक्षणाय आकुलः) – मेरी रक्षा के लिए तत्पर, **मुहुर्मुहुर्दत्तचञ्चुप्रहारम्** (दत्तः चञ्चुप्रहारः येन दत्तचञ्चुप्रहारः तम्) – बार-बार चोंच से प्रहार करने वाले को, **नालक्षयत्** (लक्ष् + लङ्) – नहीं देखा, **पवनवशसम्पुञ्जितस्य** (पवनस्य वशः तेन सम्पुञ्चिजतस्य) – हवा के वश से इकट्ठा हुए, **तरुशिखरान्नावतरति** (तरुशिखरात् + अवतरति) – पेड़ की शाखा से नीचे उतरता है। **उत्सृज्य** (उत् + सृज् + ल्यप्) – छोड़कर, **तमालपादपस्य** (तमालश्चासौ पादपः तस्य) – तमाल के वृक्ष का।

सरलानुवादः -

मेरे मन में (आया) - अरे! इनका जीवन प्रायः मोह से भरा हुआ ही है। आहार शराब और मांसादि है, आखेट करना इनका परिश्रम है, सियारों का रोना ही इनका शास्त्र ज्ञान है तथा पक्षियों का ज्ञान होना ही इनकी बुद्धि है। जिस वन में ये रहते हैं उसी को ही जड़ से उखाड़ देते हैं। मेरे ऐसा सोचने पर ही शबरसेनापति उसी पेड़ की छाया में अपने परिजनों द्वारा लाए गए आसन पर बैठ गया। (वह) पानी पीकर तथा कमल की मृणालिकाओं को खाकर तथा अपनी थकान को दूर करके समस्त सेना के साथ इच्छित दिशा को गया।

उनमें से एक बूढ़ा शबर उसी पेड़ के नीचे क्षण भर रुक गया। सेनापति के चले जाने पर जल्दी से पेड़ पर चढ़ने की इच्छा से उस पेड़ को नीचे से ऊपर तक देखा। उसी क्षण उसके देखने मात्र से डरे हुए तोतों के प्राण मानो निकल गए। कठोर हृदय वालों के लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है क्योंकि उसने पेड़ पर चढ़कर फल की तरह उस वनस्पति के कोटरों से तोते के छोटे शावकों को पकड़ा तथ प्राण-हरण करके भूमि पर गिरा दिया।

पिता को उस (दृश्य को) देखकर विषाद रहित तथा आँसुओं से मेरी दृष्टि को देखकर तथा घने पंखों से मुझे ढककर स्नेह के वशीभूत होकर मेरे पालन में लग गए। यह भी पाप के क्रम से अन्य शाखाओं पर संचरण करता हुआ मेरे कोटर के द्वार पर आकर सर्प के समान भीषण बाँहों को फैलाकर बार-बार चोंच से प्रहार करने वाले तथा ऊँची आवाज (चीख-पुकार) करते हुए पिता को खींचकर (उनके) प्राण-हरण कर लिए तथा मुझे तो छोटा होने के कारण वह मुझे देख नहीं पाया एवं प्राण निकलने पर उसे पृथ्वी पर छोड़ दिया। मैंने भी उसी अन्तराल में (उनकी)

गोद में स्वयं को छिपाया हुआ उसी के साथ हवा के झोंके से इकट्ठे हुए स्वयं को सूखे पत्तों के ढेर पर गिरे हुए देखा। जब तक यह पेड़ की शाखा से उतरता है तब तक मैं मरे हुए पिता को छोड़कर कठोर हृदय की भाँति स्नेह रस से अनजान (बनकर) केवल भय से पूरित लुढकता हुआ, वहाँ से थोड़ी ही दूरी पर तमाल वृक्ष के मूल भाग में आ गया।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**
   (क) तरुतले कः व्यलम्बत?
   (ख) केषां जीवितं मोहप्रायम्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**
   (क) स्नेहपरवशः पिता किं कृतवान्?
   (ख) जरच्छबरः वनस्पतिम् अवलोक्य किं कृतवान्?
3. **यथानिर्देशम्**
   (क) 'समुपाविशत्' इति क्रियायाः कर्ता कः अस्ति?
   (ख) 'प्रवेशितशिरीधरो अहं' इत्यत्र विशेष्यपदं किमस्ति?
   (ग) 'प्राणैः' इत्यस्य कः पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम्?

मूलपाठः

अजातपक्षतया च मुहुर्मुहुर्मुखने पततः स्थूलस्थूलं श्वसता धूलिधूसरितस्य संसर्पतो मम समभून्मनसि नास्ति जीवितादन्यदभिमततरमिह जगति सर्वजन्तूनाम्। एवमुपरतेऽपि ताते यदहं जिजीविषामि। धिङ्मामकरुण ाामतिनिष्ठुरमकृतज्ञम्। खलं हि खलु ये हृदयम्। तातेन यत्कृतं सर्वं तदेकपदे मया विस्मृतम्। सर्वथा न कञ्चिन्न खलीकरोति जीवनाशा यदीदृगवस्थमपि मामायासयति जलाभिलाषः। दिवसस्य चेयमतिकष्टा दशा वर्तते। आतपसन्तप्तपांसुला भूमिः। पिपासावसन्नानि गन्तुमनल्पमपि मे नालमङ्गकानि। अप्रभुरस्म्यात्मनः। सीदति मे हृदयम्। अन्धकारतामुपयाति ये चक्षुः। अपि नाम खलो विधिरनिच्छतोऽपि मे मरणमद्यैवोपपादयेत्।

इत्येवं चिन्तयत्येव मयि हारीतनामा जाबालमुनितनयः सवयोभिरपरैर्मुनिकुमारकैः सह तेनैव पथा तदेव कमलसरः सिस्तासुरुपागमत्। प्रायेणाकारणमित्राण्यतिकरुणार्द्राणि च भवन्ति सतां चेतांसि। यतः स तदवस्थमवलोक्य मां सरस्तीरमानाययत्, स्वयं चादाय सलिलबिन्दूनपाययत्। समुपजाप्राणं मां छायायां निध ायाकरोत् स्नानविधिम्। अभिषेकावसाने सकलेन मुनिकुमारकदम्बकेनानुगम्यमानो मां गृहीत्वा तपोवनमगच्छत्।

पदार्थः -

अजातपक्षतया (न जातः अजातः, अजाताः च पक्षाः च तस्मात्) – पंख न निकलने के कारण, **धूलिधूसरितस्य** (धूलिना धूसरितस्य) – धूल / मिट्टी से भरे हुए, **अभिमततरम्** – अधिक अभीष्ट, **अतिनिष्ठुरम्** – अति कठोर, **खलीकरोति** (न खलं खल आयासयति) – प्रेरित करता है, **आतपसन्तप्तपांसुला** (आतपेन सन्तप्ता पांसुला च धूलिः) – धूप से सुन्न पड़े हुए, **अप्रभुरस्म्यात्मनः** (अप्रभुः अस्मि आत्मनः) – स्वयं को अनाथ (हूँ, ऐसा माना)। **सवयोभिरपरैर्मुनिकुमारकैः** (सवयोभिः + अपरैः + मुनिकुमारकैः) = अन्य सहपाठी मुनि कुमारों के साथ, **आनययत्** (आ + नी + णिच्, लुङ्) – लाया गया, **अपाययत्** (पा + णिच् + लुङ्) – पिलाया गया, **अभिषेकावसाने** (अभिषेकस्य अवसाने) – स्नान के बाद।

सरलानुवाद -

पंख न निकलने के कारण बार-बार मुँह (के बल) गिरते हुए लम्बी-लम्बी सांस लेते हुए, धूल से भरे हुए सरकते हुए मेरे मन में हुआ कि इस जगत् में प्राणियों को जीवन से अधिक अभीष्ट कुछ भी नहीं है। पिता के इस प्रकार चले जाने पर भी मैं जीवित हूँ। अकरुण तथा अतिकठोर व कृतज्ञता को न मानने वाले मुझे (जीवित रहने पर) धिक्कार है। मेरा हृदय दुष्टों से भी दुष्ट है। पिता ने जो किया वह सब एक क्षण में ही मेरे द्वारा भुला दिया गया है। जीवन की आशा किसे दुष्ट नहीं बना देती कि इस अवस्था में भी मुझे जीने की अभिलाषा प्रेरित कर रही है। दिन की भी यह बहुत कठिन दशा है। भूमि भी धूप से संतप्त तथा धूल भरी ये प्यास से सुन्न पड़े मेरे अंग चलने में समर्थ नहीं है। मैं खुद को अनाथ मान रहा हूँ। मेरा हृदय दुःख से संतप्त है। मेरे नेत्रों के आगे अन्धेरा छा गया है। क्यों नहीं यह दुष्ट विधाता न चाहते हुए भी मेरी मृत्यु आज ही कर दे।

मेरे ऐसा सोचते ही हारीतनामक जाबालमुनि का पुत्र अपने समवयस्क मुनि-कुमारों के साथ उसी रास्ते पर (उसी) कमल के तालाब (पर) स्नान की इच्छा से आ गया। प्रायः सज्जनों के हृदय बिना कारण के ही मित्रवत् करुण तथा कोमल होते हैं। क्योंकि वह (मेरी) इस अवस्था को देखकर मुझे नदी के तट पर ले गया तथा स्वयं पानी की बूंदें लाकर (अंजुलि में) मुझे पिलाई तथा प्राण पड़ने पर मुझे छाया में ले जाकर स्नान कराया। स्नान के बाद सभी मुनिकुमार समूह का अनुगमन किए जाते हुए मुझे लेकर (वह) तपोवन को चला गया।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**
   (क) कः आजातपक्षः आसीत्?
   (ख) मे हृदयं कीदृशमस्ति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**
   (क) दिवसस्य दशा कीदृशी वर्तते?
   (ख) सतां चेतांसि कथं भवन्ति?
3. **यथानिर्देशम्**
   (क) 'अतिकरा दशा' इत्यत्र विशेषणपदं किमस्ति?
   (ख) 'जलम्' इत्यर्थे कः पर्यायः अत्र प्रयुक्तमस्ति?
   (ग) 'स्मृतम्' इत्यस्य विपर्ययपदं किमत्र प्रयुक्तम्?

अनुभवविस्तारः

शुकशावक द्वारा जन्म से लेकर प्राण-रक्षा तक की आपबीती विस्तार से सुनाई गई है। कथा में शुकशावक के सामने जो परिदृश्य उपस्थापित हुआ तथा इससे उत्पन्न उसके मनोभावों का विस्तार से वर्णन किया गया है जिससे कथा रुचिकर बन गई है। कादम्बरी से उद्धृत इस कथा में सामासिक शैली का प्रयोग किया गया है ताकि कम शब्दों में अधिक भाव-विस्तार हो सके। सुदृढ़ भाषा-शैली सिखाने के दृष्टिकोण से यह कथा महत्त्वपूर्ण है। इस कथा का सारांश अथवा लघुकथा व अन्य आत्मकथाओं के बारे में कक्षा में सामूहिक-चर्चा व लेखन-कार्य किया जा सकता है। कथा के कुछ अंश देकर तथा वाक्यों में रिक्त स्थान रखकर कथा-लेखन किया जा सकता है।

भव्यः सत्याग्रहाश्रमः

(सप्तमः पाठ)

पाठपरिचयः-

प्रस्तुत पाठ गाँधी विचारधारा की पोषिका कवयित्री श्रीमती पण्डिता क्षमाराव रचित 'सत्याग्रह गीता' के चतुर्थ अध्याय से लिया गया है। गाँधी जी के अहमदाबाद के समीप साबरमती नदी के तट पर आश्रम की स्थापना की, जो उनके विचारों को पोषित करता है। यहीं से उन्होंने सत्य-अहिंसा जैसे अनेक मूल्यों का उद्घोष किया। यहाँ पर साबरमती आश्रम तथा गाँधी जी के आदर्श व अनुकरणीय चरित्र का चित्रण किया गया है। महात्मा गाँधी के आश्रम के नौ व्रतों का वर्णन तथा उनके उपदेश इस पाठ के केन्द्र बिन्दु हैं सत्य के प्रति उनकी दृढ़ता व लोगों का उनके प्रति बढ़ता प्रेम यहाँ चित्रित है।

पाठोद्देश्यानि-

1. गाँधी विचारधारा से छात्रों को अवगत कराना।
2. पाठ में आए नैतिकमूल्यों व जीवनमूल्यों का छात्रों को बोध कराना।
3. पद्यों के सस्वर गायन के माध्यम से छात्रों में रुचि उत्पन्न करना।
4. पाठ के भाव, भाषा तथा छन्द आदि से छात्रों को परिचित कराना।

1. मूलपाठः-

ततास्तीरे सबर्मत्या नाम्ना सत्याग्रहाश्रमः।
महात्मा स्थापयामास सदनं सानुयात्रिकः॥1॥

सत्यमेव प्रमाणं यन्मनोवाक्कायकर्मभिः।
तस्मिन् पुण्यनिवासे तद् यथार्थो हि स आश्रमः॥2॥

अन्वयः-

ततः सबर्मत्याः तीरे सानुयत्रिकः महात्मा सत्याग्रहाश्रमः नाम्ना सदनं स्थापयामास।
तस्मिन् पुण्यनिवासे तत् सत्यम् एव प्रमाणम् यत् मनोवाक्काय-कर्मभिः स आश्रमः हि यथार्थः (जातः।

पदार्थाः-

ततस्तीरे- (ततः + तीरे) तब किनारे पर, **सत्याग्रहाश्रमः** – सत्याग्रह नामक आश्रम **महात्मा**-(महान् चासौ आत्मा च (कर्म.)) महापुरुष, **स्थापयामास** – (स्था+णिच्+अस् अनुप्रयोग + लिट्) स्थापित किया, **सदनं** – घर, **सानुयात्रिकः** – (अनुयात्रिभिः सहितः यः सः, (बहु.) अपने अनुयायियों के साथ, **नाम्ना** – 'नाम' शब्द तृ. (नाम से)। **प्रमाण** – (प्र+मा+ल्युट्) प्रमाण, **यन्मनोवाक्कायकर्मभिः** – यत्+मनः+वाक्+कायकर्मभिः (मनः च वाक् च कायः च कर्म च तैः) मन, वचन, शरीर तथ कर्मो से, **यथार्थः** – यथा+अर्थः (वास्तविक)।

सरलानुवादः-

तब साबरमती नामक नदी के किनारे महात्मा गाँधी ने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर सत्याग्रह-आश्रम नामक एक घर की स्थापना की।

उस पवित्र निवास स्थान में सत्य ही प्रमाणस्वरूप था कि (वहाँ के निवासियों द्वारा अपने) मन, वचन, शरीर तथा कर्मों से वह आश्रम यथार्थता को प्राप्त हुआ अर्थात् वहाँ सभी सब प्रकार से सत्य का पालन करते थे।

विमर्शः-

महात्मा गाँधी द्वारा अपने अनुयायियों के साथ जिस आश्रम की स्थापना की गई, उसका वातावरण घर जैसा था।

वहाँ के अनुयायी अपने मन, कर्म, वचन व शरीर से सत्य का पालन करते थे, जो आश्रम के नाम को यथार्थ करता था।

नोट- सम्पूर्ण पाठ अनुष्टुप छन्दोबद्ध है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

   (क) कः 'सत्याग्रहाश्रम' इति नाम्ना सदनं स्थापयामास?

   (ख) तस्मिन् पुण्यनिवासे किं प्रमाणम्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

   (क) महात्मा सदनं कुत्र स्थापयामास?

   (ख) स आश्रमः कैः यथार्थः?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

   (क) 'आश्रमः' इत्यस्य विशेषणपदं किम्?

   (ख) 'गृहम्' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?

   (ग) 'स्थापयामास' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

2. **मूलपाठः-**

अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यापरिग्रहौ।
स्वदेशवस्तुनिष्ठा च निर्भीतरुचिसंयमः॥3॥

अन्त्यजानां समुद्धारो नवैतानि व्रतानि हि।
भारतोत्कर्षसिद्ध्यर्थमाश्रमस्य महात्मनः॥4॥

अन्वयः-

अंहिसा सत्यम् अस्तेयम् ब्रह्मचर्यापरिग्रहौ स्वदेशवस्तुनिष्ठा निर्भीतरुचिसंयमः च। हि भारतोत्कर्षसिद्ध्यर्थम् अन्त्यजानाम् समुद्धारः महात्मनः आश्रमस्य एतानि नव व्रतानि (आवश्यकानि सन्ति)।

पदार्थाः -

अहिंसा – (न हिंसा (नञ् त.) अहिंसा, **अस्तेयं** – (न स्तेयम् (नञ् त.)) चोरी न करना, **ब्रह्मचर्यापरिग्रहौ**

–(ब्रह्मचर्य+अपरिग्रहौ) ब्रह्मचर्य तथा धन इक्कठा न करने का स्वभाव, **स्वदेशवस्तुनिष्ठा** – (स्वदेशस्य वस्तु स्वदेशवस्तु, तेषु निष्ठा (तत्पुरुष)) स्वदेशी वस्तुओं के प्रति निष्ठा, **निर्भीत रुचिसंयमः** (निर्भीतः रुचिः संयमः च) भयरहित, कार्यों में रुचि तथा अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण होना, **अन्त्यजानां-दीनहीनों का, नवैतानि** – (नव+एतानि) यह नौ, **भारतोत्कर्षसिद्धयर्थमाश्रमस्य** – (भारत+उत्कर्षसिद्धि+ अर्थम्+आश्रमस्य) भारत की उन्नति के लिए आश्रम के, **महात्मनः** (महात्मन्' शब्द (ष., ए.)) महात्मा के।

सरलानुवादः-

हिंसा न करना, सदा सच बोलना, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, अधिक धन इकट्ठा करने का स्वभाव न होना, स्वदेशी वस्तुओं के प्रति निष्ठा, भय न होना, कार्यों में रुचि होना, तथा अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण होना (ये नौ व्रत महात्मा गाँधी द्वारा निर्धारित किए गए थे।)

भारत की उन्नति के लिए दीनहीनों का उद्धार तथा महात्मा गाँधी के आश्रम (में निर्धारित किए गए) यह नौ व्रत आवश्यक हैं।

विमर्शः-

महात्मा गाँधी ने भारत की उन्नति के लिए हरिजनों (दीनों) का उद्धार तथा उपर्युक्त नौ व्रतों को आवश्यक माना।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकापदेन उत्तरत-**
   (क) महात्मनः निष्ठा कुत्र आसीत्?
   (ख) महात्मना केषां समुद्धारः अत्रोक्तः?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) महात्मन आश्रमस्य व्रतानि कानि सन्ति?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'एतानि व्रतानि' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?
   (ख) 'भारतस्योन्नत्यर्थम्' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

3. **मूलपाठः -**

निर्ममो नित्यसत्त्वस्थो मिताशी सुस्मिताननः।
सुकलत्रः शिशुप्रेमी पितेवाश्रमवासिनाम्।।5।।

ध्यायन् क्लेशान् स्वबन्धूनां तद्धितैकपरायणः।
विराजते मुनिर्बुद्धो बोधिद्रुमतले यथा।।6।।

अन्वयः-

निर्ममः नित्यसत्त्वस्थः मिताशी सुस्मिताननः सुकलत्रः शिशुप्रेमी अश्रमवासिनाम् पिता इव।
तद्धितैकपरायणः मुनिः स्वबन्धूनां क्लेशान् ध्यायन् (आश्रमे तथैव) विराजते यथा बोधिद्रुमतले बुद्धः।

पदार्थाः-

निर्ममः – (निर्गतः मम भावः यस्मात् सः (बहु.)) अहंभाव से रहित, **नित्यसत्त्वस्थः** (नित्यं सत्त्वे तिष्ठति इति (उप.)) सदा सत्त्वगुणों से युक्त, **मिताशी**-(मितम् अश्नाति इति (उप.)) कम खाने वाले, **सुस्मिताननः** –(सुस्मितम् आननं यस्य सः (बहु.)) सदैव प्रसन्न मुख वाला, **तद्धितैकपरायणः** – तेभ्यः हितं तद्धितम्, तद्धितम् एव एकं परायण ां यस्य सः (बहु.)) सदा उनके हित में लगा रहने वाला। **बोधिद्रुमतले** –(बोधिद्रुमस्य तले (ष.त.)) बोधिवृक्ष के नीचे, **ध्यायन्** -(ध्यै+शतृ) ध्यान करते हुए, **विराजते**-सुशोभित होता है।

सरलानुवादः-

अहंभाव से रहित, सदा सत्त्व गुणों से युक्त, कम खाने वाला प्रसन्न मुख वाला, अच्छी पत्नी वाला व बच्चों से प्रेम करने वाला (वह महात्मा) आश्रमवासियों के पिता की तरह था।

सदा उनके (आश्रमवासियों के) हित में लगा रहने वाला वह मुनि अपने बन्धुओं की समस्याओं के विषय में ध्यान करते हुए (वैसे ही) सुशोभित था जैसे महाबोधि वृक्ष के नीचे महात्मा बुद्ध (सुशोभित होते थे)।

विमर्शः-

यहाँ महात्मा गाँधी के उत्तम स्वभाव का वर्णन किया गया है तथा उनके शुद्धस्वभाव के कारण उनकी तुलना महात्मा बुद्ध से की गई है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) आश्रमवासिनां पिता इव कः अस्ति?
   (ख) केषां क्लेशान् ध्यायन् मुनिः विराजते?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) मुनिः कथमिव विराजते?
   (ख) महात्मा कीदृशः वर्णितः?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'बहुभोजी' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?
   (ख) श्लोकेऽस्मिन् क्रियापदं किम्?
   (ग) 'कष्टान्' इति पदस्य समानार्थकं पदं किं प्रयुक्तम्?
4. **मूलपाठः -**

साक्षात्सत्यप्रदीपोऽयं दीप्यतेऽखिलभारते।
स्वबन्धूनामपाकुर्वन् हृदयान्मोहजं तमः।।7।।

बलं सर्वबलेभ्योऽपि सत्यमेवातिरिच्यते।
सत्यवानबलः श्रेयान् सबलात् सत्यवर्जितात्।।8।।

अन्वयः -

स्वबन्धूनाम् हृदयात् मोहजम् तमः अपाकुर्वन् साक्षात् सत्यप्रदीपः अयम् अखिलभारते दीप्यते। सर्वबलेभ्यः अपि सत्यम् बलम् एव अतिरिच्यते। सत्यवर्जितात् सबलात् सत्यवान् अबलः श्रेयान् (भवति)

पदार्थाः-

सत्यप्रदीपः – सत्य रूपी दीपक, **दीप्यतेऽखिलभारते** – (दीप्यते+ अखिलभारते, अखिले भारते (कर्म.)), **मोहजम् –** (मोहात् जायते इति (उप.)) मोह से उत्पन्न, **अपाकुर्वन्** –(अप+आ+कृ+शतृ) दूर करते हुए, **सर्व. बलेभ्यः** (सर्वेभ्यः बलेभ्यः (कर्म.)) सभी बलों से, **अतिरिच्यते** – (अति+रिच्+लट्) बढ़कर है, **अबलः** –(न बलः) बलरहित, **सत्यवर्जितात्** – (सत्यं वर्जितं येन, तस्मात् (बहु.)) सत्य का त्याग करने वाले से।

सरलानुवादः-

अपने बन्धुओं के हृदय से मोह अर्थात् अज्ञान से उत्पन्न अन्धकार को दूर करते हुए, साक्षात् सत्यरूपी दीपक के समान यह (महात्मा गाँधी) सम्पूर्ण भारत में प्रकाशित अर्थात् प्रसिद्ध हैं।

सभी प्रकार के बलों से सत्य का बल श्रेष्ठ हैं (क्योंकि) सत्य का त्याग करने वाले अर्थात् झूठ बोलने वाले बलवान् व्यक्ति से सच बोलने वाला निर्बल व्यक्ति अधिक श्रेष्ठ होता है।

विमशः -

यहाँ महात्मा गाँधी के सच्चरित्र तथा भारत में उनकी ख्याति का वर्णन किया गया है। सत्य की श्रेष्ठता भी सिद्ध की गई है।

अभ्यासप्रश्नाः -

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) महात्मा केषां मोहजं तमः अपाकरोति?
   (ख) सर्वबलेभ्योऽपि किम् अतिरिच्यते?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) सत्यवान् अबलः कस्मात् श्रेयान्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'अयम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ख) 'ज्योतिः' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?
   (ग) 'अबलः' इत्यस्य विशेषणपदं किम्?

5. **मूलपाठः**

तद् ये चरन्ति धर्मेण प्रजा वा राज्यशासकाः।
समृद्धिर्जायते तेषामन्येषां तु क्षयो ध्रुवः॥9॥

इति तत्रभवान् गान्धीराख्याति सहवासिनः।
अनुयायिजनांश्चान्यान् वचसा लेखतोऽपि वा॥10॥

अन्वयः -

तत् ये राज्यशासकाः प्रजाः वा धर्मेण चरन्ति तेषाम् समृद्धिः जायते अन्येषां तु क्षयः ध्रुवः।

इति तत्रभवान् गाँधीः सहवासिनः अन्यान् च अनुयायिजनान् वचसा लेखतः अपि वा आख्याति।

पदार्थाः-

चरन्ति-('चर'+लट्) आचरण करते हैं।, **राज्यशासकाः** –(राज्यस्य शासकाः) राज्य पर शासन करने वाले, समृद्धिर्जायते – (समृद्धिः+जायते, जन्+लट्) समृद्धि होती है, **वचसा**-('वचस्' तृ.ए.), **अनुयायिजनांश्चान्यान्**-(अनुयायिजनान् +च+अन्यान्) अनुयायियों व अन्यों को, आख्याति–बताते हैं।

सरलानुवादः-

जो राज्य पर शासन करने वाले अर्थात् राजा या नेता इत्यादि तथा प्रजा धर्मपूर्वक आचरण करते हैं, उनकी ही उन्नति होती है। (इससे विपरीत व्यवहार करने वालों का) दूसरों का तो विनाश निश्चित है।

इस प्रकार सम्माननीय गाँधी अपने साथ रहने वालों को तथा अन्य अनुयायियों को भी अपने वचनों अर्थात् उपदेशों तथा लेखों से समझाते हैं।

विमर्शः-

महात्मा गाँधी सदैव अपने अनुयायियों को धर्मपूर्वक आचरण की शिक्षा देते थे। यहाँ तत्रभवान् शब्द सम्मान का सूचक है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अन्येषां तु कःध्रुवः?
   (ख) अनुयायिजनान् कः आख्याति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) केषां समृद्धिः जायते?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'वृद्धिः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
   (ख) 'आख्याति' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

6. मूलपाठः-

महात्मा प्राह-
अधर्ममपि दृष्ट्वा यः प्रतिबद्धुं न वाञ्छति।
सत्ये सत्यपि यो भीत्या न च तत् प्रतिपद्यते॥11॥

क्लीबयोरुभयोश्चापि निष्फलं जीवनं तयोः।
स्वार्थनाशभयाद् यत् तौ रक्षतोऽनृतजीवनम्॥12॥

अन्वयः-

महात्मा प्राह- यः अधर्मम् दृष्ट्वा अपि प्रतिबद्धुम् न वाञ्छति यः च सत्ये सति अपि भीत्या तत् न प्रतिपद्यते। तयोः च उभयोः अपि क्लीबयोः जीवनम् निष्फलम् यत् तौ स्वार्थनाशभयात् अनृतजीवनम् रक्षतः।

पदार्थाः-

दृष्ट्वा –(दृश्+क्त्वा) देखकर, **प्रतिबद्धुम्** –(प्रति+बन्ध्+तुमुन्) प्रतिकार करना, **वाञ्छति** – ('वाछि'+लट्) चाहता है, सत्यपि-(सति+अपि) होने पर भी, **भीत्या** – भय से, **प्रतिपद्यते** – (प्रति+'पद्'+लट्) बताता है, **क्ली. बयोः** – दोनों कायरों का, **निष्फलं** – (निर्गतं फलं यस्मात् तत् (बहु.) फलरहित), **स्वार्थनाशभयात्** – स्वार्थस्य नाशः स्वार्थनाशः, स्वार्थनाशस्य भयात् (ष.त.) स्वार्थ की हानि के भय से **अनृतजीवनम्** – (अनृतस्य जीवनम् (ष.तत्पु.)) झूठ का जीवन।

सरलानुवादः-

महात्मा गाँधी कहते हैं कि जो अधर्म को देखकर भी उसका प्रतिकार करना नहीं चाहता और जो सत्य होने पर भी भय के कारण उसे प्रकट नहीं करता।

(उपर्युक्त) उन दोनों ही कायरों का जीवन व्यर्थ है, जो स्वार्थनाश के भय से अर्थात् अपने हित के लिए झूठ की रक्षा करते हैं।

विमर्शः-

महात्मा गाँधी अधर्म का विरोध न करने वाले तथा डर के कारण सच न बोलने वाले दोनों की ही निन्दा करते हैं।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) कम् दृष्ट्वा अपि प्रतिबद्धुं न वाञ्छति?
(ख) तौ कस्मात् अनृतजीवनं रक्षतः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) कयोः जीवनं निष्फलम्?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

(क) 'रक्षतः' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
(ख) 'उभयोः' इति कस्य विशेषणपदम्?

7. **मूलपाठः**

हिंसामपि समाश्रित्य वरं मृत्युमुखे गतम्।
न पुनः स्वात्मरक्षार्थं कृतं निन्द्यं पलायनम्॥13॥

करोति मनसा हिंसा स हि भीरुः पलायिता।
आत्मनो मृत्युकातर्यादात्महिंसा करोति च॥14॥

अन्वयः-

हिंसाम् समाश्रित्य मृत्युमुखे गतम् अपि वरम्। पुनः स्वात्मरक्षार्थम् कृतम् निन्द्यम् पलायनम् न (वरम्)।

सः भीरुः पलायिता हि मनसा हिसां करोति। आत्मनः मृत्युकातर्यात् आत्महिंसाम् च (करोति)।

पदार्थाः-

समाश्रित्य –(सम्+आ+श्रि+ल्यप्) आश्रय लेकर, **मृत्युमुखे** – (मृत्योः मुखे (ष.त.)) मृत्यु के मुँह में, **स्वात्मरक्षार्थं** –(स्वस्य आत्मनः रक्षार्थम् (ष.त.)) अपनी रक्षा के लिए; **कृतं**–(कृ+क्त) किया गया, **पलायनम** – (परा+अय्+ल्युट्) भागना, **भीरुः** – डरपोक, **पलायिता** – (परा+अय्+तृच्) भागने वाला, **आत्मनः** – ('आत्मन्' शब्द, ष.एक.), **मृत्युकातर्यात्** – (मृत्योः कातर्यात् (ष.त.)), मृत्यु के डर के कारण, **आत्महिंसा** –(आत्मनः हिंसा (ष.त.)) आत्मा की हिंसा।

सरलानुवादः-

हिंसा का सहारा लेकर (अपनाकर) मृत्यु के मुँह में चले जाना भी श्रेष्ठ है परन्तु अपनी रक्षा के लिए किया गया निन्दनीय कार्य अर्थात् भाग जाना श्रेष्ठ नहीं है।

डरपोक व भागने वाला व्यक्ति मानसिक हिंसा करता है और अपनी मृत्यु के भय से अपनी आत्मा की भी हिंसा करता है अर्थात् अपनी आत्मा की आवाज़ को नहीं सुनता।

विमर्श-

कायरता की अपेक्षा मर जाना श्रेष्ठ है। यद्यपि गाँधी जी सदैव अहिंसा के पुजारी रहे हैं परन्तु कायरता व हिंसा में से उन्होंने हिंसा के मार्ग का ही चयन किया क्योंकि कायर व्यक्ति आत्मा की आवाज़ न सुनकर आत्महिंसा ही करता है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) पलायनापेक्षया कुत्र गतं वरम्?
   (ख) भीरुः केन हिंसा करोति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) स्वात्मरक्षार्थ किं न वरम?
   (ख) भीरुः किमर्थम् आत्महिंसां करोति?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'प्रशस्यम्' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?
   (ख) 'पलायनम्' इत्यस्य विशेषणपदं किम्?
   (ग) 'करोति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

8. **मूलपाठः-**

अत एव मया दत्तं नाम सत्याग्रहाश्रमः।
सत्यानुयायियुक्ताया विनीतवसतेर्मम॥15॥

इति सत्यादिधर्माणाममोघं बलमद्भुतम्।
वर्णयन् ग्राहयामास व्रतानि सुबहून् गुरुः॥16॥

अन्वयः -

अतः एव मया सत्यानुयायियुक्तायाः मम विनीतवसतेः सत्याग्रहाश्रमः इति नाम दत्तम्।
इति सत्यादिधर्माणाम् अमोघम् अद्भुतम् बलम् वर्णयन् गुरुः सुबहून् व्रतानि ग्राहयामास।

पदार्थाः-

अत एव-(अतः+एव), सत्यानुयायियुक्तायाः-(सत्यस्य अनुयायिभिः युक्तायाः (त.)) सत्य के अनुयायियों से युक्त के, विनीतवसतेः-(विनीतानां वसतेः (ष.त.)) सज्जनों के निवास स्थान के, अमोघं-(न मोघं) अचूक, वर्णयन्-(वर्ण+शतृ) वर्णन करते हुए, सुबहून्-(शोभनान् बहून् (कर्म.)) अनेक अच्छे लोगों को, ग्राहयामास-(ग्रह्+लिट्) ग्रहण करवाया।

सरलानुवादः-

इसलिए सत्य के अनुयायियों से युक्त मेरी सज्जनों की बस्ती (निवास स्थान) को मेरे द्वारा सत्याग्रह आश्रम नाम दिया गया।

इस प्रकार सत्यादि धर्मों की अचूक तथा अद्भुत शक्ति का वर्णन करते हुए गुरु महात्मा गाँधी ने अनेकों अच्छे लोगों को सत्यादि नौ व्रत ग्रहण करवाए।

विमर्शः-

महात्मा गाँधी ने अपने उपदेशों तथा लेखों आदि के माध्यम से अनेक लोगों को सत्यादि व्रत ग्रहण करवाए। इसमें सत्यादि व्रतों का महत्त्व भी बताया गया है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) गाँधिना विनीतवसतेः नाम किं दत्तम्?
   (ख) सत्यादिधर्माणां बलं कीदृशं वर्तते?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) कः सुबहून् व्रतानि ग्राहयामास?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'विनीतवसतेः' इत्यस्य विशेषणपदं किम्?
   (ख) 'मया' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

9. **मूलपाठः-**

अपराधे कृतेऽप्यन्यैः सत्यसारे तदाश्रमे।
स्वीकृत्य दोषसर्वस्वमुपवासैस्तपस्यति॥17॥

आश्रमाद् बहिरन्यत्र लोकानां कलहेऽपि सः।
स्वमेव कारणं मत्वा तत् कलङ्केन दूयते॥18॥

अन्वयः-

सत्यसारे तदाश्रमे अन्यैः अपराधे कृते अपि दोषसर्वस्वम् स्वीकृत्य उपवासैः तपस्यति।
आश्रमात् बहिःअन्यत्र अपि लोकानां कलहे सः स्वम् एव कारणम् मत्वा तत् कलङ्केन दूयते।

पदार्थाः-

कृतेऽप्यन्यैः-(कृते+अपि+अन्यैः), **सत्यसारे**-(सत्यस्य सारे (ष.त.)) सत्य के सार स्वरूप, **तदाश्रमे**-(तस्मिन् आश्रमे (कर्म.)) उस आश्रम में, **स्वीकृत्य**- (स्व+च्वि+कृ+ल्यप्) स्वीकार करके, **दोषसर्वस्वम्**-सम्पूर्ण दोष, **उपव.ासैः**-व्रतों के द्वारा, **मत्वा**- (मन्+क्त्वा), **दूयते**-('दूङ्'+लट्) दुःखी होते हैं।

सरलानुवादः-

सत्य के सार स्वरूप उस आश्रम में (महात्मा गाँधी) दूसरों के द्वारा किए गए अपराधों का सारा दोष अपने ऊपर लेकर व्रतों के द्वारा तपस्या करते थे अर्थात् पश्चाताप करते थे।
(महात्मा गाँधी) आश्रम के बाहर भी लोगों के झगड़े में स्वयं को कारण मानकर उस कलंक से दुःखी होते हैं।

विमर्शः-

यहाँ महात्मा गाँधी के स्वभाव के विषय में बताया गया है। वे आश्रम में होने वाले अपराधों के लिए खुद को कारण मानते थे। इतना ही नहीं वे आश्रम के बाहर की घटनाओं में भी स्वयं को कलंकित मानकर दुःखी होते थे।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) गाँधी कैः तपस्यति?
   (ख) महात्मा केन दूयते?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) महात्मा गाँधी कुत्र स्वमेव कारणं मत्वा कलङ्केन दूयते?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'आश्रमे' इत्यस्य विशेषणपदं किम्?
   (ख) 'अन्तः' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?

10. **मूलपाठः-**

आत्मवत्सर्वभूतानि पश्यतोऽस्य पदानुगाः।
गुणैः परवशीभूता व्यवर्धन्त सहस्रशः॥19॥

सर्वदाप्याचरिष्यामः सत्यादिनवकं व्रतम्।
इति जातसमुत्साहैः सधैर्यं निश्चितं जनैः॥20॥

अन्वयः-

आत्मवत्सर्वभूतानि पश्यतः अस्य गुणैः परवशीभूताः पदानुगाः सहस्रशः व्यवर्धन्त।
जातसमुत्साहैः जनैः 'सर्वदा सत्यादिनवकम् व्रतम् आचरिष्यामः' इति सधैर्यम् निश्चितम्।

पदार्थाः-

आत्मवत्सर्वभूतानि-अपने समान सभी प्राणियों को, **पश्यतः**-(दृश्+शतृ (ष.वि.)) देखते हुए, पदानुगाः-(पदानि अनुगच्छन्ति इति (उप.)) अनुयायी, **परवशीभूताः**-(परस्य वशीभूताः (ष.त.)) दूसरे के वश में, **व्यवर्धन्त**-(.वि+वृध्+ लङ्) बढ़ गए, **सत्यादिनवकं**-सत्यादि नौ (व्रत) **जातसमुत्साहैः**-(जातं समुत्साहं येषां तैः (कर्म.)) उत्पन्न हुए उत्साह वाले लोगों के द्वारा, **सधैर्यं**-(धैर्येण सहितम् (अव्ययी.)) धैर्य के साथ।

सरलानुवादः-

अपने समान सभी प्राणियों को देखने वाले उस (महात्मा गाँधी) के गुणों से वशीभूत होकर उनके अनुयायियों की संख्या हजारों में बढ़ने लगी।

(महात्मा गाँधी के अनुयायी) उत्साही लोगों ने धैर्यपूर्वक निश्चय किया कि हम सदा सत्यादि नौ व्रतों का आचरण करेंगे अर्थात् पालन करेंगे।

विमर्शः-

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली था। उनसे प्रेरित होकर अनेक लोगों ने सत्यादि नौ व्रतों के पालन का संकल्प लिया।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) सर्वभूतानि आत्मवत् कः पश्यति?
   (ख) सहस्रशः के व्यवर्धन्त?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) जातसमुत्साहैः जनैः सधैर्यं किं निश्चितम्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'गुणैःपरवशीभूताः' इत्यस्य विशेष्यपदं किम्?
   (ख) 'व्यवर्धन्त' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
   (ग) 'दोषैः' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?

परामर्शः-

शिक्षक आरोह-अवरोहपूर्वक पद्यों का गायन या वाचन कर छात्रों को शुद्धोच्चारण के लिए प्रेरित कर सकता है। व्याख्या विश्लेषण के माध्यम से श्लोकों के अर्थ को स्पष्ट किया जा सकता है। अपेक्षित व्याख्या के माध्यम से जीवनमूल्यों को छात्रों में स्थानान्तरित किया जा सकता है।

छात्रों को निम्नलिखित परियोजनाकार्य दिये जा सकते हैं।

- गाँधी के चरित्र का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
- महात्मा गाँधी के आश्रम के नियमों को सूचीबद्ध करें।

अनुभवविस्तारः-

गाँधी जी के सरल व अनुशासित जीवन की झलक दिखाता यह पाठ सत्य, अहिंसा आदि नव व्रतों का जीवन में महत्त्व दर्शाता है। किसी को कठोरता से नहीं अपितु सरलता से सही मार्ग पर लाया जा सकता है। गाँधी जी के ये विचार छात्रों को 'सादा जीवन उच्च विचार' के लिए प्रेरित करते हैं।

सङ्गीतानुरागी सुब्बण्णः

(अष्टमः पाठः)

पाठ परिचयः-

संगीत की रुचि रखने वाला सुब्बण्ण एक पौराणिक शास्त्री का पुत्र है, जिसे कुलपरम्परा के अनुसार पुराण का प्रवचन करना था पर अपनी संगीत की अभिरुचि के कारण और बाल्यावस्था से ही संगीत-साधना करने के कारण वह महान् संगीतकार बना। इसमें राजा का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

यह पाठांश कन्नड़ भाषा के उपन्यास ''सुब्बण्ण'' से लिया गया है जिसके लेखक प्रसिद्ध साहित्यकार ''मास्ति वेङ्कटेश अय्यङ्गार'' हैं।

उद्देश्यानि-

1. प्रसिद्ध गायक सुब्बण्ण की गायन-प्रतिभा, दृढ़निश्चय और तदनुसार साधना का परिचय देकर लक्ष्य प्राप्ति के लिए दृढ़निश्चय के महत्व पर दृष्टिपात। ़
2. भाषा-लालित्य का रसास्वादन।
3. तत्कालीन राजाओं की गुण-ग्राहकता का परिचय।
4. प्रत्ययों और समासों का प्रयोग माध्यम से ज्ञान। सङ्गीते

मूलपाठः-

सुब्बणस्य सङ्गीते यः त्रा सहजाभिलाषः आसीत्, स एकदा राजभवने संवृत्तया सङ्गत्या पुनरधिकं दृढ़ीबभूव। एकस्मिन् दिने पुत्रेण साकं पुराणिकशास्त्री राजभवनमेत्य तत्रान्तःपुरस्त्रीजनसमक्षे पुराण प्रवचनमारभमाण आदौ स्वपुत्रेण शुक्लाम्बरधरमित्यादि श्लोकं गापयामास। तचछुत्वा तत्रत्याः सर्वे पर्यनन्दन्। अथ किञ्चित्कालानन्तरं तत्र समागतो राजा समुपविश्य पुराणमाकर्णयति स्म। पितुः पार्श्वे उपविष्टः सुब्बण्णः पुराणप्रवचनं कुतूहलेन शृण्वन्नेव मध्ये महाराजमभि सविस्मयं पश्यति स्म। महाराजस्य सुन्दरं मुखम्, मुखे बृहत्तिलकार्ल्कारः, तत्रपि विशालस्य गण्डस्थलस्य शोभावहं श्मश्रुकूर्चम् इत्यादि सर्वमपि तस्य विस्मयकारण मासीत्। राजापि तं बालकं द्वित्रिवारमभिवीक्ष्य चतुरोखयं बाल इत्यमन्यत।

पदार्थाः-

सहजाभिलाषः	– सहज+अभिलाषः, स्वाभाविक इच्छा।
सङ्गीतानुरागी	– सङ्गीत+अनुरागी, सङ्गीते अस्ति अनुरागः यस्य सः सङ्गीत का प्रेमी।
अनुरागी	– अनुराग+इनि-प्रेमी।
सङ्गत्या	– सम्+गम्+क्तिन्- संगति, तृतीया एकवचन-संगतिसे गीत का संगत/संगीत-कार्यक्रम।
पुनरधिकम्	– पुनः+अधिकम्।
दृढ़ीबभूव	– दृढ़+च्वि+भू, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन-अधिक मजबूत हुई।

साकम्	–	सह–साथ
एत्य	–	आ+इ+ल्यप्, आकर
तत्रान्तः	–	तत्र+अन्तः
तत्रान्तःपुरस्त्रीजनसमक्षे	–	अन्तः पुरस्य स्त्रीजनानां समक्षे–अन्तःपुर की स्त्रियों के सामने।
पुराणप्रवचनं	–	पुराणस्य प्रवचनम्, षष्ठी तत्पुरुष।
आरभमाणः	–	आ+रभ्+शानच्–आरंभ करते हुए।
आदौ	–	प्रारंभे–शुरू में।
गापयामास	–	गै+णिच्, लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन–गवाया।
तच्छ्रुत्वा	–	तत्+श्रुत्वा–उसे सुनकर।
पर्यनन्दन्	–	परि+नन्द्, लङलकार प्रथम पुरुष एकवचन–प्रसन्न हुए।
समागतः	–	सम्+आ+गम्+क्त–आया हुआ–पास बैठकर।
उपविष्टः	–	उप+विश्+क्त–बैठा हुआ।
श्रृण्वन्	–	श्रु+शतृ–सुनता हुआ।
सविस्मयम्	–	विस्मयेन सह–आश्चर्य के साथ
बृहत्तिलकालङ्कारः	–	बृहत्+तिलक+अलंकारः, बृहत्तिलकम् एव अलंकारः यस्य सः–बड़ा सा टीका लगाए हुए।
शोभावहम्	–	शोभाम् आवहति इति सुन्दरता लाने वाला।
श्मश्रु	–	दाढ़ी–मूंछ
कूर्चः/कूर्चम्	–	दाढ़ी
श्मश्रुकूर्चम्	–	श्मश्रवः च कूर्च च, तेषां समाहारः।
अभिवीक्ष्य	–	अभि+वि+ग्रक्ष्+ल्यप्–देखकर।

अनुवादः–

सुब्बण्ण की सङ्गीत के प्रति जो सहज–स्वाभाविक अभिरुचि थी वह एकबार राजभवन में होने वाली सङ्गति (संगीत–कार्यक्रम) से और अधिाक दृढ़ हो गई। एक दिन पौराणिक शास्त्री ने अपने पुत्र के साथ राजभवन पहुँचकर वहाॅं अन्तःपुर की स्त्रियों के सामने पुराण का प्रवचन आरंभ करने से पहले प्रारंभ में अपने पुत्र से ''शुक्लाम्बरधरम्'' इत्यादि श्लोक गवाया। उस गीत को सुनकर वहाॅं उपस्थित सभी लोग अत्यधिक प्रसन्न हुए। कुछ समय के बाद राजा भी वहाँ आकर पुराण का श्रवण करने लगे। पिता के समीप बैठा हुआ सुब्बण्ण कुतूहल से (उत्सुकता से) पुराण–प्रवचन सुनते हुए बीच–बीच में बड़े ही आश्चर्य से राजा की ओर देखता था। महाराज का सुन्दर मुख, मुख पर बड़े तिलक का अलङ्कार (तिलक रूपी गहना), वहाॅं भी विशाल कपोल पर बहुत ही सुन्दर दिखाई देने वाले दाढ़ी और मूँछ–ये सभी उसके लिए आश्चर्यजनक थे। राजा ने भी उस बालक को दो तीन बार देखकर यह बालक चतुर (चालाक) है, ऐसा माना।

अभ्यासप्रश्नाः–

1. **एकपदेन उत्तरत–**

(क) केन साकं पुराणिक शास्त्री राजभवनं गतवान्?

(ख) शास्त्री केषां समक्षं पुराणप्रवचनं करोतिस्म?

(ग) पुराणिकशास्त्री कदा पुत्रेण श्लोकं गापयामास?

(घ) बालकः चतुरः अस्ति इति कः अमन्यत्?

2. पूर्णवाक्येन प्रश्नान् उत्तरत-

(क) सुब्बणस्य सङ्गीते सहजाभिलाषः कथं दृढ़ीबभूव?

(ख) राजा तत्र समुपविश्य किं करोतिस्म?

(ग) कः सविस्मयं महाराजं पश्यतिस्म?

(घ) सुब्बण्णस्य विस्मयकारणं किं-किम् आसीत्?

3. यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-

(क) 'प्रारंभे' इति पदस्य समानार्थकपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

(ख) ''दूरे'' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

(ग) ''संवृत्तया सङ्‌गत्या'' इति अनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

(घ) ''तस्य विस्मयकारणम् आसीत्'' इत्यस्मिन् वाक्ये ''तस्य'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

मूलपाठः-

एवमवसिते पुराणे राजा शास्त्रिणमुद्दिश्य भोः, एष बालः भवत्कुमारः किम्? इत्यपृच्छत्। आम्, महाप्रभो, इति शास्त्री प्रत्युवाच। पुनः स्मयपूर्वकं राजा बालं सम्बोधय अये वत्स, किं भवानपि पितृवत् पुराणप्रवचनं करिष्यति! इति पर्यपृच्छत्। तदा स बालः- अहं पुराणप्रवचनं न करोमि। सङ्गीतें गायामीति व्याहरत्। तदा राजा-आह, तथा ननु। तर्हि एकं गानं शृणुमस्तावत् इत्यवदत्। अनुपदमेव सुब्बण्णः श्रीराघवं दशरथात्मजमित्यादिश्लोकं सङ्गीतमार्गेण अश्रावयत् तदन्ते पुनः सः कस्तूरीतिलकमित्यादिश्लोकोऽपि मम कण्ठस्थोऽस्तीत्यगदत्।

पदार्थाः-

अवसिते	-	अव+षो+क्त, सप्तमी विभक्ति, ए. व. , समाप्त होने पर
उद्दिश्य	-	उत्+दिश्+ल्यप्, उद्देश्य कर।
इत्यपृच्छत्	-	इति+अपृच्छत्-ऐसा पूछा।
प्रत्युवाच	-	प्रति+उवाच-उत्तर दिया (प्रति+ब्रू, लिट्, प्रथमपुरुष, एकवचन)।
स्मयपूर्वकम्	-	स्मयः पूर्व यस्मिन् तत्-मुस्कुराते हुए।
पर्यपृच्छत्	-	परि+अपृच्छत्-पूछा।
व्याहरत्	-	वि+आ+हृ,लङ्‌लकार प्रथमपुरुष एकवचन- कहा।
आह	-	कहा।
श्रृणुमस्तावत्	-	शृणुमः+तावत्-तब तक सुनते हैं।
गायामीति	-	गायामि+इति-गाता हूँ।
अनुपदम्	-	सम्मिलित गायन, बिल्कुल पीछे, तुरत बाद, कदम के साथ।
इत्यादि	-	इति+आदि।
अगदत्	-	गद् णातु लङ्‌लकार प्रथमपुरुष एकवचन- कहा।

अनुवादः-

इस प्रकार पुराण समाप्त होने पर राजा ने शास्त्री को उद्देश्य कर पूछा-क्या यह बालक आपका पुत्र है? शास्त्री ने उत्तर दिया हॉं। महाप्रभु (राजन्)। फिर मुस्कराते हुए राजा ने बालक को सम्बोधित करते हुए पूछा-क्या आप भी पिता की भाँति पुराण का प्रवचन करेंगे? तब उस बालक ने कहा-मैं पुराण का प्रवचन नहीं करता, गीत गाता हूँ। तब राजा ने कहा-ऐसा है, तो तब तक एक गाना सुनते हैं। तुरत ही सुब्बण्ण ने ''श्रीराघवं दशरथात्मजम्" इत्यादि श्लोक संगीत के मार्ग से सुनाया, फिर अन्त में उसने यह भी कहा-मुझे ''कस्तूरीतिलकम्'' इत्यादि श्लोक भी कण्ठ:स्थ है।

अभ्यास प्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   - (क) केन मार्गेण सुब्बण्णः श्लोकम् अश्रावयत्?
   - (ख) कस्मिन् अवसिते राजा शास्त्रिणं प्रश्नम् अपृच्छत् ?
   - (ग) सुब्बण्णः कदा श्लोकं श्रावयामास?
   - (घ) ''एकं गानं श्रृणुमः'' इति कः अकथयत्?
2. **पूर्णवाक्येन प्रश्नान् उत्तरत-**
   - (क) अन्ते सुब्बण्णः किम् अगदत्?
   - (ख) राजा स्मयपूर्वकं किम् अपृच्छत्?
   - (ग) बालः राज्ञः प्रश्नस्य किम् उत्तरम् अयच्छत् ?
3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत-**
   - (क) ''एवमवसिते-इत्यपृच्छत्'' इति वाक्ये किं कर्तृपदम्?
   - (ख) ''प्रारंभे'' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
   - (ग) ''एकं गानम्'' इति अनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?
   - (घ) ''अहं पुराणप्रवचनम् न करोमि'' इत्यस्मिन् वाक्ये ''अहम्'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

मूलपाठः-

महाराजस्य बहु सन्तोषोऽभवत्। एवं परितुष्टो राजा पारितोषिकत्वेन बालाय सताम्बूलमुत्तरीयवस्त्रं दत्वा, हे वत्स, त्वं मेधाव्यसि, सुष्ठु सङ्गीतं शिक्षित्वा सम्यग्गातुं भवान् अभ्यस्यतु। इतोऽप्यधिकं पारितोषिकं भवते वयं दास्याम इति बालकमुक्त्वा पुनश्च शास्त्रिणमुद्दिश्य भोः शास्त्रिणः कुमारः चतुरोऽस्ति। शिक्षणं सम्यक् क्रियताम्। प्रायः महाकुशलो भविष्यतित्यशंसत्। तदनन्तरं शास्त्री च पुत्रश्च स्वगृहाय संन्यवर्तेताम्।

पदार्थाः-

सन्तोषोऽभवत्	-	सन्तोषः+अभवत्-संतोष हुआ।
परितुष्टः	-	परि+तुष्+क्त-संतुष्ट।
पारितोषिकत्वेन	-	पुरस्कार के रूप में।
सताम्बूलम्	-	ताम्बूलेन सहितम्-पान के साथ।
उत्तरीयवस्त्रम्	-	ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र।

मेधाव्यसि	–	मेधावी+असि।
सुष्ठु/सम्यक्	–	अच्छी तरह से।
शिक्षित्वा	–	शिक्ष्+क्त्वा–सीखकर।
अभ्यस्यतु	–	अभ्यास करें।
इतोऽप्यधिकम्	–	इत:+अपि+अधिकम्–इससे भी अधिक।
उक्त्वा	–	ब्रू+क्त्वा–कहकर।
भविष्यतीत्यशंसत्	–	भविष्यति+इति+अशंसत्–होगा ऐसा कहा।
संन्यवर्तेताम्	–	सम्+नि+वृत्, लङ्लकार, प्रथमपुरुष द्विवचन – लौट गए।

अनुवाद:-

महाराज को अत्यधिक संतोष हुआ। इस प्रकार संतुष्ट राजा ने बालक को पुरस्कार के रूप में पान के साथ उत्तरीयवस्त्र देकर कहा–बेटे! तुम मेधावी हो, अच्छी तरह संगीत सीखकर अच्छी तरह गाने का अभ्यास करो। मैं तुम्हें इससे भी अधिक पुरस्कार दूँगा, ऐसा बालक को कहकर पुन: शास्त्री से कहा–ओ शास्त्री जी! यह बच्चा चतुर है। इसकी अच्छी तरह शिक्षा–दीक्षा का प्रबन्ध करें। मुझे उम्मीद है कि यह अत्यन्त निपुण होगा– ऐसा कहा। तब शास्त्री और पुत्र अपने घर लौट गए।

अभ्यासप्रश्ना:-

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) कस्य बहु संतोष: अभवत्?
   (ख) कुमारस्य किं सम्यक् क्रियताम् ?
   (ग) राजा कस्मै उत्तरीयवस्त्रं दत्तवान् ?
   (घ) क: परितुष्ट: अभवत्?
2. **पूर्णवाक्येन प्रश्नान् उत्तरत–**
   (क) राजा शास्त्रिणं किम् अकथयत्?
   (ख) राजा बालाय पारितोषिकत्वेन किम् अयच्छत्?
3. **यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत–**
   (क) ''भवान् अभ्यस्तु'' इति वाक्ये लक कर्तृपदम्?
   (ख) ''अल्पम्!'' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
   (ग) ''संतुष्टो राजा'' इति अनयो: पदयो: किं विशेष्यपदम्?
   (घ) ''त्वम् मेधाव्यसि'' इत्यस्मिन् वाक्ये ''त्वम्'' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

परामर्शा:-

1. कथा की रोचकता बनाए रखते हुए सरल संस्कृत भाषा में सारांश बताएँ।
2. पाठ में आए क्लिष्ट व्याकरणांशों का स्पष्टीकरण अन्य समानार्थक उदाहरणों द्वारा करें।
3. प्रसिद्ध संगीतज्ञों के बारे में जानकारी एकत्र कर उनपर परियोजना–कार्य करने का छात्रों को निर्देश दें।
4. दृढ़निश्चय से ही सफलता प्राप्त होती है, इस तरह की अन्य कथाएँ पढ़कर कक्षा में वाचन का निर्देश

छात्रों को दें।

अनुभव-विस्तारः-

किसी व्यक्ति के लिए स्वयं की अन्तर्निहित क्षमता को पहचान कर उस क्षेत्र को अपनी आजीविका अथवा शौक के लिए चुनने से सफलता तो मिलती ही है, साथ ही गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।

वस्त्रविक्रयः

(नवमपाठः)

पाठपरिचयः

प्रस्तुत पाठ पण्डित मथुराप्रसाददीक्षित रचित 'भारतविजयनाटकम्' के प्रथम अंक से संग्रहीत है। अंग्रेजी शासन में किस प्रकार भारत की कार्य-कुशलता को आघात पहुँचाकर अर्थव्यवस्था को क्षत-विक्षत करने का प्रयास किया गया। इसका अनुमान पाठ को पढ़कर लगाया जा सकता है। मुगल बादशाह आलम से बंगाल व विहार की मालगुजारी वसूलने का अधिकार प्राप्त कर गौराङ्ग अधिकारी प्रजा पर अत्याचार करता है। भारतीय जुलाहों के अत्यंत कीमती वस्त्रों कम दामों पर खरीदता है जिससे वे गरीबी की मार झेलने को विवश हो जाते हैं।

पाठोद्देश्यानि

1. अभिनय के माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना
2. भावपूर्ण संवादों के माध्यम से प्रभावपूर्ण सम्प्रेषण शैली का विकास करना।
3. तात्कालिक परिस्थितियों में भारतीय कारीगरों के आर्थिक शोषण को उजागर करना।
4. नाट्यरूपान्तरण के माध्यम से कठिन परिस्थितियों में भी आत्म-सम्मान की रक्षा हेतु प्रेरित करना।

मूलपाठः

(ततः प्रविशन्ति पटं विक्रेतुं क्रेतुं च कश्चित्तन्तुवायः श्रेष्ठिनौ च)

श्रेष्ठी - तन्तुवाय! किमस्य पटस्य मूल्यम्?

तन्तुवायः - विंशत्यधिकं शतम्।

श्रेष्ठी - नहि, नहि, किञ्चिदधिकमेतत्। शतं मूल्यं गृह्णीष्व (ततः प्रविशति सानुचरो वैदेशिको गौराङ्गः। स राजमुद्राङ्कितप्रमाणपत्रं दर्शयित्वा श्रेष्ठिनौ तन्तुवायञ्च भर्त्सयति)।

वै. गौराङ्गः - तन्तुवाय! पश्य राजमुद्राङ्कितं प्रमाणपत्रम्। न त्वं विक्रेतुं प्रभुः।

तन्तुवायः - तर्हि किमहमेनं पटं कुर्याम्?

वै. गौराङ्गः - इमं पटं मह्यं देहि, अहमेनं पटं विक्रेष्ये, गृह्णीष्व इमाः पञ्चाशन्मुद्राः। (इति पञ्चाशन्मुद्रां ददाति)।

तन्तुवायः - (साश्चर्यमिव पश्यन्) किमिवं विधीयते? कथमेतेन मम कुटुम्बस्य भरणपोषणे भविष्यतः। षड्भिर्मासैः कथमपि रात्रिन्दिवं परिश्रम्य निष्पादितोऽयं पटः।

वै. गौराङ्गः - इमा मुद्रा गृह्णीष्व, नाहं किमपि जानामि। मौनमास्स्व, गच्छ। अपरञ्च पटं निर्माय मत्समीप एवानय। युष्मत्कुटुम्बरक्षायै च प्रतिज्ञा कृता मया। कथं रक्षा भवेदेतत् त्वं जानीहि व्रजाधुना। (स मुद्रा न गृह्णाति अथापरस्तन्तुवायः पटविक्रयार्थं प्रविश्य पटक्रयार्थं श्रेष्ठिनं लक्षयति)।

पदार्थः –

विक्रेतुम् (वि + क्री + तुमुन्) = बेचने के लिए, **श्रेष्ठिनौ** (श्रेष्ठ + इनि श्रेष्ठिन्, प्रथमा विभक्ति द्वि वचन) = दो सेठ, **पटस्य** = वस्त्र का, **गृह्णीष्व** (ग्रह् धातु, आत्मनेपदे, लोट् मध्यमपुरुष एकवचन) = ग्रहण करो/ले लो, **सानुचरः** (अनुचरेण सहितः) = सेवक के साथ, **राजमुद्राङ्कितम्** = राजा की मोहर से चिह्नित, **भर्त्सयति** = डाँटता है, **रात्रिन्दिवम्** (रात्रिः च दिवसश्च) = रात-दिन, **निष्पादितः** (निस् + पद् + णिच् + क्त) बनाया है, मौनम् **आस्स्व** (आस् धातु + लोट् + मध्यम पुरुष) = चुप रहो, **व्रजाधुना** (व्रज + अधुना) = अव जाओ, **अथापरस्तन्तुवायः** (अथ + अपरः + तन्तुवायः) = तब कोई दूसरा जुलाहा (बुनकर)

सरलानुवादः –

(तब वस्त्र बेचने व खरीदने के लिए कोई जुलाहा व दो सेठ प्रवेश करते हैं)।

सेठ – अरे जुलाहे! इस वस्त्र का मूल्य क्या है?

जुलाहा – एक सौ बीस (मुद्राएँ)।

सेठ – नहीं, नहीं, ये थोड़ा अधिक है। सौ (मुद्राएँ) मूल्य रूप में ग्रहण करो।

(तब विदेशी गौरांग अपने सेवक के साथ प्रवेश करता है। वह राजमुद्रा से चिह्नित प्रमाणपत्र दिखाकर दोनों सेठों व जुलाहे को डाँटता है।)

वै. गौरांग – अरे जुलाहे! राजमुद्रा से चिह्नित प्रमाणपत्र देखो। तुम बेचने के अधिकारी नहीं हो।

जुलाहा – तो मैं इस वस्त्र का क्या करूँ?

वै. गौरांग – यह वस्त्र मुझे दे दो, मैं इस वस्त्र को बेचूँगा। ये पचास मुद्राएँ ग्रहण करो। (यह कहकर पचास मुद्राएँ दे देता है)।

जुलाहा – आश्चर्य से देखते हुए) यह क्या किया जा रहा है? इससे मेरे परिवार का भरण व पोषण कैसे होगा। छः मास में दिन-रात मेहनत करके किसी प्रकार यह वस्त्र बनाया था।

वै. गौरांग – ये मुद्राएँ लो, मैं कुछ नहीं जानता, चुप रहो, जाओ। तथा दूसरा वस्त्र बनाकर मेरे पास ही लाओ। तुम्हारे परिवार की रक्षा के लिए मेरे द्वारा प्रतिज्ञा नहीं की गयी है। कैसे रक्षा हो, ये तुम ही जानो,

(वह मुद्राएँ नहीं लेता, तब तक दूसरा जुलाहा वस्त्र बेचने के लिए प्रवेश करके वस्त्र खरीदने के लिए (आए हुए) सेठ को देखता है।)

विमर्शः –

वैदेशिक गौरांग (अंग्रेज) बंगाल में वस्त्रों के क्रय-विक्रय हेतु सम्राट से अधिकार पत्र प्राप्त कर लेता है तथा इस पत्र का लाभ उठाकर अपनी मनमानी करता है। जुलाहों व व्यापारियों का शोषण करता है। अंग्रेजों द्वारा तत्कालीन भारतीय अर्थव्यवस्था के मुख्य स्तम्भ वस्त्र व्यापार का ह्रास किए जाने का मार्मिक नाट्य रूपान्तरण यहाँ प्रस्तुत है।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**

(क) कः राजमुद्राङ्कितं प्रमाणपत्रं दर्शयति?

(ख) तन्तुवायः पटस्य किं मूल्यं वदति?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत

(क) तन्तुवायेन पटः कथं निष्पादितः?

(ख) गौराङ्गः प्रविश्य तन्तुवायं किं वदति?

3. यथानिर्देशम्

(क) 'सानुचरः' इति विशेषणपदस्य अत्र किं विशेष्यम्?

(ख) 'विक्रेष्ये' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ग) 'स्वामी' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्।

मूलपाठः

तन्तुवायः - **श्रेष्ठिन्! गृहाण पटम्।**

श्रेष्ठी - **(भ्रूसंज्ञया) अयं क्रेष्यति। नाहं क्रेतुं शक्नोमि।**

तन्तुवायः - **कस्मात्?**

श्रेष्ठी - **अस्य समीपे राज्ञः प्रमाणपत्रम् अयमेव क्रेष्यति, नापरः।**

वै. गौराङ्गः - **इत आगच्छ। (तन्तुवायमाह्वयति, प्रमाणपत्रं दर्शयति। पटं गृह्णाति) गृहाणेमाश्चत्वारिंशन्मुद्राः। (इति मुद्रा ददाति।)**

तन्तुवायः - **महाराज! किमिवं विधीयते? किमयमेव न्यायः?**

वै. गौराङ्गः - **गच्छ गच्छ! नाहं न्यायमन्यायं वा जानामि। यन्मया निश्चीयते दीयते च तदेव मूल्यम्। उभौ तद्दत्तं मूल्यं गृह्णीतः)।**

उभौ तन्तुवायौ - **नातः परं पटं निर्मास्यावः (इत्युक्त्वा गच्छतः)**

वै. गौराङ्गः - **(अनुचरमुद्दिश्य) पश्य! एताभ्यां वह्वीर्मुद्रा ग्रहीष्ये। अनिर्वचनीयम् एतत्पटयोः सौन्दर्यम्। अतिसूक्ष्मतरोऽयं पटः। पश्य, एतस्य पञ्चषैः पटलैः परिवेष्टितमप्यपटमेव - प्रतीयतेऽङ्गम्। आः कथमेतत्समक्षमस्तद्देशीयानां पटानां विक्रयो भविष्यति, इति हतमस्मद्देशीयं बाणिज्यम्।**

(पुनर्विचिन्त्य)

एतत्सूक्ष्मपटस्य निर्मितविधेरुन्मूलनेऽहं क्षमो
निर्मातृनिह दण्डताडनपरस्तान् मोचयिष्याम्यतः।
कौशल्यं ह्रियतामधसतदधिकं वाणिज्यमत्युन्नतं
वेशस्यास्य समुन्नतिर्जनकथामात्रे समाधीयताम्॥

अन्वयः -

अहम् एतत् सूक्ष्मपटस्य निर्मितविधेः उन्मूलने क्षमः अतः दण्डताडनपरः तान् निर्मातृन् इह मोचयिष्यामि। (एतेषां) कौशल्यम् अधः ह्रियताम् तत् वाणिज्यम् अधिकम् अत्युन्नतम् भविष्यति। अस्य देशस्य समुन्नतिः जनकथामात्रे समाधीयताम्।

पदार्थः –

भ्रूसंज्ञया (भ्रुवोः संज्ञया, षष्ठी तत्पुरुष) = भौहों के इशारे से, **इत आगच्छ** (इतः + आगच्छ), **गृहाणेमाश्चत्वारिंशन्मुद्राः** (गृहाण + इमाः + चत्वारिंशत् + मुद्राः), **महाराज** (महान् चासौ राजा, कर्मधारय), गच्छ (गम् + लोट् + मध्यमपुरुष, एकवचन) = जाओ, **निश्चीयते** (निस् + चि + कर्मणि लट्) = निश्चित किया जाता है। **तद्दत्तं** (तेन दत्तं, तृतीया तत्पुरुष) = उसने दिया, **निर्मास्यावः** (निर् + मा + लृट् + उ. द्वि.) = निर्माण करेंगे, **उद्दिश्य** (उत् + दिश् + ल्यप्) = उद्देश्य करके, **ग्रहीष्ये** (ग्रह + लृट् + उ. ए.) = ग्रहण करुँगा, **अनिर्वचनीयम्** (नञ् + निर् + वच् + अनीयर) = **अवर्णनीय, परिवेष्टितमप्यपटमेव** (परिवेष्टिजमत् + अपि + अपटम् + एव, परि + विष् + क्त) = ढका हुआ भी वस्त्ररहित ही, **एतत्सूक्ष्मपतस्य** (एतस्य सूक्ष्मपटस्य, कर्म.), **निर्मितिविधेरुन्मूलनेऽहं** (निर्मितिविधेः + उन्मूलने + अहम्) = निर्माण विधि को जड़ से उखाड़ने में मैं, **मोचयिष्यामि** (मुच् + णिच् + लृट् + उ. ए.), **ह्रियताम्** ('हृ' कर्मणि लोट् प्र. ए.) = हरण किया जाय, **जनकथामात्रे** (जनानां कथामात्रे, ष. त.)

सरलानुवादः –

जुलाहा – सेठ जी! वस्त्र ले लो।
सेठ – (भौहों के इशारे से) यह खरीदेगा। मैं नहीं खरीद सकता।
जुलाहा – किस कारण से (क्यों)?
सेठ – इसके पास राजा का प्रमाणपत्र है, यह ही खरीदेगा, कोई और नहीं।
वै. गौरांग – इधर आओ। (जुलाहे को बुलाता है प्रमाणपत्र दिखाता है, वस्त्र ले लेता है। ये चालीस मुद्राएँ ले लो (इस प्रकार मुद्राएँ देता है)
जुलाहा – महाराज! यह क्या कर रहे हो? क्या यही न्याय है।
वै. गौरांग – जाओ, जाओ। मैं न्याय या अन्याय नहीं जानता। जो मैंने निर्धारित किया और दिया वही मूल्य है। (दोनों उसका दिया मूल्य ले लेते हैं)
दोनों जुलाहे – इसके बाद वस्त्र नहीं बनाएँगे (ऐसा कहकर चले जाते हैं)
वै. गौरांग – (सेवक को लक्ष्य करके) इनसे बहुत सारी मुद्राएँ कमाऊँगा इन वस्त्रों का सौन्दर्य अवर्णनीय है। यह वस्त्र अत्यन्त महीन है। देखो, इसकी पाँच छः परतों से ढका हुआ होने पर भी ऐसा प्रतीत होता है, मानो अङ्ग पर वस्त्र है ही नहीं। अरे, कैसे इसके सामने हमारे देश (में बने) वस्त्रों का विक्रय होगा। इसलिए हमारे देश का व्यापार विफल हुआ।

(फिर सोचकर)

इस वस्त्र के निर्माण की विधि को जड़ से उखाड़ने में मैं समर्थ हूँ। उन कारीगरों को मारपीटकर यहाँ से भगा दूँगा। निपुणता हर ली जाए तो व्यापार अधिक उन्नत होगा। इस देश की उन्नति तो केवल लोगों की कथाओं में रह जाएगी।

विमर्शः –

(क) भारतीय रेशमी वस्त्र इतना कोमल व महीन था कि उसकी पाँच-छः परतों से ढका हुआ अंग भी वस्त्र. रहित ही प्रतीत होता था।

(ख) यहाँ अंग्रेजों की मनोदशा व रणनीति की ओर भी स्पष्ट संकेत है। भारतीय वस्त्र की तुलना में यूरोपीय

वस्त्र के कम गुणवत्तापूर्ण होने के कारण वह वस्त्र यहाँ बिक नहीं पा रहा था। अपने वस्त्र की बिक्री बढ़ाने के लिए उन्होंने भारतीय बुनकरों व व्यापारियों को वस्त्र निर्माण व व्यापार के प्रति हतोत्साहित करके भारतीय वस्त्र उद्योग को नष्ट किया।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**

(क) कस्य समीपे राज्ञः प्रमाणपत्रम् अस्ति?

(ख) कः वस्त्रं क्रेतुं न शक्नोति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

(क) तन्तुवायौ गौराङ्गं किं वदतः?

(ख) गौराङ्गः कति मुद्राः ददाति?

3. **यथानिर्देशम्**

(क) 'शक्नोमि' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ख) 'अन्यः' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(ग) 'अयं क्रेष्यति' इत्यत्र 'अयम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

मूलपाठः

दौवारिकः - (प्रविश्य) जयतु जयतु देवः।

वै. गौराङ्गः - दौवारिक! सत्वरं त्रिचतुरांस्तन्तुवायान् समानय।

दौवारिकः - यद्देव आज्ञापयामि। (बहिर्गत्वा त्रीन् तन्तुवायान् समानीय प्रविशति)।

वै. गौराङ्गः - (तन्तुवायुद्दिश्य) भो भो! यूयं निर्मितान् पटान् मह्यं दत्त।

तन्तुवायाः - न वयमयोग्यमूल्यत्वात् पटं निर्मामः।

वै. गौराङ्गः - अस्तु शोभनं पटं निर्माय मह्यं दत्त, योग्यं मूल्यं भविष्यति, गृहाण इमाः मुद्राः (इति पञ्चदशमुद्रा ददाति, ते न गृह्णन्ति, हठात्तेषां वसने निबध्य गलहस्तेन निष्कासयति)।

तन्तुवायाः - (द्वारि स्थिताः) महाराज! न वयं शतमूल्यं पटं पञ्चदशभिरेव मुद्रायिर्निर्मा स्यामः।

वै. गौराङ्गाः - (सापेक्षम्) क इमे कोलाहलं कुर्वन्ति (द्वारि गत्वा सामर्षम्, कशया तांस्ताडयति।) गच्छत अपरं शोभनं पटं निर्माय समानयत (मुद्राः प्रक्षिप्य ते गच्छन्ति)।

वै. गौराङ्गाः - (अनुचरमुद्दिश्य) भो! भो! अपरांस्त्रिचतुरांस्तन्तुवायानानयत। (स निर्गत्य चतुरस्तन्तुवायानानीय) महाराज! एते समागताः।

वै. गौराङ्गः - तन्तुवायानभिलक्ष्य) निर्मितान् कौशेयपटान् मीं दत्त।

तन्तुवायाः - न वयं पटान्निर्मामः।

वै. गौराङ्गः - मिथ्येतत्। यूयं पटान्निर्माय श्रेष्ठिनां सविधे। विक्रीणीध्वे। (सर्वान् कशया ताडयितुं भर्त्सयति) न वयं निर्मामः (इति बहदहस्तपुटाः कम्पन्ते।) (निष्क्रान्ताः सर्वे)

पदार्थः -

अयोग्यमूल्यत्वात् (न योग्यमूल्यत्वात्) = अनुचित कीमत के कारण, **हठात्** = जिद के कारण, **गलहस्तेन** (गले हस्तेन) = गले में हाथ डालकर, **अपरास्त्रिचतुरांस्तन्तुवायानानयत** (अपरान् + त्रिचतुरान् + तन्तुवायान + आनयत) = दूसरे तीन चार कपड़े बुनने वालों को (जुलाहों को) लाओ। **विक्रीणीध्वे** (वि + क्री + लट् म. पु. बहुवचन) = बेचते हो। **सामर्षम्** (आमर्षेण सहितम्) = क्रोध सहित।

अनुवाद -

दौवारिकः	-	(प्रवेश करके) महाराज की जय हो।
वै. गौरांग	-	हे द्वारपाल! शीघ्र ही तीन चार जुलाहों को लाओ।
दौवारिक	-	जैसी महाराज की आज्ञा। (बाहर जाकर तीन जुलाहों को लाकर प्रवेश करता है।)
वै. गौरांग	-	(जुलाहों को उद्देश्य करके) अरे अरे! तुम सबने जो वस्त्र बनाए हैं उन्हें मुझे दो।
तन्तुवाय	-	हम अनुचित मूल्य के कारण वस्त्र नहीं बनाते हैं।
वै. गौरांग	-	ठीक है, अच्छे कपड़े बनाकर मुझे दो, योग्य मूल्य होगा (मिलेगा) ये मुद्राएँ ग्रहण करो (ऐसा कहकर पंद्रह मुद्राएँ देता है) वे स्वीकार नहीं करते, हठपूर्वक उनके वस्त्रों में बाँधकर, गले में हाथ डालकर निकाल देता है)।
तन्तुवाय	-	(द्वार पर स्थित) महाराज! हम सौ रुपये के वस्त्रों को पन्द्रह मुद्राओं के लिए निर्माण नहीं करेंगे।
वै. गौरांग	-	(हड़काकर) ये कौन शोर कर रहे हैं (द्वार पर जाकर क्रोधपूर्वक, कोड़े से प्रताड़ित करता है) जाओ, दूसरा सुन्दर वस्त्र निर्माण करके लाओ (मुद्राओं को फेंककर वे चले जाते हैं।)
वै. गौरांग	-	(अनुचर को उद्देश्य करके) अरे! अरे! दूसरे तीन-चार बुनकरों को ले आओ। (वह निकलकर तथा चार तन्तुवायों को लाकर) महाराज! ये आ गए।
वै. गौरांग	-	(बुनकरों को लक्षित करके) बनाए हुए रेशमी वस्त्र मुझे दो।
तन्तुवाय	-	हम वस्त्र नहीं बनाते हैं।
वै. गौरांग	-	यह झूठ है। तुम सब वस्त्र बनाकर सेठ जी के पास बेचते हो। (सभी को कोड़े से पीटने के लिए दुतकारता है)
सभी	-	हम वस्त्र नहीं बनाते। (ऐसे हाथ बाँधकर (जोड़कर) काँपते हैं।

(सभी निकल जाते हैं)

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत**

(क) तन्तुवायाः कस्मात् कारणात् पटं न निर्मान्ति?

(ख) वैदेशिकः गौराङ्गः कति मुद्राः ददाति?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत**

(क) गौराङ्गः तन्तुवायान् पटनिर्माणाय कथं प्रेरयति?

(ख) यदा तन्तुवायाः पटं न निर्मान्ति तदा वैदेशिकः गौराङ्गः किं कृतवान्?

3. **यथानिर्देशम्**

(क) 'पञ्चदशभिरेव मुद्राभिः' इत्यत्र विशेष्यपदं किमस्ति?

(ख) 'वस्त्रम्' इत्यस्य किं पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम्?

(ग) 'एते समागताः' अत्र एते इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

अनुभवविस्तारः

प्रस्तुत नाट्य रूपान्तरण तात्कालिक परिस्थितियों में भारतीय बुनकरों द्वारा गुणवत्तापूर्ण कार्य करने पर भी उन पर हुए अत्याचारों का चित्रण करता है। जुलाहों का कम मूल्य पर काम न करना, प्रताड़ना किए जाने पर भी नहीं झुकना, उनके आत्मसम्मान को दर्शाता है। सम-सामयिक जीवन में अपने अधिकार के लिए बोलना, स्वाभिमान की रक्षा करना तथा अत्याचार व शोषण के विरुद्ध नहीं झुकना, इन बातों की प्रेरणा पाठ से ली जा सकती है।

सुझाव यह है कि पाठ संवाद शैली में है अतः अभिनय के समय संवादों में आरोह-अवरोह व भावात्मक शैली होनी चाहिए। तात्कालिक अर्थव्यवस्था प्रणाली तथा आज की भारतीय अर्थव्यवस्था प्रणाली में अन्तर हेतु तालिका बनाई जा सकती है तथा आज की भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के उपायों पर चर्चा व लेखन किया जा सकता है।

यद्भूतहितं तत्सत्यम्

(दशमः पाठः)

पाठ परिचयः-

यह पाठ मूलतः एक शिक्षाप्रद लघुकथा है जो कि डॉ. केशवचन्द्र द्वारा रचित लघुकथासंग्रह 'एकदा' से संकलित है। भारतवर्ष में प्राचीनकाल से ही नानी-दादी की कहानियाँ प्रचलित हैं। इसी प्रकार की एक कथा के माध्यम से सत्य की नई परिभाषा प्रस्तुत की गई है। एक मुनि गाँव वालों को शिक्षा देने के लिए तथा उन्हें जल का महत्त्व समझाने के लिए बालक के असत्य का आश्रय लेते हैं। जल की बावड़ी लोगों के परिश्रम से पूर्णतः स्वच्छ हो जाती है। बालक के एक झूठ से सम्पूर्ण गाँव का उद्धार होता है। इस प्रकार मुनि सत्य की परिभाषा सिद्ध करते हैं कि जो लोगों के हित में हो, वही सत्य होता है।

पाठोद्देश्यानि-

1. छात्रों को लोककल्याण के लिए प्रेरित करना।
2. छात्रों को सत्य की एक पूर्ण परिभाषा से अवगत कराना।
3. कथा विधा के माध्यम से छात्रों की भाषा को समृद्ध बनाना।
4. लघु- लघु वाक्यों के माध्यम से छात्रों को कथा लेखन के लिए प्रेरित करना।

1. मूलपाठः

एकस्मिन् ग्रामोपान्ते पद्मिनी नाम्नी एका पुष्करिणी आसीत्। तत्र ग्रामस्य जनाः स्नानं कुर्वन्ति। वसनं क्षालयन्ति। तस्या एव जलमानीय पिबन्ति, पाकादिकर्म च कुर्वन्ति। तत्रैव गोमेषच्छागादीनां स्नानमपि सम्पादयन्ति। पुष्करिणीं परितः नाना वृक्षाः सन्ति। केचन वृक्षाः तटसंलग्नाश्च वर्तन्ते। पुष्करिण्याः अपरभागे एकः आश्रमः अस्ति। तत्र एको मुनिः निवसति। सोऽपि तर्पणादिकं कर्म तत्र करोति। सः जनान् अनुनयति। वारं वारमपि उपदिशति। परं न कोऽपि तस्य वचनं शृणोति। एकदा मुनिः चिन्तामग्नः- केन प्रकारेण इमे जनाः बोधयितव्याः? तत् प्रदूषितं जलं पीत्वा जना अपि रुग्णा भवन्ति। कथं च इमे वारणीयाः...?

पदार्थाः-

ग्रामोपान्ते- (ग्रामस्य उपान्ते) (ष.त.) गाँव के पास, **पुष्करिणी-** बावड़ी, **वसनं-** वस्त्र, **क्षालयन्ति-** (क्षाल् + लट्) धोते हैं।, **पाकादिकर्म-** खाना बनाना इत्यादि, **तत्रैव-** (तत्र+एव) वहीं पर, **गोमेषच्छागादीनां-** (गावः च मेषाः च छागाः च तेषाम्) गाय, भेड़, बकरी आदि के, **तटसंलग्नाः-** तट से सटे हुए, **अपरभागे-** दूसरे भाग में, **अनुनयति-**(अनु+नी+लट्) निवेदन करता है, **कोऽपि-**(कः+अपि), **चिन्तामग्नः-** (चिन्तायाम् मग्नः) (स.त.) चिन्ता में डूबा हुआ, **बोधयितव्याः**-बुध्+णिच्+तव्यत् (समझाया जाए), **पुष्करिणीतः-** (पुष्करिणी+तसिल्), **पङ्कोद्धारः**-कीचड़ की सफाई, **वारणीयाः-** (वृ+णिच्+ अनीयर्) रोके जाएँ, **भर्त्सयन्ति-** डाँटते हैं, प्रतारयति-(प्र+तृ+णिच्+लट्) ठगता है।

सरलानुवादः-

एक गाँव के पास पद्मिनी नाम की एक बावड़ी थी। वहाँ गाँव के लोग स्नान करते, कपड़े धोते, उसका जल लाकर पीते तथा भेड़-बकरियों इत्यादि को स्नान भी कराते। बावड़ी के चारों ओर अनेक वृक्ष हैं। कुछ वृक्ष (बावड़ी के) किनारों से सटे हुए हैं। बावड़ी के दूसरे भाग में एक आश्रम है। वहाँ एक मुनि रहते हैं। वह भी तर्पण आदि कर्म (जल चढ़ाना) उसी में करते थे। वह लोगों से (बावड़ी को दूषित न करने के लिए) निवेदन करते, बार-बार उपदेश भी देते परन्तु कोई उनकी बात नहीं सुनता।

एक बार चिन्ता में डूबे हुए मुनि सोच रहे थे-कैसे लोगों को समझाया जाए? बावड़ी से कीचड़ की सफाई नहीं हो रही। प्रतिदिन पानी गन्दा हो रहा है। वह गन्दा पानी पीकर लोग भी बीमार होते हैं। इन्हें कैसे रोका जाए...?

विमर्शः-

गाँव की एकमात्र बावड़ी जो कि लोगों की लापरवाही के कारण दिन-प्रतिदिन प्रदूषित हो रही थी, गाँव में रहने वाला एक संन्यासी उसके उद्धार के लिए चिन्तित है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) पुष्करिणी कुत्र आसीत्?
   (ख) चिन्तामग्नः कः आसीत्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) जनाः पुष्करिण्यां किं किं कुर्वन्ति?
   (ख) जनाः कथं रुग्णाः भवन्ति?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'अनुनयति' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
   (ख) 'तस्य वचनं शृणोति' अत्र तस्य सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ग) 'प्रदूषितम्' इत्यस्य विशेष्यपदं किम्?

2. **मूलपाठः-**

सहसा कोलाहलःश्रुतः। मुनिः बहिरागत्य अपश्यत्। केचन जना एकं बालकं ताडयन्ति। तं च भर्त्सयन्ति। बालकः भयेन कम्पते क्रन्दति च। मुनिः तत्र उपस्थितः। जनान् वारयित्वा अपृच्छत्। किम् अभवत्? किमर्थं भवन्तः एनं ताडयन्ति? जनाः अवदन्। एष मिथ्यावादी। सदैव मिथ्याभाषणं करोति। वृथा सर्वान् प्रतारयति।
सद्यः अस्मान् प्रतारितवान्।
मुनिः बालकम् अपृच्छत्।
अरे! सत्यं न वदसि?
बालकः कम्पितकण्ठेन अवदत्।
सत्यं किम्?
मुनिः तमाश्वासितवान्।
न जानासि? तर्हि मया सह आगच्छतु।

पदार्थाः-

कम्पते-काँपता है, **क्रन्दति**- रोता है, **वारयित्वा-**(वृ+णिच्+क्त्वा), रोककर, **मिथ्यावादी-**झूठ बोलने वाला, **आश्वासितवान्-**(आ+श्वस्+णिच्+क्तवतु), आश्वासन दिया, **बहिरागत्य-**(बहि:+आगत्य) (आ+गम्+ल्यप्) बाहर आकर।

सरलानुवादः-

अचानक शोर सुनाई दिया। मुनि ने बाहर आकर देखा। कुछ लोग बालक को पीट रहे हैं और उसे डाँट भी रहे हैं। बालक डर के करण काँप रहा है तथा रो रहा है। मुनि वहाँ आए, लोगों को रोककर पूछा-क्या हुआ? आप लोग इसे क्यों पीट रहे हैं? लोगों ने कहा- यह झूठा है। हमेशा झूठ बोलता है। सबको व्यर्थ में ठगता है, अभी (इसने) हमें ठगा।

मुनि ने बालक से पूछा।
अरे! (तुम) सच नहीं बोलते।
बालक काँपते हुए कण्ठ से बोला।
सच क्या?
मुनि ने उसे आश्वासन दिया।
नहीं जानते? तो मेरे साथ आओ।

विमर्शः-

मुनि एक मिथ्यावादी बालक की सहायता करता है तथा उसे लोगों से बचाता है। बालक अबोध है, जो सत्य असत्य का भेद नहीं जानता।

अभ्यासप्रश्नाः -

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) कः भयेन कम्पते क्रन्दति च?
   (ख) बालकः कथम् अवदत्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) मुनिः बहिरागत्य किम् अपश्यत्?
   (ख) मुनिः जनान् वारयित्वा किम् अपृच्छत्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'कम्पते' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?
   (ख) 'एनम्' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ग) 'व्यर्थम्' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?

3. **मूलपाठः-**

एवम् उक्त्वा तस्य करं धृत्वा मुनिः आश्रमं प्रति बालकम् आनीतवान्। मुनिः अचिन्तयत् - अयमेव समुचितः समयः। अस्मिन्नवसरे ग्राम्यजनाः अवश्यं शिक्षयितव्याः। ततः मुनिः बालकमपृच्छत्।

-किं तव नाम?
-नाम्नाऽहं कृष्णः।
-भवतु, केन प्रकारेण मिथ्या कथयसि?
-यथेच्छं वदामि।
-तर्हि इमां पुष्करिणीं दृष्ट्वा किमपि कथय।
बालकः कृष्णः प्रसन्नः सञ्जातः। सहर्षं च अवर्णयत्-
जलेऽस्मिन् एको महान् मत्स्यः अस्ति। भोः! जनाः
आगच्छत .... पश्यत........., कीदृशं सः खेलति।
मुनिः अवदत् : साधु.........सम्यक् चिन्तितम्। तर्हि श्वः
प्रभाते ग्राम्यजनान् साधु एतावद् वद।
कृष्णः किञ्चित् कुण्ठितोऽभवत्।
-नहि, ते मां ताडयिष्यन्ति।

पदार्थाः-

अस्मिन्नवसरे-(अस्मिन्+अवसरे), इस बार, **शिक्षयितव्याः** (शिक्ष्+णिच् तव्यत्), सिखाए जाने चाहिएँ। **नाम्ना-**('नाम' तृ.ए.) नाम से, **सञ्जातः** (सम्+जन् +क्त) हो गया, **कुण्ठितोऽभवत्-** (कुण्ठितः + अभवत्) दुःखी हुआ, **यथेच्छम्-** (इच्छाम् अनतिक्रम्य) अव्ययी, इच्छानुसार, **सहर्षं-**(हर्षेण सहितम्) (अव्ययी.) प्रसन्नतापूर्वक।

सरलानुवादः-

ऐसा कहकर, हाथ पकड़कर, मुनि बालक को आश्रम में ले आया। मुनि ने सोचा- 'यही सही समय है।' इस असवर पर गाँव के लोगों को (जल का महत्त्व) अवश्य सिखाना चाहिए। तब मुनि ने बालक से पूछा-

-तुम्हारा नाम क्या है?
-मेरा नाम कृष्ण है।
-अच्छा, किस प्रकार झूठ बोलते हो?
-जैसा अच्छा लगे (वैसा) बोलता हूँ।
-तो इस बावड़ी को देखकर कुछ बोलो।

बालक कृष्ण प्रसन्न हो गया और खुशी से वर्णन करने लगा- इस जल में एक बड़ी मछली है। अरे लोगों! आओ .... देखो........, यह कैसे खेल रही है।

मुनि बोला- अच्छा..... सही सोचा। तो कल प्रातःकाल गाँव के लोगों से ठीक इतना ही कहना।

कृष्ण कुछ दुःखी हुआ।

नहीं, वे मुझे मारेंगे।

विमर्श-

मुनि जल का महत्त्व समझाने के लिए एक बालक के झूठ का आश्रय लेता है, जो पाठ के शीर्षक को न्यायसंगत ठहराता है। अर्थात् जो सभी के हित में हो, वही सत्य है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) मुनिः कम् आश्रमं प्रति आनीतवान्?
   (ख) बालकस्य नाम किम् आसीत्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) मुनिः किम् अचिन्तयत्?
   (ख) बालकः सहर्षं किम् अवर्णयत्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'क्रुद्धः' इत्यस्य पर्यायपदं किम्?
   (ख) 'महान्' इति कस्य विशेषणम्?
   (ग) 'ताडयिष्यन्ति' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

4. मूलपाठः-

-अरे, नहि.........। अनन्तरं मामेव साक्षीकरिष्यसि।
अपरप्रभाते कृष्णः ग्रामस्य प्रतिमार्गं जनान् अवदत्-पुष्करिण्याम्
एको महान् मत्स्यो मया दृष्टः।
केचन अवदन्-
- अरे, त्वं मिथ्यावादी। तव वचने को विश्वासः?
तत् क्षणं कृष्णः उक्तवान्।
तदानीं मया सह मुनिः आसीत्। सोऽपि दृष्टवान्। आगच्छ .... तत्र पृच्छ ....।
मुनिं साक्षीरूपेण स्वीकृत्य ग्राम्यजनाः अपरदिने मत्स्यान्वेषणं कृतवन्तः। अन्ततः सर्वे मिलित्वा पुष्करिणीं प्रविष्टाः। मत्स्यान् च धृतवन्तः। किन्तु महामत्स्यस्य सन्धानं न प्राप्तम्। दिनपूर्णं ते अन्विष्टवन्तः। सायंकाले नितरां विरक्ताः अभवन्। मुनिमुपगम्य सरोषमवदन्-किं भवानपि अस्मान् प्रतारयति?

पदार्थाः

साक्षीकरिष्यसि-गवाह बनाओगे, **अपरदिने**-(अपरस्मिन् दिने) (कर्म.) दूसरे दिन, **मत्स्यान्वेषणं**- (मत्स्यस्य अन्वेषणं) (ष.त.), **प्रविष्टा**- (प्र+विश्+क्त+ टाप्), **सन्धानं**-सम्+धा+ल्युट् (सुराग), **विरक्ताः**- (वि+रञ्ज्+क्त) उदासीन, **सरोषम्**-(रोषेण सहितम्), अव्ययी. गुस्से के साथ।

सरलानुवादः-

अरे नहीं.......। बाद में मुझे ही गवाह बनाओगे। अगली सुबह कृष्ण ने गाँव के प्रत्येक मार्ग में लोगों से कहा-मैंने बावड़ी में एक बड़ी मछली देखी।
कुछ बोले-
-अरे तुम झूठे हो। तुम्हारी बात में कैसा विश्वास?
तभी कृष्ण बोला-
-तब मेरे साथ मुनि थे। उन्होंने भी देखा।

आओ...........वहाँ पूछ लो।

मुनि को साक्षी मानकर गाँव के लोगों ने अगले दिन मछली को ढूँढा। अन्त में सभी ने मिलकर बावड़ी में प्रवेश किया और मछलियों को पकड़ा। बड़ी मछली का कोई सुराग नहीं मिला (भेद नहीं मिला) उन्होंने पूरा दिन ढूँढा। शाम के समय अत्यन्त उदासीन हो गए।

मुनि के पास जाकर गुस्से से बोले–

क्या आप भी हमें ठग रहे हो? (परेशान कर रहे हो)

विमर्शः–

मुनि ने बालक की सहायता से बावड़ी को साफ करवाने की युक्ति लगाई।

अभ्यासप्रश्नाः–

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) के पुष्करिणीं प्रविष्टाः?
   (ख) कस्य सन्धानं न प्राप्तम्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) कृष्णः ग्रामस्य प्रतिमार्गं जनान् किम् अवदत्?
   (ख) मुनिमुपगम्य जनाः सरोषं किम् अवदन्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत–**
   (क) 'त्वं मिथ्यावादी' इत्यत्र त्वं सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ख) 'तदानीं मया सह मुनिः आसीत्।' अत्र क्रियापदं किम्?

5. मूलपाठः–

मुनिः धीरभावेन अवदत्। – अरे! महामत्स्यः किं सरलतया धर्तुं शक्यते?। तदर्थं श्रमः आवश्यकः। श्वः प्रभाते बन्धच्छेदं कृत्वा जलं निष्कासयत।

तद्रात्रौ ग्राम्यजनानां नेत्रयोः निद्रा नास्ति। ते प्रातरागत्य प्रथमतः तटवर्तिवृक्षाणां छेदनं कृतवन्तः। बन्धच्छेदं कृत्वा जलं च बहिष्कृतवन्तः। एवं प्रकारेण कति दिनानि व्यतीतानि। ततः पङ्कोद्धारं कृत्वा पुष्करिणीं गभीरां कृतवन्तः। पङ्कं च आनीय शस्यक्षेत्रे प्रसारितवन्तः – इत्थं निदाघकालः उपगतः। सहसा वृष्टिरभवत्। पुष्करिण ी च पूर्णा संजाता। निर्मलं जलं दृष्ट्वा सर्वे प्रसन्नाः अभवन्। तटानां परिष्करणेन सर्वत्र सौविध्यमनुभूतम्।

पदार्थाः–

बन्धच्छेदं–(बन्ध+छेदं) किनारे तोड़कर, **निष्कासयत**– निस्–कस्+णिच्+ लोट् (निकाल दो), **महामत्स्यः**– महान् चासौ मत्स्यः (कर्म.), **धीरभावेन**–धीरेण भावेन, **तटवर्तिवृक्षाणां**– तटवर्तिनां वृक्षाणाम् (कर्म.), **गभीरां**–गहरी, **निदाघकालः**– गर्मी का समय, **परिष्करणेन**–साफ सफाई से।

सरलानुवादः–

मुनि शान्तभाव से बोले–

अरे! क्या बड़ी मछली आसानी से पकड़ी जा सकती है। उसके लिए परिश्रम आवश्यक है। कल प्रातः (बावड़ी के) किनारे तोड़कर जल निकाल दो।

तब रात्रि में लोगों की आँखों में नींद नहीं आई। उन्होंने प्रातः आकर सबसे पहले बावड़ी के तट के वृक्षों को काट दिया। किनारों को तोड़कर पानी बाहर निकाल दिया। इस प्रकार कुछ दिन बीत गए। तब कीचड़ को निकालकर बावड़ी को गहरी कर दिया और कीचड़ को लाकर खेत में फैला दिया। इस प्रकार गर्मियों का समय बीत गया। अचानक वर्षा हुई। बावड़ी (जल से) पूर्ण हो गई। साफ पानी को देखकर सभी प्रसन्न हो गए। तटों की साफ सफाई से सभी जगह सुविधा हो गई।

विमर्श–

मुनि की युक्ति से जल की प्रदूषित बावड़ी का उद्धार हुआ तथा गाँव का एकमात्र जल का स्रोत निर्मल हो गया।

अभ्यासप्रश्नाः–

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) रात्रौ केषां नेत्रयोः निद्रा नास्ति?
   (ख) ग्राम्यजनाः कां गभीरां कृतवन्तः?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) मुनिः धीरभावेन किम् अवदत्?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत–**
   (क) 'दिवसे' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?
   (ख) 'निर्मलं जलम्' अनयोः पदयोः विशेष्यपदं किम्?
   (ग) 'ते' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (घ) 'अभवन्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

6. मूलपाठः–

–इतः यदि कश्चित् जलं दूषयिष्यति सः दण्ड्यो भविष्यति। एकदा मुनिः एकस्मिन् तटे कृष्णं दृष्ट्वा आकारितवान्। तम् आश्रममानीय अपृच्छत्–

–अरे, कृष्ण! सत्यं किं ज्ञातं न वा?

–न ज्ञातम्।

–अरे! सत्यकथनेन केवलं सत्यं न भवति। यत् कल्याणकरं वचनं तदपि सत्यम्।

–पितामही पुलोमजामबोधयत्। अत एव अस्माकं शास्त्रे वर्तते–सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यादपि हितं भवेत्।
यद्भूतहितमत्यन्तमेतत् सत्यं मतं मम॥

पदार्थाः–

दण्ड्यः– (दण्ड+यत्) दण्ड के योग्य आकारितवान्–बुलाया, **अबोधयत्–** (बुध+णिच्+लङ्+प्र.पु. एक.), समझाया, **मतम्–**(मन्+क्त), **श्रेयः**–श्रेष्ठ।

सरलानुवादः-

अब यदि कोई जल को दूषित करेगा (गंदा करेगा) तो वह दण्ड का भागीदार होगा। एक बार मुनि ने एक तट पर कृष्ण को देखकर बुलाया। उसको आश्रम लाकर पूछा।

-अरे कृष्ण! तुमने सत्य को जाना या नहीं।

-नहीं जाना।

-अरे! केवल सच बोलने से ही सच नहीं होता। जो कल्याणकारी होता है, वह भी सत्य होता है।

दादी ने (अपनी पोती) पुलोमजा को समझाया। इसलिए हमारे शास्त्र में (मिलता) है- सच्चे वचन श्रेष्ठ होते हैं (और) सत्य से भी हित होता हो।

मेरे मत के अनुसार जिससे लोगों का अत्यधिक कल्याण हो, वही सत्य है।

विमर्शः-

प्रस्तुत पाठ की कथा से यह सिद्ध होता है कि सत्य वही है जिससे लोगों का कल्याण हो।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

   (क) मुनिः कम् आकारितवान्?

   (ख) कस्य वचनं श्रेयः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

   (क) अस्माकं शास्त्रे किं वर्णितं वर्तते।

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**

   (क) 'आकारितवान्' क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

   (ख) 'अनृतम्' इत्यस्य विपर्ययपदं किम्?

   (ग) 'वचनम्' इत्यस्य विशेषणपदं किम् प्रयुक्तम्?

परामर्शः -

शिक्षक जनकल्याण के कार्यों तथा उनके महत्त्व से अवगत करा सकता है। पाठ में प्रस्तुत की गई सत्य की एक पूर्ण परिभाषा पर कक्षा में परिचर्चा या वादविवाद आयोजित किया जा सकता है। छात्रों को जनकल्याण से प्रेरित कथा लेखन के लिए कार्य दिया जा सकता है।

अनुभवविस्तारः-

'जो यथार्थ रूप में बोला जाता है उसे ही सत्य कहा जाता है' ऐसी एक प्रचलित अवधारणा है, परन्तु यह पूर्ण नहीं है। हमारे अनेक ग्रंथों यथा शाण्डिल्योपनिषद्, शङ्कराचार्य प्रश्नोत्तरी व व्याख्यानमाला इत्यादि में सत्य की परिभाषा में लोकहित की भावना को अनिवार्य रूप से समाहित किया गया है। यह पाठ उसी पक्ष की कथा के माध्यम से उदाहरण सहित व्याख्या करता है। जो सत्य तो है किन्तु लोककल्याण नहीं अपितु लोक अहित करता है, ऐसे सत्य का शास्त्रों में भी निषेध है। सत्य की पूर्ण परिभाषा से अवगत कराना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

स मे प्रियः

(एकादशः पाठः)

पाठपरिचयः-

यह पाठ महर्षि वेदव्यास विरचित 'श्रीमद्भगवद्गीता' के बारहवें अध्याय से संग्रहीत है। भक्तियोग से परिपूर्ण इस अध्याय में श्रीकृष्ण द्वारा भगवद्प्राप्ति के सगुण व निर्गुण मार्गों का वर्णन करते हुए सगुण भक्ति को ही सरलतम व श्रेष्ठ मार्ग बतलाया गया है। संकलित पद्यों में वर्णित विचार वर्तमान समाज हेतु विशेषतः ज्ञानपिपासु छात्रवर्ग के लिए अत्यधिक प्रासंगिक एवं तर्कसंगत हैं। आज मनुष्य स्वयं को सभी कर्मों का ज्ञाता व कर्ता मानकर अहंकार से ग्रस्त है तथा तत्काल ही फलप्राप्ति की लालसा में व्याकुल है। यहाँ कहा गया है कि मनुष्य अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण, निरंतर अभ्यास व संयम से ही सफलता प्राप्त कर सकता है तथा निःस्वार्थ भाव से परोपकार करने वाले, सुख-दुःख में समान रहने वाले, अहंकार रहित, क्षमावान् व दृढ़ निश्चयी मनुष्य ही ईश्वर को प्रिय हैं।

पाठोद्देश्यानि-

- श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित भक्तियोग से परिचय करवाना।
- श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- जीवन में सफलता प्राप्ति हेतु मार्ग सुझाना।
- आदर्श मनुष्य की परिकल्पना का परिचय देना।
- छात्रों को आरोह-अवरोहपूर्वक श्लोक-गायन हेतु प्रेरित करना।

1. मूलपाठः-

श्रीभगवानुवाच
क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम्।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते।
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते।

अन्वयः-

श्रीभगवान् उवाच - अव्यक्तासक्तचेतसाम् तेषाम् क्लेशः अधिकतरः। हि देहवद्भिः अव्यक्ता गतिः दुखम् अवा. प्यते।

तु ये सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः (भूत्वा) अनन्येन योगेन माम् एव ध्यायन्तः उपासते।

पदार्थाः-

उवाच (वच् + लिट् लकार, प्र.पु.एक.) बोले, **अव्यक्तासक्तचेतसाम्** - (अव्यक्ते आसक्तं चेतः येषाम् तेषाम्) निर्गुण ईश्वर में आसक्त है मन जिनका, **देहवद्भिः** - शरीरधारियों के द्वारा, **अव्यक्ता** - निर्गुण ईश्वर से सम्बद्ध, **दुःखम्** - दुःखपूर्वक या कठिनता से, **संन्यस्य** (सम् + नि + अस् + ल्यप्) अर्पण करके, **ध्यायन्तः** -

ध्यान करते हुए, **उपासते** – (उप+आस्+लट् लकार, प्र.पु., बहु.) उपासना करते हैं।

सरलानुवादः-

भगवान् श्रीकृष्ण बोले – जिनका अव्यक्त अर्थात् निर्गुण ईश्वर में मन आसक्त है, उन (साधकों का अपने साधन में) कष्ट अधिक होता है, क्योंकि देहाभिमानियों के द्वारा अव्यक्त-विषयक गति कष्टपूर्वक ही प्राप्त की जाती है।

किंतु जो (साधक) समस्त कर्मों को मुझमें ही अर्पण करके और मेरे पारायण होकर अनन्य संबंध से मेरा ही ध्यान करते हुए मेरी उपासना करते हैं, मैं इस संसार सागर से उनका उद्धार करता हूँ।

विमर्शः-

- इन श्लोकों में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन के इस प्रश्न कि सगुण व निर्गुण ईश्वर के उपासकों में कौन श्रेष्ठतम योगवेत्ता है, का उत्तर देते हैं।
- प्रस्तुत अध्याय के समस्त श्लोक अनुष्टुप् छन्दोबद्ध हैं।
- यहाँ सगुण उपासक के श्रेष्ठतम योगवेत्ता होने का प्रतिपादन है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) केषां क्लेशः अधिकतरः?

(ख) कानि संन्यस्य माम् उपासते?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) देहवद्भिः किं दुःखपूर्वकम् अवाप्यते?

(ख) साधकाः ईश्वरं कथम् उपासते?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत।**

(क) 'कष्टम्' इत्यस्य किं पर्यायपदमत्र?

(ख) 'कर्माणि' इति पदस्य किं विशेषणमत्र?

(ग) 'व्यक्ता' इतिपदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?

2. **मूलपाठः-**

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः।
अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय।

अन्वयः-

मयि एव मनः आधत्स्व, मयि (एव) बुद्धिं निवेशय। अतः ऊर्ध्वं (त्वं) मयि एव निवसिष्यसि, (अत्र) संशयः न (अस्ति)

(ये) इन्द्रियग्रामं संनियम्य सर्वत्र समबुद्धयः (सन्) सर्वभूतहिते रताः (भवन्ति) ते माम् एव प्राप्नुवन्ति।

धनंजय! अथ (यदि त्वम्) चित्तं मयि स्थिरं समाधातुं न शक्नोषि, ततः माम् अभ्यासयोगेन आप्तुम् इच्छ।

पदार्थाः-

आधत्स्व – स्थापित करो/लगाओ, **संनियम्य** – (सम् + नि + यम् + ल्यप्) भली-भाँति वश में करके,

इन्द्रियग्रामम् (इन्द्रियाणां ग्रामम्) इन्द्रियों के समूह को, **समबुद्धयः** – समान बुद्धि वाले मनुष्य, **सर्वभूतहिते** – सर्वेषां भूतानां हिते), **स्थिरम्** – अचल भाव से, **समाधातुम्** – (सम् + आ + धा + तुमुन्) स्थापित करने में।

सरलानुवादः–

(भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को श्रेष्ठ योगी बनने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि हे अर्जुन!) तुम मुझ में ही अपने मन को लगाओ, मुझ में ही अपनी बुद्धि को प्रवेश कराओ। इसके पश्चात् (अर्थात् जब मन एवं बुद्धि पूर्णतया ईश्वर प्राप्ति में लग जाएंगे) तुम मुझमें ही निवास करोगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

जो मनुष्य अपनी इंद्रियों के समूह को भली-भाँति वश में करके सब जगह समान बुद्धि रखते हुए सभी प्राणियों के हित में लगे रहते हैं, वे मुझको ही प्राप्त करते हैं।

हे धनंजय! अब यदि तुम अपने चित्त अर्थात् मन व बुद्धि को मुझमें स्थापित करने में समर्थ नहीं हो, तब तुम मुझे अभ्यासयोग से ही प्राप्त करने की इच्छा रखो।

विमर्शः–

- सगुण भक्ति की प्रशंसा करते हुए यहाँ भगवत्प्राप्ति हेतु समर्पणयोग व अभ्यासयोग का वर्णन किया गया है।

अभ्यासप्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

(क) मयि किं आधत्स्व?

(ख) बुद्धिं कुत्र निवेशय?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) श्रीकृष्णं के प्राप्नुवन्ति?

(ख) अर्जुनः ईश्वरम् अभ्यासयोगेन कदा प्राप्तुम् इच्छतु?

3. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

(क) अत्र 'मयि' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(ख) 'लग्नाः' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

(ग) 'निवेशय' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

3. मूलपाठः–

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी।

अन्वयः–

अभ्यासात् ज्ञानं श्रेयः, ज्ञानात् (अपि) ध्यानं विशिष्यते, ध्यानात् कर्मफलत्यागः (श्रेयः)। हि त्यागात् अनन्तरं शान्तिः (प्राप्यते)।

सर्वभूतानाम् अद्वेष्टा मैत्रः करुणः निर्ममः निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी एव च (मे प्रियः वर्तते)।

पदार्थाः-

श्रेयः - श्रेष्ठ, कर्मफलत्यागः (कर्मणां फलस्य त्यागः) कर्मों के फल का त्याग, **निर्ममः** - ममतारहित, **निरहङ्कारः-** अहंकार से रहित, **समदुः सुखः-** जिसके लिए दुःख व सुख समान है, **क्षमी** - क्षमाशील

सरलानुवादः-

(भगवत्प्राप्ति में सर्वकर्मफलत्यागरूप साधन की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन!) अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से भी ध्यान विशेष महत्त्व रखता है। ध्यान से कर्मों की इच्छा का त्याग श्रेष्ठ है, क्योंकि त्याग से तत्काल ही परमशांति प्राप्त हो जाती है।
सब प्राणियों के प्रति द्वेषभाव से रहित, मित्रभाववाला, दयालु, ममता या मोह से रहित, अहंकार से रहित, सुख व दुःख की प्राप्ति में समान रहने वाला तथा क्षमावान् (साधक या भक्त) ही मुझे प्रिय है।

विमर्शः-

- ईश्वर को प्राप्त करने के साधनों में समर्पण, अभ्यास, भगवदर्थ कर्म व कर्मफलत्याग ये चार साधन, यहाँ वर्णित हैं। इनमें भी कर्मफलत्याग श्रेष्ठ है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) अभ्यासात् किं श्रेयः?
(ख) ध्यानं कस्मात् विशिष्यते?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) शान्तिः कदा प्राप्यते?
(ख) अत्र कः श्रीकृष्णस्य प्रियः कथितः?

3. निर्देशानुसारम् उत्तरत-

(क) 'ममतारहितः' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
(ख) 'त्यजेत्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
(ग) 'द्वेषभावयुक्तः' इति पदस्य किं विपर्ययमत्र?

4. मूलपाठः-

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि।
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानावमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः।

अन्वयः-

(यदि त्वम्) अभ्यासे अपि असमर्थः असि (तर्हि) मत्कर्मपरमः भव। मदर्थं कर्माणि कुर्वन् अपि सिद्धिम् अवा. प्स्यसि।

(यः) शत्रौ च मित्रे च तथा मानावमानयोः समः (अस्ति), शीत – उष्ण – सुख–दुःखेषु समः, संगविवर्जितः (च विद्यते) स मे प्रियः।

पदार्थाः–

मत्कर्मपरमः – मेरे लिए कर्म करने मे ंलगा हुआ, **सिद्धिम्** – सफलता को, **अवाप्स्यसि** – (अव+ आप् + लृट् लकार) प्राप्त करोगे, **मानावमानयोः** (माने च अवमाने च) मान व अपमान में, **शीतोष्ण**– सुख–दुःखेषु – सर्दी–गर्मी अर्थात् शरीर की अनुकूलता–प्रतिकूलता व सुख–दुःख अर्थात् मन व बुद्धि की अनुकूलता–प्रतिकूलता में, **संगविवर्जितः** (संगात् विवर्जितः) आसक्ति से रहित।

सरलानुवादः–

(हे अर्जुन!) यदि तुम अभ्यासयोग में भी असमर्थ हो तो मेरे लिए कर्म करने में परायण हो जाओ। मेरे लिए कर्म करते हुए भी तुम सफलता को प्राप्त करोगे।
(हे पार्थ!) जो मनुष्य शत्रु–मित्र, मान–अपमान में समान है, जो सर्दी–गर्मी, सुख–दुःख अर्थात् शारीरिक व मानसिक अनुकूलता व प्रतिकूलता दोनों में ही समभाव है, तथा जो आसक्ति से रहित है (वह भक्त मुझे प्रिय है।)

विमर्शः–

भाव यह है कि मनुष्य अपने कर्मों में आसक्ति को त्यागकर, सभी कर्मों को ईश्वर के कार्य समझकर करने से भी परम सिद्धि को पा सकता है।

अभ्यासप्रश्नाः–

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) कस्मिन् असमर्थः असि?
   (ख) केन विवर्जितः जनः ईश्वरप्रियः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) अभ्यासेऽपि असमर्थः जनः कथं सिद्धिम् अवाप्स्यति?
   (ख) केषु समः मनुष्यः श्रीकृष्णस्य प्रियः?

3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत–**
   (क) 'कार्याणि' इत्यस्य किं पर्यायपदमत्र प्रयुक्तम्?
   (ख) 'सामर्थ्यवान्' इति पदस्य किं विलोमपदमत्र?
   (ग) 'वमनादीनि कर्माणि' अत्र विशेषण – विशेष्यं पृथक्कुरुत।

5. **मूलपाठः–**

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्।
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः।

अन्वयः-

अथ मद्योगम् आश्रितः (त्वम्) एतत् कर्तुम् अपि अशक्तः असि, ततः यतात्मवान् सर्वकर्मफलत्यागं कुरु।
तुल्यनिन्दास्तुतिः, मौनी, येन केनचित् संतुष्टः, अनिकेतः, स्थिरमतिः, भक्तिमान् नरः मे प्रियः।

पदार्थाः-

अथैतदप्यशक्तोऽसि - (अथ + एतत् + अपि + अशक्तः + असि) **मद्योगम्** - मेरे योग को अर्थात् समत्व भाव को, **सर्वकर्मफलत्यागम्** - (सर्वेषां कर्मणां फलस्य त्यागम्) सभी कर्मों के फल का त्याग, **यतात्मवान्** - मन व इन्द्रियों को वश में करने वाला, **तुल्यनिन्दास्तुतिः** (तुल्या निंदा स्तुतिः च यस्य, सः) निंदा व प्रशंसा में समान रहने वाला, **अनिकेतः** (अविद्यमानं निकेतं यस्य सः) - निश्चित निवास स्थान से रहित।

सरलानुवादः-

अब यदि मेरे योग अर्थात् समत्व भाव पर आश्रित हुए तुम यह करने में भी अर्थात् भगवदर्थ कर्म करने में भी असमर्थ हो, तो मन व इन्द्रियों पर नियंत्रण करके अपने सभी कर्मों के फल की इच्छा का त्याग करो।
जो निंदा व प्रशंसा दोनों में समान रहता है, मननशील है, जिस किसी प्रकार से भी अर्थात् शरीर का निर्वाह होने या न होने में भी संतुष्ट है, निश्चित निवास स्थान से रहित है, स्थिर बुद्धिवाला व भक्ति से युक्त है, वह भक्त मुझे प्रिय है।

विमर्शः-

- भाव यह है कि सर्वत्र भगवद्बुद्धि अर्थात् भाव होने से तथा राग-द्वेष से रहित होने के कारण सिद्ध भक्त का किसी के प्रति भी शत्रु-मित्र भाव नहीं रहता।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अशक्तः किं करोतु?
   (ख) कम् आश्रितः जनः कर्मणां फलस्य त्यागं करोतु?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) कीदृशः नरः भगवतः प्रियः?
   (ख) प्रथमे श्लोके भगवत्प्राप्तेः कः मार्गः प्रस्तुतः?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'समर्थः' इत्यस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?
   (ख) 'मनुष्यः' इत्यर्थे किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

6. मूलपाठः-

योो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः।

अनपेक्षः शुचिर्दक्षः उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्‌भक्तः स मे प्रियः।

अन्वयः-

यः न हृष्यति, न द्वेष्टि, न शोचति, न कांक्षति, यः शुभ - अशुभपरित्यागी सः भक्तिमान् मे प्रियः।
यः अनपेक्षः शुचिः दक्षः उदासीनः गतव्यथः सर्वारम्भपरित्यागी (च) सः मद्‌भक्तः मे प्रियः।

पदार्थाः-

न हृष्यति - हर्षित / प्रसन्न नहीं होता, **न कांक्षति** - कामना नहीं करता, **शुभाशुभपरित्यागी** - शुभ व अशुभ कर्मों से ऊपर उठा हुआ, **अनपेक्षः** - अपेक्षारहित, **दक्ष** - चतुर, **गतव्यथः** (निर्गता व्यथा यस्य सः) - व्यथा से रहित, **सर्वारम्भपरित्यागी** - नए-नए कर्मों के आरंभ का सर्वथा त्यागी।

सरलानुवादः-

जो न हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कोई कामना करता है, जो शुभ व अशुभ कर्मों से ऊपर उठा हुआ है, वह भक्तिमान् अर्थात् भक्त मुझे प्रिय है।
जो किसी अपेक्षा से रहित है, पवित्र, चतुर, उदासीन, व्यथारहित और नए-नए कर्मों के आरंभ का सर्वथा त्यागी है, वह मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

विमर्शः-

- मुख्य विकार चार हैं - राग, द्वेष, हर्ष व शोक। सिद्ध भक्त में ये चारों ही विकार नहीं होते। भक्त में कोई द्वन्द्व नहीं रहता। वह निर्द्वन्द्व हो जाता है।

अभ्यासप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) अस्मिन् श्लोके वक्ता कः?
   (ख) अत्र कः श्रोता?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) प्रथमे श्लोके कीदृशः जनः श्रीकृष्णस्य प्रियः उक्तः?
   (ख) सिद्धभक्तस्य कानि लक्षणानि द्वितीये श्लोके कथितानि?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत-**
   (क) 'अपवित्रः' इत्यस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम्?
   (ख) 'स मे प्रियः' अत्र 'मे' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (ग) 'अपेक्षारहितः' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

7. मूलपाठः

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।

अन्वयः

यः सततं संतुष्टः योगी, यतात्मा, दृढनिश्चयः, मयि अर्पितमनोबुद्धिः सः मद्भक्तः मे प्रियः।
पार्थ! मयि आवेशितचेतसाम् तेषाम् अहं मृत्युसंसारसागरात् नचिरात् समुद्धर्ता भवामि।

पदार्थाः

सततं–**निरंतर**, **यतात्मा**–(यतः संयमितः आत्मा येन सः)–संयमित आत्मा वाला, **मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो**–(मयि+अर्पि. तं मनः बुद्धिः च येन, सः) मुझमें अर्पित मन व बुद्धि वाला, **समुद्धर्ता**–उद्धार करने वाला, **नचिरात्**–शीघ्र ही, **मय्यावेशितचेतसाम्**–(मयि आवेशितं चेतः यैः, तेषाम्) मुझमें ही लगा लिया है चित्त जिन्होंने।

सरलानुवादः

जो निरंतर संतुष्ट, योगी, आत्मा को संयमित रखने वला, दृढ़ निश्चय वाला, मुझ में समर्पित मन व बुद्धि वाला है वह मेरा भक्त मुझे प्रिय है।
हे पार्थ! जिन्होंने अपना चित्त मुझ में ही लगा दिया है, उनका मैं इस मृत्यु रूपी संसारसमुद्र से शीघ्र ही उद्धार करता हूं।

विमर्शः

- जिन साधकों का लक्ष्य व उद्देश्य भगवान् ही बन गए हैं और जिन्होंने अनन्य प्रेमपूर्वक भगवान में ही अपने चित्त को लगा दिया है, ईश्वर उनका इस संसार रूपी सागर से शीघ्र ही उद्धार करते हैं।

अभ्यासप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत–**
   (क) कः समुद्धर्ता भवति?
   (ख) श्रीकृष्णः कस्मात् उद्धारं करोति?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत–**
   (क) कः श्रीकृष्णस्य प्रियः?
   (ख) श्रीकृष्णः केषां समुद्धर्ता भवति?
3. **निर्देशानुसारम् उत्तरत–**
   (क) 'निरन्तरम्' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?
   (ख) 'भवामि' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

परामर्शः-

- श्रीमद्भगवद्गीता के महत्त्व व प्रासंगिकता का वर्णन करते हुए छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न की जा सकती है।
- छात्रों को समूहगान हेतु प्रेरित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत पाठ में वर्णित भगवत्प्राप्ति के चार प्रमुख उपायों से सम्बद्ध श्लोकों का चार्ट बनवाया जा सकता है।

अनुभवविस्तारः-

- श्रीमद्भगवद्गीता वह अनुपम व अद्वितीय ग्रंथ है, जिसका अध्ययन करके अनेक लोगों ने अपने जीवन का उद्देश्य प्राप्त किया है। यह ग्रंथ जाति, धर्म व देश की सीमाओं से परे मानवमात्र के कल्याण का उपाय बताता है। यही कारण है कि संसार की सौ से अधिक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है तथा देशी-विदेशी लोग परम शांति को प्राप्त करने के लिए इसका परिशीलन करते हैं।
- निस्वार्थ भाव से परोपकार करने वाले, क्षमावान्, दयावान्, सुख-दुःख में समान रहने वाले व दृढ़निश्चयी व्यक्ति ईश्वर को भी प्रिय होते हैं। हमारे अंदर इनमें से कौन-कौन से गुण हैं? इस पर कक्षा में चर्चा करवायी जा सकती है।

अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि

(द्वादशः पाठः)

पाठपरिचयः-

वेदों के छः अंग होते हैं- शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, ज्योतिष तथा छन्द। वेदों का उत्तम ज्ञान प्राप्त करने के लिए उक्त सभी अंगों का बोध होना आवश्यक है। इन छः अंगों में शिक्षा को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है। शिक्षा के विषय में कहा गया है कि- "शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य" अर्थात् 'शिक्षा' वेदरूपी पुरुष की घ्राणशक्ति है। जिस प्रकार घ्राण के बिना हमें त्याज्य एवं ग्राह्य का बोध नहीं हो पाता है, उसी प्रकार वर्णों के उच्चारण का समुचित बोध न होने के कारण हम मंत्रों का सही उच्चारण नहीं कर पाते। इस शिक्षा शास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ पिंगलाचार्य द्वारा रचित "पाणिनीय शिक्षा" है। प्रस्तुत पाठ पाणिनीय शिक्षा से ही संकलित किया गया है। इसमें वर्णों के उच्चारण, स्थान, प्रयत्न आदि का विशेषतः बोध कराया गया है, जो छात्रों को संस्कृत के वर्णों का शुद्ध उच्चारण करने में अत्यन्त सहायक है।

पाठोद्देश्यानि-

- छात्रों को वेदांगों का परिचय कराते हुए उनमें शिक्षासूत्रों की भूमिका व महत्ता का परिचय कराना।
- भाषा में उच्चारण की महत्ता को स्पष्ट करना, विशेषतः संस्कृत-भाषा के सन्दर्भ में वर्णों के उच्चारण के महत्त्व को रेखांकित कराना।
- पाणिनि एवं पिङ्गलाचार्य का परिचय कराते हुए संस्कृत व्याकरण में उनके योगदान को रेखांकित कराना।
- संस्कृत भाषा की वर्णमाला का सूक्ष्म परिचय, स्वर, व्यञ्जन, अयोगवाह, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय आदि वर्णों का बोध कराकर उनकी वैज्ञानिकता का परिचय कराना।
- वर्णों के उच्चारण-स्थान, प्रयत्न, काल आदि के अनुसार भेद-निरूपण कराना।

त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णाः शम्भुमते मताः।
प्राकृते संस्कृते चापि स्वयं प्रोक्ताः स्वयंभुवा॥1॥

अन्वयः-

शम्भुमते प्राकृते संस्कृते च अपि स्वयंभुवा स्वयं प्रोक्ताः त्रिषष्टिः चतुःषष्टिः वा वर्णाः मताः।

पदार्थाः-

स्वयंभुवा = ब्रह्मा जी द्वारा, **प्रोक्ताः-** (प्र+उक्ताः) = कहे गए, **त्रिषठष्टिः** = तिरसठ, **चतुःषष्टिः** = चौसठ, **शम्भुमते** = शम्भुमत व्याकरण में, मताः-**स्वीकृताः** = माने गए हैं।

सरलानुवादः-

शम्भुमत व्याकरण के अनुसार प्राकृत भाषा एवं संस्कृत भाषा में भी ब्रह्मा जी द्वारा स्वयं कहे गए तिरसठ या चौसठ वर्ण स्वीकृत हैं।

विमर्शः-

सामान्यतः संस्कृत भाषा में 48 य 49 वर्णों का प्रयोग होता है, किन्तु सारे वर्णों की संख्या 63 या 64 है। इनका विवेचन अग्रिम श्लोकों में किया गया है। इस सम्पूर्ण पाठ में अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग है, जिसका लक्षण है कि-

स्वरा विंशतिरेकश्च स्पर्शानां पञ्चविंशतिः।
यादयश्च स्मृता ह्यष्टौ चत्वारश्च यमाः स्मृताः॥2॥

अन्वयः-

विंशतिः एकः च स्वराः, स्पर्शानां पंचविंशतिः, अष्टौ यादयः हि स्मृताः, चत्वारः च यमाः स्मृताः।

अनुस्वारो विसर्गश्च क पौ चापि पराश्रितौ।
दुःस्पृष्टो चापि विज्ञेयो लृकारः प्लुत एव सः॥3॥

अन्वयः-

अनुस्वारः विसर्गः च, अपि च पराश्रितौ क पौ, अपि च दुःस्पृष्टः लृकारः अपि विज्ञेयः, सः प्लुत एव।

पदार्थाः-

विंशतिः एकः च = इक्कीस (ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत भेद से स्वर 21 कहे गए हैं), **स्पर्शानां पञ्चविंशतिः** = पच्चीस स्पर्श वर्ण (क से म तक), **यादयश्च-** (य+आदयः+च) = य आदि (य् र् ल् व् श् ष् स् ह्) **आठ वर्ण, यमाः-** (युग्माः इति भावः) = यम अर्थात् युग्म शब्द, जैसे- अग्गिनः आदि (इनका प्रयोग प्रायः वेदों में ही होता है।) **स्मृताः-** (कथिताः इति भावः) = कहे गए हैं। **पराश्रितौ-** (पर+आश्रितौ) = दूसरे वर्ण (अकार आदि) पर आश्रित, **लृकारः** = 'लृ' स्वर, **दुःस्पृष्टः** = (दुःखेन स्प्रष्टुं शक्यः) = आभ्यन्तर प्रयत्नों में कठिनाई से समाहित होने वाला, **विज्ञेयः** = (ज्ञातव्यः) = जानना चाहिए; **प्लुत एव** = सदा प्लुत रहने वाला।

सरलानुवादः-

(वर्णमाला के अक्षरों का विवेचन करते हुए कहा गया है कि) 21 स्वर हैं, 25 स्पर्शवर्ण हैं, 'य' आदि (अन्तःस्थ एवं ऊष्म वर्ण) 8 हैं और 4 युग्म वर्ण हैं।

अनुस्वार, विसर्ग, अन्य पर आश्रित, क (जिह्वामूलीय), प (उपध्मानीय) तथा 'लृ' जो दुःस्पृष्ट है तथा सर्वदा प्लुत ही होता है। (ये सभी वर्ण मिलकर 21+25+8+4+1+1+1+1+1=(63) होते हैं। प्लुत लृ को जोड़ने पर 64 जो जाते हैं।

विमर्शः-

शम्भुमतानुसार स्वरों की संख्या 21 बताई गई है। पाणिनीय व्याकरणानुसार इनकी संख्या 22 होती है। यहाँ पर 'लृकार' को केवल प्लुत कहा गया है, जबकि पाणिनीय मतानुसार उसे ह्रस्व एवं प्लुत, दोनों में स्वीकारा गया है। यथा- 'लृवर्णस्य द्वादश, तस्य दीर्घाभावात्'। कुल 21 स्वर इस प्रकार है-

ह्रस्व स्वर- अ इ उ ऋ = 04

दीर्घ स्वर- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ = 08

प्लुत स्वर- आ३, ई३, ऊ३, ॠ३, लृ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३ = 9

अ- कः, अ - खः इति कखाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृशो जिह्वामूलीयः, (ल.सि. कौ.)
अ - पः, अ - फः इति पफाभ्यां प्रागर्धविसर्गसदृश उपध्मामनीयः। (ल. सि. कौ.)
अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गौ, (ल.सि. कौ.)

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) प्राकृते शम्भुमतेन कतिवर्णाः स्वीकृताः
(ख) यमाः कति स्मृताः?
(ग) शम्भुमतेन कः वर्णः प्लुत एव भवति?
(घ) स्पर्शवर्णाः कति मताः?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) वर्णाः स्वयं केन प्रोक्ताः सन्ति?
(ख) स्वराणां संख्या कति? कानि च तानि?

3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'स्वयं प्रोक्ताः स्वयंभुवा' इत्यत्र क्रियापदं किम्?
(ख) 'ज्ञातव्यः' इत्यर्थे किं पदमत्र प्रयुक्तम्?

आत्मा बुद्धया समेत्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मनः कायाग्निमाहन्ति सः प्रेरयति मारुतम्।।4।।

अन्वयः-

आत्मा बुद्धया अर्थान् समेत्य विवक्षया मनः युङ्क्ते। मनः कायाग्निम् आहन्ति, सः मारुतं प्रेरयति।

सोदीर्णो मूर्ध्न्यभिहतो वक्त्रमापद्य मारुतः।
वर्णाञ्जनयते तेषां विभागः पञ्चधा स्मृतः।।5।।

अन्वयः-

उदीर्णः मूर्ध्नि अभिहतः सः मारुतः वक्त्रम् आपद्य वर्णान् जनयते, तेषां (वर्णानां) विभागः पञ्चधा स्मृतः।

पदार्थाः-

समेत्य- (सम्+इ+ल्यप्) = मिलकर, **युङ्क्ते** = जोड़ता/ती है, **कयाग्निम्** = (काय+अग्निम्) = शरीर की अग्नि को (इच्छाशक्ति को), **आहन्ति** = (प्रहरति इति भावः) = चोट करता है/ प्रहार करता है। **मारुतम्** = वायु को, **उदीर्णः** = कहा गया / प्रेरित किया गया, **मूर्ध्नि अभिहतः** (शिरसि प्रहृतः इति भावः) = शिर में प्रहृत किया गया / स्वरतन्त्र से टकराकर, **वक्त्रम् आपद्य** = (मुखं प्राप्य) मुँह को प्राप्त कर / मुख में पहुँचकर, **जनयते** = उत्पन्न करता है। **पञ्चधा** = पाँच प्रकार का।

सरलानुवादः

4. (वर्ण के उच्चारण की प्रक्रिया का निरूपण करते हुए कहा गया है कि) आत्मा बुद्धि के साथ मिलकर अर्थों को बोलने की इच्छा से मन को (अर्थों से) जोड़ती है, तत्पश्चात् मन शरीर की अग्नि अर्थात् इच्छाशक्ति को प्रहृत करता है। वह (इच्छाशक्ति या कायाग्नि) वायु को (बोलने के लिए) प्रेरित करता है।

5. वह वायु प्रेरित होकर शिर पर या स्वरतंत्र पर प्रहार करता है तथा मुख में पहुँचकर वर्णों को उत्पन्न करता है। उन वर्णों को पाँच भागों में विभाजित किया जाता है।

स्वरतः कालतः स्थानात्प्रयत्नानुप्रदानतः।
इति वर्णविदः प्राहुर्निपुणं तन्निबोधत॥6॥

अन्वयः-

(वर्णानां विभागः) स्वरतः, कालतः, स्थानात्, प्रयत्नात्, अनुप्रदानतः इति वर्णविदः निपुणं प्राहुः, तत् निबोधत।

पदार्थाः-

स्वरतः = उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि से, **कालतः** = ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत आदि से, **स्थानात्** = कण्ठ, तालु आदि से, **प्रयत्नात्** = आभ्यन्तर प्रयत्न से, **अनुप्रदानतः** = बाह्य प्रयत्न से, **वर्णविदः** = शब्दशास्त्र के ज्ञाता, **निबोधत** = जानें/समझें।

सरलानुवादः-

(वर्णो के पाँच भेद बताते हुए कहते हैं कि)- शब्दशास्त्रियों के अनुसार वर्ण स्वर, काल, स्थान, प्रयत्न तथा अनुप्रदान (बाह्य प्रयत्न) नामक पाँच भेदों से विभाजित होते हैं। उन्हें भलीभाँति समझना चाहिए।

विमर्शः-

प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं- बाह्य एवं आभ्यन्तर। बाह्य प्रयत्न ग्यारह (11) प्रकार का होता है। जैसे- विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित। आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का है- स्पृष्ट, ईषत् स्पृष्ट, ईषद् विवृत, विवृत एवं संवृत।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) आत्मा विवक्षया कं युङ्क्ते?
(ख) मनः कम् आहन्ति?
(ग) वर्णानां विभागः कतिधा स्मृतः?
(घ) वर्णभेदं के प्राहुः?

2. पूर्ववाक्येन उत्तरत

(क) मारुतः कथं वर्णान् जनयते?
(ख) विवक्षया आत्मा किं करोति?

3. **यथनिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'वक्तुम् इच्छया' इत्यर्थे श्लोके किं पदं प्रोक्तम्?

(ख) 'वर्णान् जनयते तेषाम्' इत्यत्र 'तेषां' सर्वनामपदं केभ्यः प्रयुक्तम्?

उदात्तानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः।
ह्रस्वो दीर्घः प्लुत इति कालतो नियमा अचि॥7॥

अन्वयः-

स्वराः उदात्तः अनुदात्तः च स्वरितः च (इति) त्रयः (सन्ति)। अचि कालतः ह्रस्वः, दीर्घः प्लुतः इति नियमाः (भवन्ति)।

पदार्थाः-

अचि = स्वरों में, **कालतः** = उच्चारण के काल के अनुसार।

सरलानुवादः-

स्वर उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित के भेद से तीन होते हैं। स्वरों के काल (उच्चारण में लगने वाला समय) के अनुसार तीन भेद हैं- ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत। अर्थात् जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा के बराबर का समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर, दो मात्रा के बराबर समय लगे, वे दीर्घ स्वर तथा तीन मात्रा के बराबर का समय लगे, तो वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। (श्लोक 2 का विमर्श द्रष्टव्य।)

अष्टौ स्थानानि वर्णामामुरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च॥8॥

अन्वयः-

वर्णानाम् उरः, कण्ठः तथा शिरः, जिह्वामूलं च, दन्ताः च, नासिका, ओष्ठौ च तालु च (इति) अष्टौ स्थानानि (सन्ति)।

पदार्थाः-

उरः = हृदयदेशः = छाती, **शिरः** = **मूर्धाप्रदेशः** = शिर/मूर्धा, **जिह्वामूलम्** = जीभ का मूल भाग (काकतालु।

सरलानुवादः-

वर्णों के उच्चारण स्थान क्रमशः छाती, कण्ठ, शिर (मूर्धा), जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ तथा तालु (इस प्रकार कुल) आठ हैं।

ओभावश्च विवृत्तिश्च शषसा रेफ एव च।
जिह्वामूलमुपध्मा च गतिरष्टविधोष्मणः॥9॥

अन्वयः-

ऊष्मणः गतिः अष्टविधा (भवति, यथा) ओभावः, विवृत्तिः च श-ष-सा, रेफ एव च, जिह्वामूलम् उपध्मा च (इति)।

पदार्था:-

ऊष्मण:- ऊष्म वर्णों की (विशेषत: स्, ष् श्, की जो विसर्ग के ही विकार हैं।) **अष्टविधा** = आठ प्रकार की, **गति:** = स्थिति, **ओभाव:** = उत्व होना, **विवृत्ति:** = लोप होना।

सरलानुवाद:-

ऊष्म वर्णों (श् ष् स् ह्) की गति आठ प्रकार की होती है अर्थात् आठ प्रकार से इनमें परिवर्तन होते हैं। जैसे–

1. ओभाव: - उत्व होना- नमो नम: आदि।
2. विवृत्ति:- लोप- नम उमेशाय आदि।
3-5. श-ष-स:-हरिश्शेते, कृष्णाष्षष्ठ: प्रथमस्सर्ग: आदि;
6. रेफ:- हर्रिहरति, मुनिर्गच्छति आदि,
7. जिह्वामूलम् क - करोति, गज:-खादति आदि,
8. उपध्मानीय: - देव:- पचति, वृक्ष: - फलति आदि।

विमर्श:-

उक्त आठों प्रकार श् ष् स् के ही विकार होते हैं। विसर्ग सन्धि के अन्तर्गत सत्व, उत्व, रुत्व, लोप आदि के रूप में इन्हें छात्रों को पढ़ाया जाता है।

अभ्यासप्रश्ना:

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) 'अचि' इत्यस्य कोऽर्थ:?

(ख) स्वरा: कति प्रोक्ता:?

(ग) वर्णानां स्थानानि कति भवन्ति?

(घ) ह्रस्व-दीर्घ-प्लुता: भेदा: कस्मात् भवन्ति?

2. पूर्ववाक्येन उत्तरत-

(क) उष्मण: गति: का कथिता?

(ख) वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि कानि-कानि कथितानि?

3. यथानिर्देशमुत्तरत-

(क) 'स्वरास्त्रय:' इत्यत्र विशेषणपदं किम्?

(ख) 'अक्षराणाम्' इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम्?

हकारं पञ्चमैर्युक्तमन्त:स्थाभिश्च संयुतम्।
उरस्यं तं विजानीयात् कण्ठ्यमाहुरसंयुतम्।।10।।

अन्वय:-

पञ्चमैः युक्तम् अन्तःस्थाभिः च संयुतं तं हकारम् उरस्यं विजानीयात्। असंयुतं (तु हकारं) कण्ठ्यम् आहुः।

पदार्थः–

पञ्चमैः युक्तम् = (पञ्चमाक्षरैः युक्तम् इति भावः) वर्ग के पंचमाक्षरों (ङ् ञ् ण् न् म्), से युक्त, **अन्तःस्थाभिः** = अन्तःस्थों (य् र् ल् व्) से, **हकारम्** = ह् वर्ण को, **उरस्यम्** = (उरः स्थानीयम् इति भावः) उरःस्थानीय, **विजानीयात्** = जानना चाहिए। **असंयुतम्** = (न संयुतम्) = किसी से न जुड़ा हुआ, **आहुः** = कहा गया है/कहते हैं।

सरलानुवादः–

(स्थानों का क्रमशः विवेचन करते हुए कहते हैं कि) जब 'ह्' वर्ण पञ्चम अक्षरों से युक्त हो (ह्न, ह्म, ह्ण आदि), अन्तःस्थ वर्णों से जुड़ा हो (ह्व, ह्ल, ह्य, ह्र आदि), तब उसे उरःस्थानीय या उरस्य कहा जाता है, अर्थात् ऐसी स्थिति में उसका उच्चारण स्थान उरः या छाती माना जाता है। जब वह किसी से संयुक्त या जुड़ा न हो तो, ऐसी स्थिति में वह ('ह्') केवल कण्ठ्य (कण्ठ से बोले जाने वाला) कहा गया है। अर्थात् असंयुक्त 'ह्' कण्ठ्य ही होता है।

कण्ठ्यावहाविचुयशास्तालव्या ओष्ठजावुपू।
स्युर्मूर्धन्या ऋटुरषा दन्त्या लृतुलसाः स्मृताः॥11

अन्वयः–

अ–हौ कण्ठ्यौ, इचुयशाः तालव्याः, उ–पू. ओष्ठजौ, ऋटुरषा मूर्धन्याः स्युः, लृतुलसाः दन्त्याः स्मृताः।

सरलानुवादः–

(अन्य वर्णों के उच्चारण स्थान निर्दिष्ट करते हुए कहते हैं कि)– अ, आ (क वर्ग) तथा 'ह्' का उच्चारणस्थान कण्ठ है, इ ई, चवर्ग, य् तथा श् का तालु, उ ऊ तथा पवर्ग का ओष्ठ, ऋ, टवर्ग, र् तथा ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है तथा लृ, तवर्ग, ल् एवं 'स्' का स्थान दन्त है। उच्चारण स्थान के आधार पर ही इन्हें कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य आदि कहा जाता है। पाणिनीयमतानुसार उच्चारणस्थान निम्न प्रकार हैं –

(क) अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।
(ख) इ चु य शानां तालुः।
(ग) लृ तू ल सानां दन्ताः।
(घ) उ पूपध्मानीयानामोष्ठौ।
(च) ञ म ङ् ण नानां नासिका च।

जिह्वामूले तु कुः प्रोक्तो दन्त्योष्ठो वः स्मृतो बुधैः।
एऐ तु कण्ठतालव्या ओ औ तु कण्ठोष्ठजौ स्मृतौ॥12॥

अन्वयः–

बुधैः कुः तु जिह्वामूले प्रोक्तः, वः दन्त्योष्ठ्यः स्मृतः।
ए ऐ तु कण्ठतालव्यौ ओ औ तु कण्ठौष्ठजौ स्मृतौ॥

पदार्थाः-

प्रोक्तः = (कथितः) कहा गया है। **कुः** = कवर्ग, **स्मृतः** = माना गया है। **बुधैः** (विद्वद्भिः) = विद्वानों द्वारा।

सरलानुवादः-

विद्वानों द्वारा 'क' वर्ग को जिह्वामूल से उच्चरित होने वाला कहा गया है। 'व' को दन्योष्ठ्य माना गया है। 'ए' तथा 'ऐ' को कण्ठतालव्य (तथा) 'ओ' 'औ' को कण्ठोष्ठ से उत्पन्न माना जाता है।

विमर्शः-

पाणिनीय व्याकरणानुसार 'क' वर्ग को कण्ठ्य ही माना जाता है, किन्तु यहाँ पर उसे जिह्वामूलीय कहा गया है। संभवतः शम्भुमतानुसार यह निर्देश दिया गया है। ए ऐ संयुक्त स्वर हैं- अ+इ =, अतः 'अ' तथा 'इ' का संयुक्त उच्चारण स्थान ही उनका भी है। इसी प्रकार 'ओ' 'औ' भी संयुक्त स्वर हैं- अ+उ = ओ, अतः 'अ' तथा 'उ' का संयुक्त उच्चारण स्थान ही उनका भी है।

अनुस्वारयमानां च नासिका स्थानमुच्यते।
अयोगवाहा विज्ञेया आश्रयस्थानभागिनः॥13॥

अन्वयः-

अनुस्वारयमानां स्थानं च नासिका उच्यते। अयोगवाहाः आश्रयस्थानभागिनः विज्ञेयाः।

पदार्थाः-

अयोगवाहाः = (विसर्गाः) = विसर्ग, **विज्ञेयाः** = (ज्ञातव्याः) = जानने चाहिए, **आश्रयस्थानभागिनः** - (आश्रयस्य स्थानं भजन्ते, ते) आश्रित (वर्ण) के स्थान को ही प्राप्त होने वाले/करने वाले।

सरलानुवादः-

अनुस्वार और युग्म वर्णो का उच्चारण स्थान नासिका कहा गया है। अयोगवाह अर्थात् विसर्गों का उच्चारण स्थान आश्रित वर्ण का उच्चारण स्थान होता है। अर्थात् 'इः' के विसर्ग का उच्चारणस्थान 'इ' का ही माना गया है।

विमर्शः-

यहाँ ध्यातव्य है कि पाणिनीय व्याकरणानुसार विसर्गों का उच्चारण स्थान कण्ठ माना गया है, किन्तु यहाँ ग्रन्थकार आश्रित वर्णो के स्थान के अनुरूप ही उनका उच्चारणस्थान निर्दिष्ट कर रहे हैं। यही भेद है।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकचतुष्टयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) असंयुतस्य हकारस्य उच्चारणस्थानं किम्?
(ख) 'चु' इति श्लोके प्रोक्तस्य पदस्य अभिप्रायः का वर्गः अस्ति?
(ग) 'व' वर्णस्य उच्चारणस्थानं किं कथितम्?

(घ) अयोगवाहाः के कथिताः?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) कीदृशं हकारम् उरस्यं विजानीयात्?

(ख) दन्त्याः वर्णाः के सन्ति? लिखत।

3. यथानिर्देशमुत्तरत-

(क) 'संयुतम्' इत्यस्य किं विलोमपदं दशमे श्लोके प्रोक्तम्?

(ख) 'कथितः' इत्यर्थे किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

व्याघ्री यथा हरेत्पुत्रान् दंष्ट्राभ्यां न तु पीडयेत्।
भीता पतनभेदाभ्यां तद्वद्वर्णान् प्रयोजयेत्॥14॥

अन्वयः-

पतनभेदाभ्यां भीता व्याघ्री यथा दंष्ट्राभ्यां पुत्रान् हरेत् न तु पीडयेत्। तद्वद् (पाठकः) वर्णान् प्रयोजयेत्।

पदार्थः-

हरेत्- (हरतीति भावः) = ले जाए/जाती है, **दंष्ट्राभ्याम्** = दोनों दाढ़ों से, **पीडयेत्** - पीड़ित करती/पीड़ा पहुँचाती है, **भीता** = डरी हुई, **पतनभेदाभ्याम्**- (पतनात् भेदात् च) = गिरने और चुभने से, **प्रयोजयेत्** = (प्रयुञ्जीत इति भावः) = प्रयोग करना चाहिए/ उच्चारण करना चाहिए।

सरलानुवादः-

(वर्णों के उच्चारण में सावधानी बरतने का निर्देश देते हुए कहते हैं कि) गिरने तथा चुभने (चोट पहुँचने) से डरी हुई सी बाघिन जिस प्रकार दोनों दाढ़ों (में उठाकर) अपने बच्चों को (एक स्थान से दूसरे स्थान तक) ले जाती है, (किन्तु) उन्हें चोट नहीं पहुँचाती, उसी प्रकार (पाठक व्यक्ति को भी) वर्णों का प्रयोग (उच्चारण) करना चाहिए। अर्थात् अत्यधिक मुँह भींचकर तथा अत्यन्त अलसभाव के साथ वर्णों का उच्चारण नहीं करना चाहिए।

गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः॥15॥

अन्वयः-

गीती, शीघ्री, शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः, अनर्थज्ञः अल्पकण्ठः च एते षड् पाठकाधमाः (मताः)।

पदार्थाः-

गीती = गाकर पढ़ने वाला, **शीघ्री** = बहुत जल्दी-जल्दी पढ़ने वाला, **शिरःकम्पी** = शिर हिला-हिला कर पढ़ने वाला, **लिखितपाठकः** = जैसा लिखा है, वैसा ही पढ़ने वाला (अक्षर मिलाकर पढ़ने वाला) **अनर्थज्ञः**- (अर्थं जानाति इति अर्थज्ञः, न अर्थज्ञः, अनर्थज्ञः) अर्थ को न जानने वाला, **अल्पकण्ठः** = मन्दस्वर वाला। **अधमाः** = निम्नतर/निकृष्ट।

सरलानुवादः-

गा-गाकर पढ़ने वाला, जल्दी-जल्दी पढ़ने वाला, शिर हिला-हिलाकर पढ़ने वाला तथा जैसा लिखा है, वैसा पढ़ने वाला, अर्थ को न समझकर पढ़ने वाला तथा मन्दस्वर में पढ़ने वाला, ये छः निकृष्ट पाठक माने जाते हैं।

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः॥16॥

अन्वयः-

माधुर्यम्, अक्षरव्यक्तिः, सुस्वरः, पदच्छेदः, धैर्यं, लयसमर्थं च, एते षड् पाठकाः गुणाः (सन्ति)।

पदार्थाः-

अक्षरव्यक्तिः (अक्षराणां स्पष्टता) = अक्षरों की स्पष्टता, **सुस्वरः** = अच्छा स्वर, **धैर्यम्** - सहजता से (धीरे-धीरे) **लयसमर्थम्** = लय के साथ।

सरलानुवादः-

(वर्णों के उच्चारण की उचित विधि बताते हुए कहा गया है कि) मधुरता (मिठास), अक्षरों की स्पष्टता, पदों का विच्छेद अर्थात् अलग-अलग करके पढ़ना, अच्छा स्वर (न बहुत मंद तथा न बहुत तेज), सहज गति तथा लयात्मकता के साथ पाठ, ये छः पाठकों के गुण हैं। अर्थात् उक्त गुणों से युक्त पाठ उत्तम पाठक माने जाते हैं।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**
   (क) व्याघ्री काभ्यां भीता पुत्रान् हरेत्?
   (ख) अधमपाठकानां कति भेदाः सन्ति?
   (ग) 'शिरःकम्पी' कीदृशः पाठकः मन्यते?
   (घ) अक्षरव्यक्तिः इति पदे 'व्यक्तिः' इत्यस्य कः आशयः?
2. **पूर्ववाक्येन उत्तरत-**
   (क) पाठकः वर्णान् कथं प्रयोजयेत्?
   (ख) पाठकाः गुणा : के कथिताः?
3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**
   (क) 'अर्थज्ञः' इत्यस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम्?
   (ख) 'षडेते' इत्यत्र 'एते' सर्वनाम केभ्यः प्रयुक्तम्?

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्योऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते॥17

अन्वयः-

वेदस्य (वेदरूपपुरुषस्य) पादौ तु छन्दः, अथ हस्तौ कल्पः पठ्यते। चक्षुः ज्येतिषाम् अयनम् श्रोत्रं निरुक्तम् उच्यते।

पदार्थाः-

छन्दः=पिंगलाचार्य रचित छन्दःशास्त्र, **ज्योतिषाम् अयनम्** = ज्योतिष शास्त्र, **श्रोत्रम्** = कर्ण/कान, **निरुक्तम्** = निर्वचन शास्त्र (यास्करचित)।

सरलानुवादः-

(वेदरूपी पुरुष के अंगों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि) वेद (रूपी पुरुष) के पैर छन्दःशास्त्र हैं, हाथ कल्पसूत्र हैं, नेत्र या आँख ज्योतिषशास्त्र है तथा निरुक्त शास्त्र ही कान है।

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।18।।

अन्वयः-

शिक्षा तु वेदस्य घ्राणम्, व्याकरणं मुखं स्मृतम्। तस्मात् साङ्गम् (वेदम्) अधीत्य एव (नरः) ब्रह्मलोके महीयते।

पदार्थाः-

घ्राणम् = नासिका, **साङ्गम्-** (अङ्गैः सह) = अङ्गों के साथ, **अधीत्य-** (अधि+इ+ल्यप्) = पढ़कर, **महीयते** = (महत्त्वमाप्नोति) महत्त्व को प्राप्त होता है/ सुशोभित होता है।

सरलानुवादः-

शिक्षाशास्त्र वेदरूपी पुरुष की नसिका मानी गई है। व्याकरण को मुख माना गया है। इस प्रकार (वेदरूपी पुरुष को भलीभाँति समझने के लिए) इसका अङ्गों के साथ अध्ययन करके ही (व्यक्ति) ब्रह्मलोक में महत्त्व के प्राप्त कर पाता है।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकद्वयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

   (क) किं शास्त्रं वेदस्य श्रोत्रम् उच्यते?

   (ख) व्याकरणशास्त्रं वेदस्य किम् अङ्गभूतम्?

   (ग) किं शास्त्रं वेदस्य पादौ कथ्यते?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

   (क) नरः ब्रह्मलोके कथं महीयते?

(ख) वेदस्य कानि कानि अङ्गानि कथितानि? नामानि लिखत।

3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'ब्रह्मलोके महियते' इत्यत्र क्रियापदं किम्।

(ख) 'मुखं व्याकरणम्' अनयोः विशेष्यपदं किम्?

येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्।
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः॥19॥

अन्वयः-

येन महेश्वरात् अक्षरसमाम्नायम् अधिगम्य कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तम्, तस्मै पाणिनये नमः।

पदार्थाः-

अक्षरसमाम्नायम् = (अक्षराणां समाम्नायम्) = अक्षरों का समूह या समुदाय, **अधिगम्य**- (अधि+गम्+ल्यप्) = प्राप्त करके, **कृत्स्नम्** = समस्त/सारा।

सरलानुवादः-

जिसने भगवान् शंकर से अक्षरसमाम्नाय को प्राप्त कर (सीखकर) सारा व्याकरण रचा, उन पाणिनि को हमारा प्रणाम है।

विमर्शः-

अक्षरसमाम्नाय अर्थात् वर्णमाला के वर्णों का समूह, इनकी उत्पत्ति भगवान् शिव के डमरू से मानी जती है। इस विषय में यह श्लोक प्रसिद्ध है-

"नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नव-पञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्र-जालम्॥"

व्याकरण का आधार चौदह सूत्र-अइउण्, ऋलृक् आदि हैं। इनको माहेश्वरसूत्र या शिवसूत्र भी कहा जाता है।

येन धौताः गिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः।
तमश्चाज्ञानजं भिन्नं तस्मै पाणिनये नमः॥20॥

अन्वयः-

येन विमलैः शब्दवारिभिः पुंसां गिरः धौताः अज्ञानजं तमः च भिन्नम्, तस्मै पाणिनये नमः।

पदार्थाः-

धौताः (धाव्+क्त) (प्रक्षालिताः सम्मार्जिताः वा) = शुद्ध की/परिष्कृत की, **गिरः**- (वाचः) = वचन, **पुंसाम्** = (पुरुषाणाम्) = मानवों की, **अज्ञानजम्-** (अज्ञानात् जातम्) अज्ञान से उत्पन्न, **तमः** = अन्धकार, **भिन्नम्** - भेद दिया / दूर कर दिया।

सरलानुवादः-

जिसने (जिन्होंने) शुद्ध शब्दरूपी जलों से लोगों की वाणियों को परिष्कृत या परिमार्जित किया तथा अज्ञान से उत्पन्न होने वाले अंधकार को मिटा दिया। उन महर्षि पाणिनि को हमारा प्रणाम है।

अज्ञानान्धस्य लोकस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया,
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै पाणिनये नमः॥

अन्वयः-

येन अज्ञानान्धस्य लोकस्य चक्षुः ज्ञानाञ्जनशलाकया उन्मीलितम्, तस्मै पाणिनये नमः।

पदार्थाः-

ज्ञानाञ्जनशलाकया- (ज्ञानरूपेण अञ्जनेन शलाकया च) ज्ञानरूपी अंजन तथा सलाई से, **उन्मीलितम्-** (उद्घाटितम्) खोला/आलोकित किया। **अज्ञानान्धस्य-** (अज्ञानेन अन्धस्य) अज्ञान से अन्धे।

सरलानुवादः-

जिसने अज्ञान से अन्धे लोक (संसार) की आँख को ज्ञानरूपी अंजन (काजल) तथा सलाई से आलोकित किया, उन महर्षि पाणिनि को हमारा प्रणाम।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रोक्तं श्लोकत्रयं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत-

1. **एकपदेन उत्तरत**
   (क) अक्षरसमाम्नायः कस्मात् प्राप्तः?
   (ख) पाणिनिना किं शास्त्रं प्रोक्तम्?
   (ग) शब्दवारिभिः काः धौताः?
   (घ) पाणिनिना अज्ञानजं किं भिन्नम्?
2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**
   (क) पाणिनिना लोकस्य चक्षुः कथम् उन्मीलितम्?
   (ख) महर्षिणा पाणिनिना शब्दवारिभिः काः धौताः?
3. **यथानिर्देशमुत्तरत-**
   (क) 'तस्मै पाणिनये' अनयोः विशेषणं पदं किम्?
   (ख) 'अज्ञानात् जायते' इत्यर्थे किं समस्तं पदं श्लोके प्रोक्तम्?
   (ग) 'सकलम्' इत्यर्थे एकोनविंशे श्लोके किं पदं प्रयुक्तम्?
   (घ) तमश्चाज्ञानजं भिन्नम्' इत्यत्र क्रियापदं किम्?

शिक्षण-परामर्शः-

- वर्णों के स्वर, काल, स्थान, प्रयत्न आदि के अनुसार विभिन्न चार्ट बनाए जा सकते हैं।
- (पप) संस्कृत-भाषा की सूक्ष्मता एवं वैज्ञानिकता विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया जा

सकता है।

- (पपप) माहेश्वर-सूत्रों का परिचय, पाणिनि एवं पिंगलाचार्य के जीवन से सम्बन्धित सामग्री का संकलन कराया जा सकता है।

अनुभव-विस्तारः-

- आज संस्कृत या हिन्दी में प्रयुक्त होने वाली वर्तमाला में तथा मूल वर्णमाला में कितना अन्तर आ गया है? कितने वर्ण आज लुप्त हो गए हैं? इस विषय में छात्रों को लिखने या पर्यालोचन करने का निर्देश दिया जा सकता है।
- अन्य भरतीय-भाषाओं की वर्णमाला पर संस्कृत भाषा के वर्णों का क्या प्रभाव है? इस विषय पर छात्रों के अनुभव कक्षा में सुनाने का निर्देश दे सकते हैं।

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्) कोड सं. 332

पाठ्यक्रमः (2019-2020) परीक्षानिर्देशाश्चा

अवधिः-होरात्रम्	कक्षा- XII प्रश्नपत्रम्	पूर्णाङ्काः 80+20

अस्मिन् प्रश्नपत्रे चत्वरो भागाः भविष्यन्ति। अङ्काः

भागः 'क' अपठित-अवबोधनम्	10	
भागः 'ख' रचनात्मककार्यम्	15	
भागः 'ग' अनुप्रयुक्तव्याकरणम्	20	
भागः 'घ'	35	
• पठित-अवबोधनम्	(25 अङ्काः)	
• संस्कृतसाहित्येतिहासस्य परिचयः	(10 अङ्काः)	20

भागः 'ङ' आन्तरिक-मूल्याङ्कनम्

प्रतिभागं विस्तृतविवरणम्
भागः 'क' अपठित-अवबोधनम्

	अङ्काः	कालांशाः
80-100 शब्दपरिमितः एकः सरलः अपठितः गद्यांशः।	**10**	**20**

प्रश्नवैविध्यम्

i	एकपदने उत्तरम्	2
ii	पूर्णवाक्येन उत्तरम्	4
iii	समुचितशीर्षकलेखनम्	1
iv	वाक्ये कर्तृक्रिया-पदचयनम्, सर्वनामस्थाने संज्ञाप्रयोगः, विशेषण-विशेष्य/पर्याय/ विलोमादिचयनम्	3

<u>भागः 'ख' रचनात्मकं कार्यम्</u>

अङ्काः (15) कालांशाः (30)

1. औपचारिकम् अनौपचारिकं पत्रम्/प्रार्थनापत्रम्

(मञ्जूषायाः सहायतया पूर्णं पत्रं लेखनीयम्) 5

2. लघुकथा (शब्दसूचीसाहय्येन, रिक्तस्थानपूर्ति-माध्यमेन)

/वार्तालापे एकपक्षपूरणम् 5

3. सङ्केताधारितम् अनुच्छेदलेखनम्/हिन्दीभाषया आङ्लभाषया वा लिखिततानां पञ्चसरलवाक्यानां संकृततभाषया अनुवादः। 5

भागः 'ग' अनुपयुक्तव्याकरणम्

अङ्काः (20) कालांशाः (60)

1. **प्रत्ययाः**–क्त, क्तवतु,त्तवा, तुमुन, ल्यप, तव्यत्, अनीयर,। 3
2. **सन्धिः** –पाठ्यपुस्तके प्रयुक्तपदानां सन्धिविच्छेदः सन्धिकरणं च 3
   स्वरसन्धिः–दीर्घः, गुणः, वृद्धि, यण, अयादि, प्रकृतिभावः।
   व्यञ्जनसंन्धिः–श्चुत्वम्, ष्टुत्वम्, जश्त्वम्, षत्वम्, अनुस्वारः, परसवर्ण।
   विसर्गसन्धिः – सत्वम्, उत्वम्, रुत्वम्, लोपः, विसर्गस्थाने स्, श्, ष्।
3. **शब्दरूपाणि**-विभक्त्यनुसारं वाक्यप्रयोगः। 3
   अजन्ताः – बालक, फल, रमा, रवि, कवि, पति, मति, वारि, नदी, शिशु, धेनु, मधु, वधु, पितृ, मातृ, कर्तृ, एवं समानान्तरप्रयोगाः।
   हलन्ताः –राजन्, गच्छन्, भवत्, आत्मन्, विद्वस्, चन्द्रमस्, वाच् एवं समानान्तरप्रयोगाः।
   सर्वनामानि – सर्व, यत, तत, किम्, इदम्, (त्रिषु लिङ्गेषु) अस्मद्, युष्मद्।
   संख्यावाचकशब्दाः –एकसंख्यातः, पञ्चसंख्यापर्यन्तम् (त्रिषु लिङ्गेषु)।
4. **धातुरूपाणि** – लट्, लृट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इति पञ्चलकारेषु 3
   अधोलिखितधातूनां वाक्येषु प्रयोगः
   परस्मैपदिनः –भू, पठ्, गम्, लिख्, पा, स्था, हश्, अस्, कथ्, भक्ष्, घ्रा, क्रुध, हन्, श्रु, नृत्, स्पृश्, चुर्, कथ्,।
   आत्मनेपदिनः – लभ, सेव, मुद्, याच्।
   उभयपदिनः – कृ, हृ, क्री, ग्रह्, शक्, (केवलं लट्,-लृट्-लकारयोः)
5. **कारक**-उपपदविभक्तिप्रयोगः 3
6. **सामान्यं वाच्य**-परिवर्तनम् (लट्-लकारे, क्त-क्तवतु-प्रत्यययोः 2
   माध्यमेन भूतकालार्थे च)
7. **अशुद्धि**-संशोधनम् (लिङ्ग-वचन-पुरुष-विभक्ति-कालधारितम्) 3

भाग 'घ' (i) पठित-अवबोधनम्

अङ्काः (35) कालांशाः (85)

(अ) पठित-अवबोधनम् 25

1. **अंशत्रयम्** 15

एकः गद्यांशः, एकः पद्यांशः, एकः नाट्यांशः च। (5+5+5)

पाठ्यांश-आधारितं प्रश्नवैविध्यम् 1

एकपदेन उत्तरम् 2

पूर्णवाक्येन उत्तरम् 2

विशेषण-विशेष्य/पर्याय/विलोमादिचयनम्, वाक्ये कर्तृक्रिया-पदचनम्, सर्वनामस्थाने संज्ञानप्रयोगः

2. भावार्थलेखनम्/ प्रदत्ते भावार्थत्रये शुद्धभावार्थचयनम् 3
3. प्रदत्तेषु अन्वयेषु रिक्तस्थानपूर्तिः/ प्रश्नपत्रात् भिन्नं पाठ्यपुस्तकस्य श्लोकमेकं लिखित्वा भावाथलेखनम् 3
4. प्रदत्तवाक्यांशनां सार्थकं संयोजनम्। 2
5. प्रदत्तपङ्क्तिषु प्रसङ्गानुसारं पदानाम् अर्थलेखनम्। 2

भागः 'घ' (ii) संस्कृत-साहित्येतिहासस्य सामान्यः परिचयः

अङ्काः(10) कालांशः(25)

संस्कृतेन वस्तुनिष्ठ/ अतिलघूत्तरप्रश्नमाध्यमेन अधोलिखितसंस्कृतसाहित्यविषकः परिचयः

1. संस्कृतशब्दस्य व्युत्पत्तिः। 1
2. वेदः, उपनिषद्, पुराणाम्, स्मृतिः, रामायणम्, महाभारतम्। 3
3. गद्यकाव्यम् पद्यकाव्यम्, चम्पूकाव्यम् 3
4. नाटकम्, प्रमुखनाट्यतत्त्वानां प्रदतपरिभासु शुद्धपरिभाषाचयनम् 3

भागः 'ङ' आन्तरिक-मूल्याङ्कनम्

अङ्काः(20)

1. परियोजनाकार्यम् 10 अङ्काः
2. गतिविधयः 10 अङ्काः

उद्देश्यानि–

- छात्राणां विविध-जीवन-कौशलानां विकासः।
- छात्राः समाजस्य विविध-समस्याः ज्ञात्वा समाधने समर्थाः स्युः।
- गवेषणात्मक-चिन्तनशक्तेः विकासः।
- संस्कृत-जगतः समस्यानां सम्मुखीकरणम्।
- छात्राणां सृजनात्मकक्षमतायाः विकासः।
- श्रवण-भाषाण-पठन-लेखनकौशलानां विकासः।
- आत्मविश्वासस्य संवर्धनम्।

क्र. सं.	गतिविधयः	उदाहराणानि	अङ्काः	निर्देशाः	मूल्याङ्कनबिन्दवः
1	परियोजना –कार्यम्	• मिथ्यावार्तायाः (Fake News) दुष्प्रभावाः। • अध्ययने अन्तर्जालस्य उपयोगिता • संस्कृतं व्यवहारभाषां कर्तु समस्याः समाधानञ्च। • 'सोशलमीडिया' इत्यस्य सदुपयोगः। • भारतीयसंस्कृतौ वैज्ञानिकचिन्तनम्। • स्वक्षेत्र जायमानस्य प्रदुषणस्य कारणानि समाधनञ्च। • स्वक्षेत्रे स्वच्छभारताभियानस्य स्थितिः • संस्कृताध्ययनं प्रति छात्राणाम् उदासीनतायाः कारणानि • तन्निराकरणोपायाश्च। • आयुष्मद्भरतम् 'इति सर्वकारीय–योजनाविषये लाभार्थिना जागरूकतायाः विशलेषणा।	10	• सत्रारम्भे एव विषयः सूचनीयः। • आवर्षं छात्राः एतेषु विषयेषु अध्ययनं कुर्युः। • शिक्षकेण समये समये परियोजनाकार्यर्सस्य प्रगतिः ज्ञातव्या छात्राणां च मार्गदर्शनं करणीयम् • कदाचित् छात्राः संस्कृतेन लेखितुं कष्टमनुभवन्ति तदा शिक्षकेण साहाय्यं करणीयम् • परियोजनाकार्याणां विवरणं सप्रमाणं सुरक्षितं स्थापनीयम्। • परियोजनाकार्याणि संस्कृतेन एव भवेयु	• मौलिकता • विषय–सम्बद्धता • शुद्धता • समयबद्धता • प्रस्तुतीकरणम्

2.	श्रवण–भाषण–कौशलम्	• कथा • संवादः/वार्तालापः • भाषणम् • नाटकम् • वार्ताः • आशुभाषणम् • वार्तावलिः (समूहचर्चा) • संस्कृतगीतानि • श्लोकोच्चारणम्	05	• छात्राः कामापि कथां श्रावयितु शुक्रवन्ति। • शिक्षकः कमपि विषयं सूचयित्वा परस्परं संवादं कारयितुं नाय शक्नोति। • दूरदर्शने वार्तावली इत्याख्यः संस्कृत–कार्यक्रमः प्रसारितः भवति तं द्रष्टुं छात्राः प्रेरणीयाः • श्रवण–कौशल–मूल्याङ्कनाय शिक्षकः स्वयम् अपि कथां श्रावयित्वा ततः सम्बद्ध–प्रश्नान् प्रष्टुं शक्नोति। • वर्षे न्यूनातिन्यूनं त्रयः गतिविधयः कारणीयाः तेषु सर्वोत्तमाः अङ्काः ग्राह्याः। • विवरणं सप्रमाणं सुरक्षितं स्थापनीयम्	• उच्चारणम् • शुद्धता • समयबद्धता • प्रस्तुती–करणम् • आरोहवरोह–गतियति–प्रयोग
3.	लेखन–कौशलम्	• विविधविषयान् आधृत्य मौलिकलेखनम् • यथा–माता–पिता, गुरुः पर्यावरणम्, विद्या, योग, समस्य सदुपयोगः शिक्षा, अनुशासनम् इत्यादयः। • शैक्षिकभ्रमणस्य संस्कृतेन प्रतिवदेनलेखनम्। • दैनिन्दिनीयलेखनम्। • सङ्केताधारितं कथालेखनम्। • श्रुतलेखः	05	• छात्राः यथाशकांय कक्ष. ायामेव लेखनकार्यं कुर्युः। • अत्र पञ्जिका–निर्माणम् अपि कारयितुं शक्यते। • विवरणं सप्रमाणं सुरक्षितं स्थापनीयम्।	• विषय–सम्बद्धता • शुद्धता (विशेषतः पञ्चम–वर्णस्य प्रयोगः) • समयबद्धता • सुलेखः • प्रस्ती–करणम्

अधातव्यम्–

1. उपर्युक्त–परियोनाकार्याणि गतिविधियश्च उदाहरणरूपेण प्रदत्ता: सन्ति। एतदतिरिच्य एतादृशा:अन्यविषया: अपि भवितुमर्हन्ति।

2. केन्द्रिय–माध्यमिक–शिक्षा–बोर्ड (CBSE) इत्यस्य प्रपत्रसंख्या (Circular No.) -Acad-11/2019 इत्यनुसारम् 2019–2020 इति सत्रस्य आदर्शप्रश्नपत्रे वार्षिकप्रश्नपत्रे च 20 अङ्कानां वस्तुनिष्टा: प्रश्ना: भविष्यन्ति।

पुस्तकानि

- भास्वती–द्वितीयो भाग: (पाठ्यपुस्तकम्) रा.शै.अनु.प्र.परि. प्रकाशितम्।
- व्याकरणसौरभम् (संशोधितसंस्करणम् रा.शै.अनु.प्र.परि. द्वारा प्रकाशितम्।
- रचनानुवादकौमुदी (सहायकपुस्तकम्) कपिलदेवद्विवेदीलिखितम् विश्वविद्यालयप्रकाशनम् वाराणासी।
- संस्कृतसाहित्यपरिचय: (संशोधितसंस्करणम्) रा.शै.अनु.प्र.परि. द्वारा प्रकाशितम्।
- वेदपारिजात (अतिरिक्ताध्ययनार्थम्) रा.शै.अनु.प्र.परि. द्वारा प्रकाशितम्।

नोट्स

नोट्स

नोट्स